

सीढ़ी एडवांस कोर्स

1.	चित्र का परिचय
2.	संगमयुगी राधा-कृष्ण और सतयुगी राधा-कृष्ण
3.	संगमयुग के दो भाग
4.	विनाश काले विपरीत बुद्धि विनश्यते
5.	विनाशकाले परमपिता शिव के साथ प्रीत बुद्धि विजयते
6.	चार कुमार-तीन कुमारियाँ
7.	अष्टरत्न, आठ नारायण, अष्टदेव की आत्माएँ अलग हैं
8.	रुद्रमाला-विजयमाला
9.	प्लैनिंग पार्टी, प्रैक्टिकल पार्टी
10.	सूर्यवंश-चन्द्रवंश
11.	सूर्यवंशी कृष्ण चन्द्रवंशी राधा के पास जा न सके
12.	क्या कृष्ण द्वापर में आया?
13.	कृष्ण का 8 वाँ नं. जन्म
14.	एडवांस पार्टी का प्रारंभ
15.	सद्गुरु निन्दक ठौर न पावे
16.	लेता का अंत
17.	पुरुषोत्तम संगमयुग में ही रावण-राज्य की शूटिंग
18.	रावण-राज्य के प्रमाण
	(1) लेता अंत का अर्ध विनाश :-
	(2) सोमनाथ स्थापना :-
	(3) जड़ चित्रों की प्रदर्शनी का भक्तिमार्गीय पॉम्प एण्ड शो:-
	(4) शास्त्र निर्माण:-
	(5) गीता का भगवानः-
	(6) बाप की बायोग्राफी में बच्चे का नाम:-
	(7) शास्त्रों की शूटिंग का आडंबर:-
	(8) अव्यभिचारी पूजा की शुरूआत:-
	(9) युगल देवताओं की उपासना :-
	(10) सिगल देवताओं की व्यभिचारी पूजा:-
	(11) कम कला वाले देवताओं की पूजा-

	(12) जानवरों की पूजा-
	(13) मनुष्य द्वारा मनुष्य की पूजा-
	(14) पांच तत्वों की पूजा
	(15) द्रौपदी की पुकार:-
	(16) डूबी जा-डूबी जा-
	(17) धर्मसत्ता और राज्यसत्ता अलग-2 हाथों में:-
19.	बेगरी भारत
20.	10 वर्ष की घोषणा

चित्र का परिचय

जो 4 चित्र तैयार किए गए हैं, उनमें यह सीढ़ी का चित्र सबसे बाद का है। यह सीढ़ी का चित्र बाबा के समय पर सन् 1966 में बुद्धियोग से तैयार किया गया है, साक्षात्कार के आधार पर नहीं। बुद्धियोग से माना मनन-चितन-मंथन के आधार पर, जिसके लिए मु. में कहा है-• "बाबा की बुद्धि में तो यह सीढ़ी का चित्र बहुत रहता है। बच्चे जो विचार-सागर-मंथन कर ऐसे-2 चित्र बनाते हैं, तो बाबा भी उनको शुक्रिया करते हैं या तो ऐसे कहेंगे कि बाबा ने उस बच्चे को टच किया है।"(मु.29.2.76 पृ.2 अंत 3 आदि)। बाबा ने मुरली में यह भी कहा है-• "सीढ़ी का चित्र तुम्हारे लिए बहुत अच्छा है समझाने का, जिन्हे की भी कहानी बताते हैं। यह सभी दृष्टांत आदि इस समय के ही हैं। तुम्हारे ऊपर ही बने हुए हैं।"(मु.18.11.70 पृ.2 अंत) • फॉरेन्स इतना सीढ़ी से नहीं समझ सकते हैं। जितना चक्र और झाड़ से। (मु.14.3.68 पृ.1 मध्य)

इस चित्र में हेडिंग दी हुई है-'भारत के उत्थान और पतन के 84 जन्मों की कहानी' भारत शब्द का क्लैरिफिकेशन ल.ना. के चित्र में नीचे दिए गए ईश्वरीय संदेश में मिल चुका है। भारत कहा ही जाता है राम और सीता के लिए, जो भारत देश का प्रतिनिधित्व करने वाली आत्माएँ हैं। बेसिक ब्राह्मणों की दुनियाँ में अभी तक जो गलतफहमी है कि भारत के उत्थान और पतन की कहानी कोई ब्रह्मा बाबा के लिए सुनाई गई है, ऐसी बात नहीं है; क्योंकि ब्रह्मा कृष्ण की सोल है और कृष्ण की सोल की तुलना बाबा क्राइस्ट से करते हैं। • "क्रिश्वियन और कृष्ण की रास मिलती है।" (मु. 1.5.73 पृ.3 अंत) जैसे- क्रिश्वियन्स न ज्यादा सतोप्रधान बनते, न ज्यादा तमोप्रधान बनते हैं। ठीक इसी तरीके से कृष्ण की सोल भी न ज्यादा सतोप्रधान बनती है और न ज्यादा तमोप्रधान बनती है। इसलिए बाबा ने मु. में कहा है-• "क्राइस्ट की कृष्ण के साथ भेंट करते हैं। बुद्ध की नहीं।" (मु.6.8.73 पृ.1 मध्य) राधा कृष्ण वाली आत्माएँ साकार शरीर से ऑलराउण्ड चक्र लगाने वाली नहीं हैं। इसीलिए मु. में बोला है-• "84 जन्म सिर्फ वही लेते हैं जिनका आदि से अंत तक पार्ट है।" (मु.11.3.73 पृ.1 मध्यादि) ये तो अभी वर्तमान में देखा जा सकता है, सन् 1969 में शरीर छोड़ने के बाद कृष्ण की सोल ब्रह्मा ने अपना साकार शरीर धारण नहीं किया है। इससे ये साबित हो रहा है कि ब्रह्मा की सोल साकार शरीर से ऑलराउण्ड चक्र लगाने वाली नहीं है (अर्थात् आदि से अंत तक पार्ट बजाने वाली नहीं है।)

इस सीढ़ी के चिल में जो दिखाया गया है- भारत का उत्थान, उत्थान के पीरियड में ऊपर श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ पुरुषोत्तम संगमयुग दिखाया गया है, 21 वाँ जन्म। 12 जन्म लेता के + 8 जन्म सतयुग के = 20 और सीढ़ी में ऊपर वाला 21 वाँ जन्म संगम का।

मु. में कहा है-•"हीरे जैसा जन्म सतयुग में नहीं कहेंगे। हीरे जैसा इस समय है; क्योंकि इस समय तुम ईश्वरीय संतान हो।" (मु.26.10.72 पृ.1 अंत)

• "आप सबका वायदा है कि हम बाप द्वारा 21 जन्मों के लिए जीवनमुक्त अवस्था का पद, प्राप्त कर रहे हैं, करेंगे ही। 21 जन्म में एक जन्म संगम का है। आपका वायदा 21 जन्मों का है, 20 जन्मों का नहीं है।"(अ.वा.18.1.08 पृ.2 अंत)

• "मनुष्य 21 जन्म कहते, गायन भी करते। अभी यह ईश्वरीय जन्म एक अलग अकेला है। 8 सतयुग, 12 लेता, 21 द्वापर, 42 कलियुग। यह एडॉप्टेड तुम्हारा ईश्वरीय जन्म सबसे ऊँच मिला है। तुम ब्राह्मणों का ही यह सौभाग्यशाली जन्म है।" (मु.11.12.78 पृ.3 अंत)

तो यह है ऊँच-ते-ऊँच जन्म, जहाँ हम नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ऊँच-ते-ऊँच प्रारब्ध भोगते हैं।

संगमयुगी राधा-कृष्ण और सतयुगी राधा-कृष्ण

वहाँ ऊपर बाएँ कॉर्नर में जो राधा-कृष्ण दिखाए गए हैं, वो कोई शरीरधारी सतयुगी राधा-कृष्ण नहीं हैं, सतयुग में बच्चे के रूप में शैशव अवस्था में राधा-कृष्ण अलग दिखाए गए हैं। सतयुग में जो राधा-कृष्ण दिखाए गए हैं, वो कृष्ण और राधा वाली आत्माएँ हैं अर्थात् संगमयुगी ब्रह्मा और सरस्वती वाली आत्माएँ हैं। उनका पार्ट साकार सृष्टि में वहाँ 16 कला सतयुग से शुरू होता है; 21 जन्मों में से पहले संगमयुगी प्रत्यक्षता वाले जन्म से नहीं; लेकिन अगले दैहिक जन्म से शुरू होता है।

इसलिए बाबा ने बोला हुआ है कि फुल बेगर टू फुल प्रिन्स तुम बच्चे बनते हो। ब्रह्मा आखिरी जीवन में दादा लेखराज के नाम-रूप से कोई फुल बेगर नहीं बने। उनको फुल बेगर नहीं कहेंगे; क्योंकि फुल बेगर की बाबा ने परिभाषा बताई है कि बेगर के पास तो फिर कुछ भी न हो। धन, पद, मान-मर्तबा, संबंधी, कोई भी ताकत न हो उसको कहेंगे फुल बेगर। • तुम जानते हो हम बेगर टू प्रिन्स बनेंगे। इन पास कुछ भी नहीं है। बेगर अर्थात् जिनके पास कुछ भी न हो। (मु.30.5.68 पृ.1 मध्यांत) तो फुल बेगर संगमयुगी जन्म में और फिर उसी जन्म में फुल प्रिस। सीढ़ी के चिल में नीचे की सीढ़ियों में ब्रह्मा को फिर भी खड़े हुए दिखाया गया है, अर्थात् कृष्ण की सोल तो फिर भी खड़ी हुई है; लेकिन जो बिल्कुल पतित, बेगर अर्थात् भिखर्मंगे की अवस्था में नीचे दिखाया गया है वो है- 'भारत', अर्थात् राम बाप वाली आत्मा विदेशी लोग उसको भीख दे रहे हैं। जिनकी भीख पर वो पल रहा है। सीढ़ी में आदि से लेकर अन्त तक 84 जन्मों की जो सीढ़ियाँ हैं, उनमें विशेष रूप से भा+रत अर्थात् ज्ञान में रत रहने वाले की कहानी दिखाई गई है जिसके सर के नीचे गीता-ज्ञान की पुस्तक ही उसकी प्राप्ती है।

संगमयुग के दो भाग

यहाँ सीढ़ी के चित्र में संगमयुग को दो भागों में दिखाया गया है- एक नीचे का भाग दायीं ओर के कॉर्नर में और एक ऊपर का भाग बायीं ओर के कॉर्नर में। पुराने सीढ़ी के चित्र में नीचे का जो भाग कलियुग के अंत में दिखाया गया उसमें यह साफ लिखा हुआ है '40 वर्ष का संगमयुग'। जबकि संगमयुग की अधिकतम आयु बाबा ने मुरली में बताई है- '100 साल'(मु.3.11.76 पृ.3 मध्य)। इससे साबित हो गया कि सन् 1936 से लेकर सन् 1976 तक साधारण संगमयुग का समय यहाँ नीचे दायें कॉर्नर में दिखाया गया है और सन् 1976 के बाद का पुरुषोत्तम संगमयुग है, वो चित्र में ऊपर दिखाया गया है। सीढ़ी में नीचे 40 वर्ष लिखा हुआ है, तो सन् 1936 से लेकर सन् 1976 तक इन 40 वर्षों के अन्दर पञ्चमुखी ब्रह्मा के द्वारा सतयुगी आत्माओं की शूटिंग का जो स्थापना का कार्य सम्पन्न होना था वो सम्पन्न हो गया और उसकी चार स्टेज़िज़ भी हुईं- सतोप्रधान, सतोसामान्य, रजो और तमो। रजोप्रधान और तमोप्रधान की जो शूटिंग सम्पन्न हुई है, वो यहाँ सीढ़ी के मध्य से रावण-राज्य के रूप में दिखाई गई है, जहाँ 40 वर्ष का सामान्य संगमयुग पूरा हुआ। 60 वर्ष का पुरुषोत्तम संगमयुग सन् 1976 से लेकर सन् 2036 तक सीढ़ी में ऊपर दिखाया गया है। सन् 1976 तक जब संगठित चतुर्मुखी ब्रह्मा द्वारा सतयुगी देवता वर्ण की आत्माओं की अन्तिम तमोप्रधान अवस्था की शूटिंग का कार्य सम्पन्न हो जाता है, तो इसके बाद विनाशकाले विपरीत बुद्धि तामसी ब्राह्मण विनश्यते हो जाते हैं और जो विनाशकाले लास्ट सो फास्ट आए हुए प्रीत बुद्धि हैं, वो सीढ़ी में ऊपर की ओर विजयते के रूप में दिखाए गये हैं।

विनाश काले विपरीत बुद्धि विनश्यते

बाबा ने मु. में कहा है- "यह सीढ़ी तो बहुत अच्छी बननी है। इनमें बड़ा कलीयर कर लिखना है। ऊपर में लिखना चाहिए- विनाश काले प्रीत बुद्धि विजयन्ति और नीचे जहाँ (40 वर्षीय संगम के बेहद के) साधु-समाज आदि- 2 हैं वहाँ लिखना चाहिए- विनाश काले विपरीत बुद्धि विनश्यन्ति। यह अक्षर ज़रूर डालना चाहिए। (मु.6.10.71 पृ.2 अंत) •विनाश काले विपरीत बुद्धि क्यों कहते। क्योंकि प्रीति बिल्कुल नहीं है। और ही बेहद के (राम) बाप के दुश्मन बन पड़े हैं। (मु.15.10.78 पृ.1 अंत)

इसीलिए यहाँ नए चित्र में नीचे लिखा गया है- 'विनाशकाले परमपिता परमात्मा शिव से विपरीत बुद्धि विनश्यन्ति' और ऊपर लिखा है- 'विनाश काले परमपिता शिव से प्रीत बुद्धि विजयते' किसके साथ विपरीत बुद्धि और किसके साथ प्रीत बुद्धि? प्रीत और विपरीत किसके साथ कहा जाए? सुप्रीम सोल बिटु बने साकार बाप के साथ? सदा निराकार शिव ज्योति बिटु के साथ प्रीति और विपरीत का कोई मतलब ही नहीं। उसका तो 84 जन्मों का हिसाब-किताब किसी के साथ है ही नहीं। प्रीति और विपरीत का हिसाब-किताब साकार मनुष्य आत्माओं का साकार मनुष्य आत्माओं के साथ होता है। तो ज़रूर वो सुप्रीम सोल किसी साकार मनुष्य तन में मुकर्रर रूप से प्रवेश करता है, जो इस साकार मनुष्य सृष्टि का बीजरूप राम बाप है उसके प्रति 63 जन्मों में जो प्रीत बुद्धि रहे, उनकी शूटिंग पीरियड में भी प्रीत बुद्धि दिखाई पड़ेगी और 63 जन्मों में जो जहाँ-2 विपरीत बुद्धि हो करके रहे, उनकी यहाँ शूटिंग पीरियड में भी विपरीत बुद्धि दिखाई पड़ेगी। ये रिहर्सल भी होती है। ये तो नई बात हो गई कि नीचे जो ब्राह्मण बैठे हुए हैं- ममा-बाबा जैसी श्रेष्ठ आत्माएँ वे 40 वर्ष का संगमयुग पूरा होने

पर विनाशकाले विपरीत बुद्धि तामसी हो गई! वे विनश्यन्ति के लिस्ट में हुए? ये कैसे हो सकता है? क्योंकि जिन्होंने देहधारी को याद किया, देहधारी से प्रीत लगाई वे बेसिक से एडवांस ज्ञान में सन् 1976 से ट्रांसफर ही नहीं हुए। वे डायरैक्ट राम बाप द्वारा पढ़ाई पढ़ने के निमित्त नहीं बने। उनका शरीर भी विनाश को प्राप्त होता जाता है और पद का भी विनाश हो जाता। वास्तव में लक्ष्य तो पाना चाहिए था नर से डायरेक्ट इसी जन्म में नारायण और नारी से लक्ष्मी बनने का; लेकिन पद का विनाश होने के कारण एक सीढ़ी नीचे उतर जाते हैं और नर से प्रिस, नारी से प्रिसेज़ बनकर रह जाते हैं। उनकी पु. संगमयुगी हीरा जैसे जन्म की पदावनति हो जाती है। इन नं. वार देव आत्माओं के पदावनति के कारण को जानने के लिए हम यज्ञ के आदि में दृष्टि ले जाएँ तो हमें पता चलेगा कि यज्ञ के आदि में, यज्ञ स्थापना के साथ-साथ यज्ञकुंड से विनाशज्वाला भी प्रज्वलित हुई थी। अ.वा. में भी इसका संकेत दिया है- •"विनाश ज्वाला प्रज्वलित कब और कैसे हुई? कौन निमित्त (बने)? क्या शंकर निमित्त बना या यज्ञ रचने वाले बाप और ब्राह्मण बच्चे निमित्त बने? जबसे स्थापना के कार्य-अर्थ यज्ञ रचा तब से स्थापना के साथ-2 यज्ञकुंड से विनाश की ज्वाला भी प्रगट हुई। तो विनाश को प्रज्वलित करने वाले कौन हुए? (राम) बाप और आप साथ-2 हैं ना! तो जो प्रज्वलित करने वाले हैं तो उन्होंने सम्पन्न भी करना है, न कि शंकर को।" (अ.वा.3.2.74 पृ.13 अंत) विनाशज्वाला प्रज्वलित करने में ब्रह्मा, रामबाप और ब्राह्मण बच्चे शरीक हुए थे। विनाशज्वाला प्रज्वलित करने का कोई कारण भी रहा होगा। कोई तो निमित्त बना होगा। प्रजापिता और ब्रह्मा का सम्बन्ध तो बन्ना और बन्नी का हो गया। ब्रह्मा को शिवबाबा ने मुरली में कहा है- बन्नी है। बन्नी साकार में होती है। तो बन्ना भी ज़रूर होगा। प्रजापिता ब्रह्मा ये हो गई जोड़ी। अब उस जोड़ी के बीच में जो फर्स्ट राम और सीता कहे जाते हैं, सीताएँ तो सब हैं; लेकिन फर्स्ट सीता कौन? ब्रह्मा। जो फर्स्ट सीता और राम हैं उनके बीच में रावण बन करके टाँग अड़ाने वाला कौन, जिसने उन दोनों को अलग कर दिया? ज़रूर कोई टाँग अड़ाने वाले भी थे। उनकी तरफ़ भी अव्यक्त वाणी में इशारा कर दिया- विनाशज्वाला प्रज्वलित करने वाले कौन थे? ब्रह्मा और रामबाप ये तो आपस में लड़े ही; लेकिन बीच में कौन निमित्त बने? बच्चे। जब तक बच्चे नहीं होते तब तक माँ का मोह पति से होता है। जब माँ बच्चों को जन्म दे देती है तो बुद्धि बच्चों में चली जाती है; इसलिए मोस्टली घर-परिवार में जो झागड़े पैदा होते हैं, उनकी मूल जड़ बच्चे ही बनते हैं। माँ अपने कैसे भी, दुष्ट से दुष्ट बच्चे को अपनी गोद से अलग नहीं करना चाहती। माताएँ मोहमयी होती हैं। सबसे बड़ी अम्मा कौन? ब्रह्मा। अव्यक्त वाणी में कहा है- •"माताओं का सबसे बड़ा पेपर ही मोह का है। अगर माताएँ नष्टमोहा हो गईं तो नम्बर आगे हो जाएँगी।"(अ.वा.5.6.77 पृ.216 अंत) लेकिन यह तो ईश्वरीय यज्ञ है। ईश्वरीय यज्ञ और ईश्वर की परम्पराएँ दुनियाँवी परम्पराओं से अलग होती हैं। ईश्वरीय यज्ञ की परम्पराओं में अगर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार को अंत तक तरजीह दी गई तो स्वर्ग कभी भी स्थापन नहीं हो सकता। कोई ऐसे आसुरी स्वभाव के बच्चे निमित्त बन गए, जिन्होंने माँ-बाप के बीच में फ्रिक्शन डाल दिया और माँ ने बच्चों के मोह में आ करके बाप के डायरैक्शन पर चलने से इन्कार कर दिया। बच्चा वह जो कंट्रोल में हो और घरवाली वह जो कंट्रोल में हो। घरवाली भी तो रचयिता की रचना है। रचना रचयिता के कंट्रोल में न हो तो उसके लिए मुरली में बोला है कि वह रचना रचना नहीं, जो रचयिता के कंट्रोल में न हो।

वहाँ से फ्रिक्शन पड़ गया। ब्रह्मा की सोल परिवार को तो सँभालती रही। ब्रह्मा बाबा के कराची में पहुँचने पर जो भी बच्चे वहाँ पहुँच गए, ब्रह्मा ने उनको सम्भाला। यही कारण है कि भारतीय परम्परा में माताएँ अपने घर-परिवार को छोड़ती नहीं हैं। उन्होंने सारा परिवार सम्भाला; लेकिन जो बिछू, टिण्डन जैसे बच्चे इकट्ठे हो गए उनको कंट्रोल करना कोई मासी का घर नहीं था। माँ के बस की बात नहीं थी। आखरीन जो अन्जाम होना था वही हुआ।

जब तक पवित्रता की शक्ति मम्मा यज्ञ में रही तब तक बाबा आराम से रहे; क्योंकि एक प्रकार से उन्होंने प्रवृत्ति का काम किया। तो यज्ञ चलता रहा और जैसे ही मम्मा रूपी कंट्रोलर ने अपना शरीर छोड़ा, बाबा अच्छी तरह से उन बिछू-टिण्डनों की गिरफ्त में आ गए और बाबा को ये एहसास होने लगा कि यज्ञ के आदि में जो बच्चे थे, वो ही श्रेष्ठ बच्चे थे और उनकी यादगार में अहमदाबाद का सोमनाथ मंदिर स्थापन कर दिया; लेकिन 'फिर पछताय होत का जब चिडियाँ चुग गई खेत।' उन बच्चों ने ब्रह्मा बाबा के प्राण ले लिए। दिल्ली में स्वर्ग स्थापन होगा, स्वर्गीय संगठन बनेगा, इन सारी आशाओं पर पानी फिर गया और ब्रह्मा का हार्टफेल हो गया। ऐसा क्यों हुआ? 'विनाशकाले विपरीत बुद्धि विनश्यन्ति।' सन् 1976 से विनाश क्यों हुआ? ज्ञान तो यह नहीं कहता कि मरने के बाद हमें स्वर्ग मिले। ज्ञान तो कहता है तुम बच्चों को जीतेजी मरना है; लेकिन मम्मा-बाबा जैसी श्रेष्ठ आत्माएँ जीते जी न मर करके शरीर से क्यों चली गई? उसका कारण था यज्ञ के आदि में ही भूल हो गई थी। और उस भूल का खमाज़ा तो उठाना ही था। क्या भूल हो गई? जिस रचयिता रामबाप (भागीदार) को साकार रूप में सदगुरु के रूप में मान करके चलना था उस सदगुरु के डायरैक्शन पर चलते रहना चाहिए था; लेकिन नहीं चले। तो ब्रह्मा भी निदा के पात्र बन गए। संसार में ब्रह्मा की पूजा नहीं होती, मंदिर नहीं बनते, मूर्तियाँ नहीं बनती; क्योंकि रचयिता के कंट्रोल से बाहर हो गए। यहाँ नए चित्र में जो लिखा हुआ है- 'विनाश काले विपरीत बुद्धि विनश्यन्ति' माना अपने उस जीवनकाल में जो कलातीत पद उनको पाना था वो पद नहीं पाय सके। पद का विनाश हो गया। मम्मा ने सन् 1965 में और बाबा ने सन् 1969 में शरीर छोड़ दिया। तो सन् 1965 या सन् 1969 से ले करके जब तक राधा-कृष्ण का जन्म नहीं होता है, वो पीरियड तो फिर उन्होंने नहीं देखा ना! बाबा तो बोलते हैं 84 जन्मों के आलराउंड पार्ट में से एक दिन भी कम नहीं तो ब्रह्मा बाबा के तो उस हिसाब से कुछ वर्ष कम हो जाते हैं। माना वो इसी शरीर से इन्हीं आँखों से स्वर्ग नहीं देखते। दूसरा जन्म ले करके स्वर्ग में जाते हैं। इसलिए 'विनश्यन्ति' के लिस्ट में ये संगमयुग का 40 वर्ष का पीरियड दिखाया कि विनाश को पा गए।

विनाशकाले परमपिता शिव के साथ प्रीत बुद्धि 'विजयन्ति'

40 वर्ष पूरे हुए और 40 वर्ष पूरे होने के बाद रिजल्ट तो निकलना ही था। वो पुराना ग्रुप 'विनश्यन्ति' की स्टेज में पहुँचा। और जो ग्रुप यज्ञ के आदि में ही चला गया था उस ग्रुप का 'विजयन्ति' की लिस्ट में आना शुरू हुआ। राम और राम के पीछे जितने भी फॉलोवर्स थे वो ग्रुप ऊपर सीढ़ी के बाएँ कॉर्नर में दिखाया गया है।

मु. में कहा है - • "प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा नई पुरुषोत्तम सृष्टि रची जाती है। पुरुषोत्तम तुमको वहाँ देखने में आवेंगे।" (मु.1.10.75 पृ.1 मध्य) यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। शरीर रूपी पुरी में सोने वाली जो भी

आत्माएँ हैं, उनमें उत्तम-ते-उत्तम हर धर्म में माला के रूप में नम्बरवार सिमरी जाने वाली मणकों की मालाएँ कौन-2 सी हैं, कौन-2 आत्माएँ माला रूपी संगठन में नम्बरवार हैं वो अभी प्रत्यक्ष होती है, जबकि उनके लिए कलियुग का अंत और सतयुग का आदि होने वाला है। मु. में बोला है-• "पुरुषोत्तम वर्ष, पुरुषोत्तम मास, पुरुषोत्तम दिन भी इस पुरुषोत्तम संगम पर ही होता है। पुरुषोत्तम बनने की पुरुषोत्तम घड़ी भी इस पुरुषोत्तम युग में है। यह बहुत छोटा लीप युग है।" (मु.4.5.74 पृ.2 मध्य) इसी पु.संगमयुग का ही गायन, पूजन, यादगार, त्यौहार, शास्त्र आदि भक्तिमार्ग में चलता है। इसलिए मु.में कहा है- • "संगम पर जो प्रैक्टिकल होता है उसकी यादगार भक्तिमार्ग में त्योहारों के रूप में मनाते हैं।" (मु. 26.8.69 पृ.2 अंत)

सन् 1976 के बाद विजय को प्राप्त करने वाली आत्माएँ सीढ़ी में ऊपर दिखाई गई हैं। जिन्होंने अपन को आत्मा समझा, बेसिक नॉलेज के बतौर आत्माओं के बाप सुप्रीम सोल को सूक्ष्म ज्योति बिदु रूप में याद किया तो याद करने के कारण उनकी बुद्धि खुल गई, सूक्ष्म बुद्धि हो गई। आत्मा की बेसिकली सारी कट उत्तर गई और वे रामबाप द्वारा शिवबाप की डायरैक्ट पढ़ाई पढ़ने लगे। इसलिए उनको ऊपर दिखाया गया है। यह आत्माएँ निमित्त बनी हुई हैं। 40 वर्ष का संगमयुग पूरा होने के बाद मन-बुद्धि की स्टेज से सतयुगी दुनिया में, सतयुग की सुख की दुनिया में, तीरी पर बहिश्त पाने की दुनिया में प्रवेश कर जाती हैं। पहले जो घोषणा करते थे- 'श्रीकृष्ण आ रहे हैं।' श्रीकृष्ण कोई छोटे बच्चे के रूप में नहीं आ रहे हैं। तीरी पर बहिश्त का मतलब बुद्धि रूपी हथेली पर स्वर्ग का नक्शा लिए हुए आ रहे हैं। जैसे हथेली पर कोई चीज़ रख ली जाए और देखी जाए। उसी तरीके से बुद्धि रूपी हथेली पर स्वर्ग की सारी प्लानिंग रखी हुई है। ऐसे स्वर्ग को देखने वाला पु.संगमयुगी श्रीकृष्ण आ रहा है। यह वही श्रीकृष्ण है जो सतयुगी सीढ़ियों से बाहर ऊपर के पु.संगमयुग में दिखाया गया है। यह संगमयुग का वो भाग है, जहाँ से मन-बुद्धि के स्तर पर स्वर्ग की, नई हीरे जैसी दुनियाँ की उन आत्माओं के लिए शुरूआत होती है, जो बुद्धि से सम्पन्न स्टेज पर पहुँचती जाती हैं। जिनके लिए 40 वर्ष पूरे होते हैं और जिनके लिए 10 वर्ष की घोषणा सन् 1966 में की गई थी। उसके बाद तामसी ब्राह्मणों की पुरानी दुनियाँ का विनाश और नई दुनियाँ की स्थापना की मानसी शूटिंग होगी। तो उन मरजीवा बनने वाली श्रेष्ठ आत्माओं के लिए बुद्धियोग से पुरानी दुनियाँ खलास। आप मुए मर गई दुनियाँ। पुराने ब्राह्मणों की दुनियाँ से कोई वास्ता नहीं रहा; क्योंकि समझ लिया यह तो नष्ट होने वाली है।

चार कुमार-तीन कुमारियाँ

इस ग्रुप को रामायण के हिसाब से राम या राम सहित चार भाई दिखाये गये हैं अथवा ब्रह्मा के 4 पुत्र जो सबसे पहले मानसी सृष्टि से उत्पन्न हुए थे। सबसे बड़े पुत्र-उन्हें सृष्टि की आरम्भ की परिक्रिया में शास्त्रों में दिखाया गया है अथवा कृष्ण के सखाओं के रूप में भागवत में इन्हें दिखाया गया है। (मनसुखा , सुदामा , बलराम आदि)

बाबा ने मु. में कहा है-• "वहाँ (सत या क्लेता में) राम को 4 भाई तो होते नहीं। वहाँ तो बच्चा भी एक होता है। 4 बच्चे तो होते नहीं।" (मु.29.9.77 पृ.1 मध्य)

तो ये जो चार कुमार के रूप में यहाँ दिखाये गये हैं - ये वास्तव में जो चार मुख्य धर्म बाबा बताते हैं- देवता धर्म, इस्लाम धर्म, बौद्धी धर्म और क्रिश्चियन धर्म। इन 4 मुख्य धर्मों के क्रमशः बीज बनने वाली आत्माएँ राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न। ये चार आत्माएँ चार धर्मों के बीज हैं जो यहाँ दिखाई गई हैं।

अष्टरत्न, आठ नारायण, अष्टदेव की आत्माएँ अलग हैं

अब तक यज्ञ में ये समझा जाता था कि जो आठ नारायण हैं वो अष्ट रत्न हैं; लेकिन आठ नारायण के साथ तो आठ नारायणियाँ भी लगी हुई हैं, तो $8 = 16$ हो जाते हैं। वो (नारायण) अष्ट-नौ रत्नों की गिनती में नहीं हैं; क्योंकि वो नारायण उत्तरोत्तर कम कलाओं वाले तथा कम जन्म लेने वाले नारायण हैं। 9 रत्न तो अपने धर्मों की बीजरूप मुखिया आत्माएँ हैं, 108 की माला में 12-12 के ग्रुप की मुखिया हैं और एक दूसरे से कम वैल्यु वाले तो हैं; किन्तु 84 जन्म लेने वाली आत्माएँ हैं। जो पास विद् आँनर 8 आत्माएँ हैं, वो अपने धर्मों के पूर्वज हैं, शिव की अष्टमूर्तियाँ, अष्ट दिग्पाल, अष्टदेव हैं। नारायण वाली आत्माएँ तो जड़ों पर दिखाई जाने वाली आधारमूर्त आत्माएँ हैं जो नं. वार कम जन्म लेती हैं।

इन जड़ों के जो बीज हैं वो सीढ़ी में ऊपर दिखाए गए हैं। ये बीज सबसे सशक्त, पॉवरफुल बीज हैं और इनको क्रम से एक दूसरे के पीछे नम्बरवार खड़े हुए दिखाया है; क्योंकि जो धर्म सबसे पहले होता है वो तो पावरफुल होता है और जो बाद वाला होता है वो कमजोर डाली होती है तो उसी क्रम से इनको खड़ा हुआ भी दिखाया गया है- देवता, इस्लामी, बौद्धी और क्रिश्चियन।

रुद्रमाला-विजयमाला

ऊपर सीढ़ी में एक तरफ से कुमार निकल रहे हैं, काले दरवाजे से और गोरे दरवाजे से कुमारियाँ निकल रही हैं। काले दरवाजे से जो दिखाये गये, यह हैं रुद्रमाला के मणके, घर-गृहस्थ की कीचड़ में रहकर पवित्रता का पुरुषार्थ करने वाले। जो रानियाँ दिखाई गई, वो अंदर का परकोटा दिखाया गया-माना गोरा दरवाजा।

आप देखेंगे इस्लामी बीज को काले कपड़े पहने हुए दूसरे नम्बर पर साथ में खड़ा हुआ दिखाया गया है। उसके पीछे लक्ष्मण और शत्रुघ्न को भी दिखाया गया है। इसके अलावा इस ग्रुप को काले दरवाजे से निकलता हुआ दिखाया गया है। जबकि कुमारियों का जो ग्रुप है पीछे की ओर दूसरी तरफ, उसे गोरा दरवाजा दिया गया। वो तो बात बाबा ने मुरली में बताय ही दी कि- पुरुष जितने भी होते हैं वो सब दुर्योधन, दुःशासन की वृत्ति वाले होते हैं। कन्याएँ, माताएँ जो होती हैं, वो प्रायः द्रोपदियाँ, सीतायें और पार्वतियाँ होती हैं।

एक तरफ यहाँ सीढ़ी के चित्र में पहले-2 प्रत्यक्ष होने वाला ग्रुप दिखाया गया है- रुद्रमाला का ग्रुप। उसमें भी मुख्य 4 धर्मों की मुखिया आत्माएँ। और जो बाद में प्रत्यक्ष होने वाली माला है वो दूसरा ग्रुप है - विजयमाला का। जो अ.वाणी 21.1.69 पृ.24 आदि में बोला है- •"भारतमाता (शिव) शक्ति अवतार अंत का यही नारा है।" उन दोनों ग्रुप्स के आपस में मिलने से मुरली में बोला है- "रुद्रमाला बाद होती है विष्णु की माला।.....यह रुद्रमाला फिर विष्णु की माला में पिरोनी है यानी विष्णु के राज्य में जाते हैं।" (मु.20.2.72 पृ.3 आदि) अर्थात् रुद्रमाला के मणके नम्बरवार विजयमाला में बाद में पिरोये जायेंगे। उसी समय सफलता हो जाती है; क्योंकि प्रवृत्ति मजबूत हो जाती है। प्रवृत्ति की गाँठ जुड़ती है तो सफलता हो जाती है। भारत में कोई

भी ऐसा अनुष्ठान नहीं मनाया जाता जिसमें पति-पत्नी की गाँठ जोड़े बिना कार्य किया जाए। जब तक गाँठ नहीं जोड़ी जाती तब तक कोई अनुष्ठान सफल नहीं माना जाता।

वो रुद्रमाला है अपविलता के लंगड़ों की माला; क्योंकि इनमें सेंट परसेंट वही मनुष्य आत्माएँ ब्राह्मण बनी हुई दिखाई गई हैं, जो घर-गृहस्थ के कीचड़ से इकट्ठी होती हैं। जैसे कोई किला होता है, तो किले की 2 दीवाले होती हैं अर्थात् 2 परकोटे होते हैं। एक बाहर का परकोटा और एक अंदर का परकोटा। तो सच्चा सरेंडर्ड वर्ग जितना भी है, वो सब अंदर के परकोटे में और जो नॉन सरेंडर्ड वर्ग है वो सब घर-गृहस्थ की कीचड़ में रहने वाला वर्ग।

मुरलियों में बाबा ने इशारा दे दिया था- • "जो बाहर वाले गृहस्थ व्यवहार में रहते हैं यहाँ वालों से बहुत तीखे चले जाते हैं।" (मु.18.11.68 पृ.2 अंत) अर्थात् अंदर वाले ऊँच पद पाने से रह जावेंगे और बाहर वाले ऊँच पद पा जावेंगे। एकलव्य का मिसाल दिया। ये बात तो सही साबित हो गई कि जो घर-गृहस्थी के कीचड़ में रहने वाले हैं, उनको परमात्मा पहले उठा लेता है। जो पतित हैं, नीचे गिरे हुए हैं, जिनमें पावनपने का अहंकार नहीं है, उन्हीं को परमात्मा पहले ऊपर उठाता है। राजा बनने वाली आत्माओं की जो लिस्ट है, द्वापर से ही विदेशियों के संग के रंग लगने से पविलता के लंगड़े हैं, वो ही आत्माएँ सारी रुद्रमाला में इकट्ठी होती हैं।

पहले-2 रुद्रमाला तैयार होती है। उसके बाद विजयमाला तैयार होती है। राजाओं की माला अर्थात् रुद्रमाला के मणके क्या हैं? नं.वार जन्म-जन्मान्तर के राजा बनने वाली आत्माएँ हैं। राजाएँ कभी किसी के अधीन नहीं हो सकते। इनके अंदर अधिकारपने के संस्कार हैं। और रानियाँ जन्म-जन्मान्तर अधीन रहीं। उनमें वह अधीनता के संस्कार, माना अंदर रहने वाले।

बाबा ने मु. में कहा है- • "तुमको रुद्रमाला में पिरोना है।.....यह है रुद्रमाला और ज्ञानी तू आत्माओं की माला।" (मु.8.3.73 पृ.3 मध्य) • "तुम जान गए हो सबसे अच्छा पार्ट उनका है जो पहले शिव की रुद्रमाला में हैं। नाटक में जो बड़े अच्छे-2 एक्टर्स होते हैं, उनकी कितनी महिमा होती है। उनको देखने लिए लोग जाते हैं।" (मु.20.2.71 पृ.1 मध्यादि) • "विजयमाला के मणके बनना बड़ी बात नहीं है; लेकिन बाप के सिमरने के मणके बनना यही खुशनसीबी है।" (अ.वा.20.5.74 पृ.47 आदि)

प्लैनिंग पार्टी, प्रैक्टिकल पार्टी

एडवांस पार्टी का पहला ग्रुप जिसे कहेंगे प्लैनिंग पार्टी। यानी इनकी बुद्धि बड़ी तीखी है। रुद्रमाला के शरीर तो अपविलत हैं। इसलिए शरीर से पविलत न होने के कारण कोई विशेष सफलता हासिल नहीं कर सकते; क्योंकि योरिटी के बगैर प्रैक्टिकल सम्पन्न नहीं हो सकता। प्रैक्टिकल स्वर्ग स्थापन तब तक नहीं हो सकता जब तक प्रैक्टिकल पार्टी नहीं निकलती है। जो प्रवेश करने वाली आत्माएँ हैं, मम्मा, बाबा, मनमोहिनी दीदी जैसी आत्माएँ वो हुई इन्स्प्रेटिंग पार्टी। वो दोनों में ही, इधर P.B.K वाली प्लैनिंग पार्टी में भी प्रवेश करती हैं तो उधर प्रैक्टिकल पार्टी में भी प्रवेश करती हैं। उनको इन्स्प्रेट करती हैं। उनका उमंग-उत्साह बढ़ाती है। तीसरी पार्टी वो है प्रैक्टिकल पार्टी जो योरिटी की पॉवर से कार्य को प्रैक्टिकली पूरा करती हैं। ऐसी जो आत्माएँ हैं, वो लास्ट में एडवांस ज्ञान लेती और फ़ास्ट जाती हैं।

सूर्यवंश-चन्द्रवंश

सीढ़ी में एक तरफ दिखाया गया है कृष्ण का ग्रुप और दूसरी तरफ दिखाया गया है राधा का ग्रुप। कृष्ण को मुरलियों में बताया हुआ है- सूर्यवंशी और राधा को चंद्रवंशी बताया हुआ है। सूर्यवंशी जो होंगे वो अपने को ज़रूर ऊँच समझते हैं और चंद्रवंशी इतने ऊँच कुल के नहीं हैं। मुरली में बोला है- • ये भी एक मूँझ हो गई है। "(संगमयुगी) राधे-कृष्ण तो प्रिस-प्रिसेज थे। दोनों अपनी-2 राजधानी में रहते थे। ज़रूर स्वयंवर होगा (जैसा कि सीढ़ी के चित्र में ऊपर विजयमाला लिये हुये राधा को कृष्ण के सामने दिखाया भी गया है)। राधे-कृष्ण का (अपना) राज्य तो है नहीं। सूर्यवंशी और चंद्रवंशी घराना है। चंद्रवंशी में तो सूर्यवंशी कृष्ण आ न सके (क्योंकि ऊँच कुल का है)। तो बड़ी मूँझ हो गई है।" (मु.10.5.73 पृ.3 मध्यादि) ब्राह्मणों की दुनियाँ में ये मुँझान क्या हो गई? हम चाहते तो हैं, एक धर्म, एक राज्य, एक वंश की स्थापना और यहाँ हो क्या गया? दो वंश हो गए। ये कैसे हुए दो वंश? दो वंश का क्या सवाल?

वंश की शुरूआत ज़रूर किसी व्यक्ति से होती होगी। व्यक्ति के नाम के आधार पर वंश का नाम पड़ता है। जैसे रघुवंश, कोई राजा रघु हुआ तब तो रघुवंश कहा गया। यहाँ सूर्यवंश नाम पड़ता है तो ज़रूर ज्ञानसूर्य का प्रैक्टिकल में पार्ट बजाने वाला कोई पार्टधारी भी होना चाहिए और चन्द्रवंश नाम पड़ता है तो ज़रूर ज्ञान चन्द्रमा का शीतल पार्ट बजाने वाला कोई पार्टधारी व्यक्ति भी होना चाहिए। शिवबाबा ही लिनेवी शंकर द्वारा ज्ञानसूर्य और ब्रह्मा द्वारा ज्ञानचन्द्रमा के रूप में प्रत्यक्ष होते हैं। सूर्यवंश का ज्ञानसूर्य के रूप में पार्ट बजाने वाला जो पार्टधारी है वो प्रजापिता ब्रह्मा की जब आयु 100 वर्ष सन् 1976 में पूरी हो जाती है तो वही आत्मा जो आदि ब्रह्मा था वो ही ज्ञान सूर्य के रूप में उदित हो जाता है। सन् 1976 से ज्ञानसूर्य प्रगटा और अज्ञान अंधेर विनाश। मुरलियों में जो बातें अज्ञानता के रूप में प्रतिभासित होती हैं, जिनका पूरा क्लैरिफिकेशन पहले नहीं मिलता है, उनका क्लैरिफिकेशन बाद में मिलना शुरू हो जाता है। सन् 1976 से ज्ञान सूर्य के प्रकाश की शुरूआत हो जाती है। उससे पहले यज्ञ में ज्ञान चन्द्रमा का प्रकाश चल रहा था।

ज्ञान चन्द्रमा का प्रकाश तो शीतल होता है। शीतल ज्ञान के प्रकाश में तो कीड़े-मकोड़े भी पलते रहते हैं, जब तक शीतल चन्द्रमा की किरणें होंगी तब तक तो वो कीड़े-मकोड़े चलेंगे; लेकिन सूर्य जैसे-जैसे प्रखरता प्राप्त करता जावेगा वैसे-वैसे कीड़े-मकोड़े खलास होते जावेंगे। ऐसे ही यहाँ भी सन् 1976 से, जब से ज्ञान सूर्य के द्वारा एडवांस पार्टी का ये पार्ट शुरू होता है तो उसी समय से बीजरूप आत्माओं का कार्यकाल भी प्रत्यक्ष रूप में सारे ब्राह्मण परिवार में शुरू होता है और उसमें जो कीड़े-मकोड़े जैसी आत्माएँ हैं, जो कि ज्ञान की रोशनी में रहना पसंद नहीं करतीं वे तिलमिलाती जाती हैं। उनका एडवांस पार्टी में कोई सक्रिय स्थान नहीं रहता। जबकि सूर्यवंशी ज्ञान सूर्य परमात्मा से डायरैक्ट जन्म लेने वाले बच्चे हैं।

जो चंद्रवंश दिखाया गया है वो ज्ञान सूर्य से डायरैक्ट जन्म नहीं लेते बल्कि ज्ञान चन्द्रमा से डायरैक्ट जन्म लेने वाली आत्माएँ हैं। चन्द्रवंशी ज्ञान चन्द्रमा के शासन काल में पलने वाली आत्माएँ हैं। ज्ञान चन्द्रमा ब्रह्मा के द्वारा ब्राह्मणों की जो वंश परम्पराएँ स्थापन हुई हैं, उस परम्परा में पलने वाली आत्माएँ हैं, उनके डायरैक्शन पर चलने वाले हैं। जैसे दीदी-दादियाँ हैं उनकी रहबरी में पलने वाली आत्माएँ हैं। उस वंश परंपरा

में रोटी दाल तक के अधीन हुए पड़े हैं। उनका अपना अलग से कोई चिन्तन नहीं चलता। वो हैं- चन्द्रवंशी। ज्ञान चन्द्रमा ब्रह्मा और उनके द्वारा जितने भी सेंटर्स स्थापन हुए उन सेंटर्स में पालना लेने वाली जो भी आत्माएँ हैं, वे पहले तो ज्ञान चन्द्रवंशी आत्माएँ हो गईं।

सूर्यवंशी आत्माएँ वो हैं जो ना तो ज्ञान चन्द्रमा का आधार लेती हैं और ना ही किसी व्यक्ति या गुरु का आधार लेती हैं। बल्कि वो सिर्फ ज्ञान सूर्य परमात्मा शिव की ज्ञान मुरलियों का आधार लेने वाली आत्माएँ हैं। वो सूर्यवंशी यहाँ सीढ़ी में बाईं ओर दिखाये गए हैं। मतलब ये है कि जो बाप का पार्ट है, वो गुप्त पार्ट हो जाता है और बच्चों को पहले प्रत्यक्ष करता है। ब्रह्मा की रात द्वापर-कलियुग कही गई है। उसमें जो ज्ञान सितारे प्रत्यक्ष होते हैं वे प्रायः अपने को स्वयं प्रत्यक्ष करते हैं।

ज्ञानसूर्य की औलाद सिर्फ ज्ञानसूर्य को मानने वाले हैं। जो असली/औरस सूर्यवंशी हैं वो किसी देहधारी के अधीन नहीं रहते वो तो एक परमात्मा ज्ञानसूर्य शिव की श्रीमत पर चलने वाली आत्माएँ हैं।

सूर्यवंशी कृष्ण चन्द्रवंशी राधा के पास जा न सके

- सूर्यवंश और चंद्रवंश - यह दो रास्ते हो गए। सूर्यवंशी कृष्ण तो ऊँच कुल का ठहरा। वह तो चंद्रवंश में जा न सके। भारत के ब्राह्मणों में अभी तक भी यह परम्परा है कि जो ऊँच कुल वाले होते हैं वो कन्या के यहाँ नहीं जाते; लेकिन कन्या पक्ष वालों को वर पक्ष वालों के यहाँ जाना पड़ता है। इसलिए बाबा मुरली में बोलते हैं • "कलियुग में भी जो रीति-रसम होते हैं, वह सभी यहाँ संगम पर किस न किस रूप में होते हैं।" (मु.14.5.70 पृ.2 मध्य) यही बात मुरली में बताई कि- कृष्ण ऊँच सूर्यवंशी कुल का है इसलिए राधा को आना पड़ता है। आती है, कृष्ण की बागों में खेलती है। मु. में कहा है-• "राधे, कृष्ण के महल में आती थी, फिर उनके साथ प्यार हो गया। ऐसे नहीं, राधे-कृष्ण एक ही बाप के बच्चे थे। नहीं, अलग-अलग थे। राधे आती थी, फिर स्वयंवर हुआ। राधे-कृष्ण कोई भाई-बहन नहीं थे, दोनों अलग-2 अपनी-2 राजधानी में थे।"(मु.14.7.73 पृ.3 मध्य)
- "ल.ना. और राधे-कृष्ण का क्या कनेक्शन है? वह राजकुमारी, वह राजकुमार, अलग-2 राज्य के हैं। ऐसे नहीं कि दोनों आपस में भाई-बहन थे। वह अलग अपनी राजधानी में थी, वह अलग अपनी राजधानी का राजकुमार था। उन्हों का स्वयंवर होता है तो ल.ना. बनते हैं।"(मु.26.10.73 पृ.2 मध्य)
- "राधे-कृष्ण ही फिर ल.ना. बने हैं; परंतु वह बच्चे किसके थे, यह किसको पता नहीं है। कृष्ण की महिमा की है, राधे की कहाँ है! दोनों अलग-2 गाँव के प्रिस-प्रिसेज़ थे। बगीचे में घूमने-फिरने जाती थी। फिर ड्रामा अनुसार उन्हों की आपस में दिल लगती है और सगाई हो जाती है। राधे-कृष्ण ही स्वयंवर बाद ल.ना. बनते हैं।"(मु.13.11.71 पृ.2 अंत) यहाँ कोई स्थूल बागों की तो बात नहीं, न ही स्थूल फूलों की बात है। खेलना मतलब ज्ञान रत्नों से खेलना। वह संगमयुगी राधा का पार्ट बजाने वाली आत्मा जो चन्द्रवंशी है, वह जब आती है तो एकदम आ करके सरेंडर नहीं हो जाएगी। पहले वह ज्ञान रत्नों से खेलेगी। कहते हैं- कृष्ण से स्नेह हो गया, प्रीति हो गई फिर बाद में उनका स्वयंवर कर दिया जाता है। तब दोनों वंश मिल करके एक हो जाते हैं। चंद्रवंशी राधा सूर्यवंशी कृष्ण से मिल करके सूर्यवंश की हो जाती है। अभी तक भी भारत में ये परम्परा है-

कन्याएँ किसी भी कुल की हों; लेकिन वे वर पक्ष में पहुँच करके उसी कुल की हो जाती हैं। इस तरह दोनों कुल मिल करके सूर्यवंशी एक कुल बनता है और सूर्यवंश की स्थापना में वृद्धि होकर बाकी चन्द्रवंशी आदि खलास हो जाते हैं।

क्या कृष्ण द्वापर में आया?

कृष्ण को द्वापर में दिखाते हैं। वास्तव में यह संगम की बात है। मु. में कहा है-• "द्वापर में कृष्ण के साथ कंस, जरासिधी आदि बैठ दिखाए हैं। वास्तव में इस समय सब हैं राक्षस सम्रदाय।" (मु.10.10.73 पृ.3 मध्य) संगमयुग में सूर्य की याद करने से हम ऊपर चढ़ते हैं। याद करते-2 जो भी आत्माएँ ऊँची सीढ़ी चढ़ने लग पड़ती हैं, अगर वे एक की अव्यभिचारी याद में द्वापुर से ऊपर वाली सीढ़ी पर कदम रखेंगी तो उनके अंदर एक विशेष शक्ति आती है। वह शक्ति भी कोई एकदम नहीं आती, धीमी-2 गति से आती है; क्योंकि आगे भी ऊपर और सीढ़ियाँ चढ़नी हैं।

मुरली में बाबा ने बोला है - कि जब तुम बच्चे लेतायुग की सीढ़ी चढ़ने लगेंगे तो डिसचार्ज होना बंद होने लगेगा। दिल और दिमाग के अंदर उस शक्ति के आरोपण होने से उमंग-उत्साह दिन दुगुना रात चौगुना बढ़ेगा। वो उमंग-उत्साह फिर कम नहीं हो सकता।

भारतीय परम्परा में रात के 12 बजे कृष्ण का भी जन्म दिखाते हैं और रात के 12 बजे शिव की भी राति मनाते हैं। उसको शिव की जयंती नहीं कहते। यानी शिव का जन्म नहीं दिखाते हैं; क्योंकि शिव तो निराकार है। वास्तव में सन् 1976 में बाप का जो प्रत्यक्षता वर्ष मनाया गया था, वो है राम बाप वाली आत्मा की प्रत्यक्षता रूपी जन्म का टाइम। जिसके बुद्धि रूपी गर्भ में कृष्ण की सोल प्रवेश कर जाती है। जैसे वहाँ बताते हैं कि 10 महीने पूरे हुए तब कृष्ण का जन्म हुआ। ऐसे ही यहाँ है फिर बेहद की बात। 10 साल का पीरियड जब पूरा होने वाला होता है, तब सन् 1987 में 16 कला कृष्ण की सोल माता के ज्ञानगर्भ में प्रवेश हो जाती है।

कृष्ण का 8 वाँ नं. जन्म

शास्त्रों में कृष्ण के लिए जो बातें आई हैं, वह भी यहाँ लागू होती हैं। दिखाया है कि कृष्ण ने 8 वाँ नं. बच्चे का जन्म लिया। इसका मतलब है कि कृष्ण की प्रत्यक्षता होने से पहले ही कृष्ण जैसे 7 और बच्चे प्रत्यक्षता रूपी जन्म ले चुके होते हैं। मु.में कहा है-• "देवकी को आठवाँ नम्बर श्रीकृष्ण बच्चा पैदा हुआ। अब आठवाँ नम्बर कृष्ण जन्म लेगा कब?.....सतयुग में। सतयुग में कृष्ण के माँ-बाप को 8 बच्चे तो होते नहीं।.....फिर दिखलाते हैं उनका बाप उनको (काली यमुना) नदी से पार ले जाता था।" (मु.18.8.72 पृ.2 मध्यादि, 3 अंत) सतयुग में तो आठ बच्चे पैदा होंगे नहीं। यह संगमयुग की ही बात है। जब संगम में ये कम कलाओं वाले सात नारायण प्रत्यक्ष हो जाते हैं तो सन् 1976 या सन् 1987 में आठवाँ नम्बर कृष्ण की आत्मा यानी ब्रह्मा की सोल इस संगम के समय कोई ब्राह्मण बच्चे में प्रवेश करके गुप्त सेवा- कार्य करती है वो बात प्रत्यक्ष हो जाती है। चूँकि आठवें नम्बर पर श्री कृष्ण की प्रत्यक्षता होती है; इसलिए शास्त्रों में कृष्ण को आठवें नम्बर का बच्चा दिखाया गया है। वे स्वयं की प्रत्यक्षता कर्ता सात नारायण पहले प्रत्यक्ष होते हैं, जो यज्ञ में बेसिक में पहले

देखने में आते हैं और उनके पार्ट भी एडवांस ज्ञान से प्रत्यक्ष होते हैं और आठवें नम्बर पर कृष्ण का प्रत्यक्षता रूपी जन्म गर्भ से बाहर आकर सन् 1998 में 15 अगस्त को होता है। कृष्ण जैसे सात बच्चों का भी जन्म तो पहले हो जाता है; लेकिन उनको कंस अपनी अपवित्रता की मार से उनके स्वाभिमान को मार देता है। पनपने नहीं देता। वास्तव में कृष्ण जैसे 7 बच्चे वे कोई दूसरी आत्माएँ नहीं हैं, बल्कि वे 7 जो सतयुग में बाद वाले नारायण बनने वाली आत्माएँ हैं, जो द्वापुर से दूसरे धर्मों में नं. वार कनवर्ट हो जाती हैं, वे ही कृष्ण जैसे 7 बच्चे हैं, जिनके पार्ट सन् 1976 से ही एडवांस ज्ञान में प्रत्यक्ष होने लग पड़ते हैं। बाबा ने कहा है कि कौरव और यादव पहले प्रत्यक्ष होते हैं और पाण्डव बाद में प्रत्यक्ष होते हैं। वे कृष्ण जैसे 7 बच्चे जिनका प्रत्यक्षता रूपी जन्म तो पहले हो जाता है भल कंस उनको अपने काल के गाल में लपेट लेता है। कैसे ? कंस अगर न मारता तो वो भी जिदा रहते।

ज्ञान चंद्रमा ब्रह्मा के यज्ञ में भाई भी अर्पण हुए। बहनें तो अर्पण हुई ही। जो अर्पण होने वाले भाई थे, उन्होंने तन, धन, धाम, सुहृद, परिवार सबकी बाजी लगाई और यज्ञ में आ गए; लेकिन जो रावण या कंस दिखाया जाता है, कंस का काम क्या था? कन्याओं को कोस लेता था। कन्याओं को कोसने वाले को ही कंस कहा जाता है। तो यज्ञ के अंदर कुछ ऐसी परिक्रिया चल पड़ी। पहली परिक्रिया दृष्टि का, वृत्ति का करप्शन हो गया। दृष्टि करए होती है तो वृत्ति भी करए होती है और कर्मेन्द्रियाँ भी करप्शन में लिप्त हो जाती हैं। तो वे नीची कुरी के अप्रत्यक्ष में सरेंडर वर्ग की आत्माएँ हों, चाहे प्रत्यक्ष में प्रैक्टिकल में सरेंडर हुई हों अर्थात् जैसे बाबा बताते हैं कि तुम अपने घर-गृहस्थ में रहते हुए भी ऐसे समझो कि हम सरेंडर हैं। दोनों प्रकार की आत्माएँ जिन्होंने जैसा भी पुरुषार्थ किया; लेकिन मूल बात तो है तन, मन, धन, समय, सम्पर्क और संबंध को निस्वार्थ भाव से ईश्वरीय कार्य में लगा देना। जिन आत्माओं ने एक तरफ सब कुछ लगाया और दूसरी तरफ फिर कंस के कुसावे में आ गई। कंस ने उनको अपने माया जाल में बाँध लिया। कृष्ण की सोल भी जन्म तो वहीं से लेती है। यानी ज्ञान में तो आती है; लेकिन उनके कुसावे में नहीं फँसती। कृष्ण बच जाता है। इसीलिए शास्त्रों में जो बात आई है और मुरली में बाबा ने इसका इशारा दिया है कि सतयुग में तो 8 बच्चे होते नहीं। कहते हैं कि कृष्ण ने 8 वाँ नं. (बच्चे) का जन्म लिया। तो ये बात बुद्धि में आ जाती है कि ये बात सतयुग की नहीं है। ये बात वास्तव में संगमयुग की है। जबकि कंस उन सात बच्चों को कोस करके अपने कंट्रोल में कर लेता है। 8 वाँ नं. कृष्ण कंस के कंट्रोल से बाहर हो जाता है। कंस का हाथ उसके ऊपर नहीं लग पाता और वह गाँवड़े में जा करके पलता है। इसलिए बाबा ने मु. में कहा है-• "(सीढ़ी में ऊपर) कृष्णपुरी और (नीचे) कंसपुरी। दिखलाते हैं कृष्ण को (विषय-वैतरणी नदी-यमुना के) उस पार ले गए। इस संगम की बात है। कृष्ण को उस पार नहीं ले गए। यह तो बेहद (ज्ञान) की बात है। अभी हम उस पार जा रहे हैं ना।"(मु.17.11.72 पृ.3 आदि) इसलिए बाबा हमेशा कहते रहे हैं, गाँवड़ों की सेवा करो। गाँवड़ों के प्रति जैसे बाबा का बहुत प्यार है। गाँवड़े का छोरा। मु.में बोला है-• "उनको कहा जाता है गाँवरे का छोरा। तो ताज कहाँ से हो सकता ! गाँव का छोरा तो गरीब होगा ना। (मु.8.2.70 पृ.2 मध्य)

शास्त्रों में जो भी बातें दिखाई गई हैं, वो सब इस समय की यादगार है। बस सिर्फ इतनी बुद्धि दिव्य बनानी है कि हम उन बातों को ज्ञान के आधार पर टैली कर सकें; लेकिन हमको ये भी ध्यान रखना पड़ेगा कि बाबा ने जो मुरली में बात बोली है •जो शास्त्रों के उदाहरण उठाए हैं या जो सार रूप में बातें उठाई हैं; वह तो परमपिता शास्त्रों का सार आ करके ब्रह्मा द्वारा सुनाता है। (मु.31.7.73 पृ.2 अंत) उन उठाई गई सार रूप बातों का ही विश्लेषण हम मन-बुद्धि से करें। जिस भूसे का वर्णन बाबा ने मुरली में नहीं किया है उसके ऊपर मनन-चिन्तन-मंथन न करने लग पड़ें। जब जरूरत होगी तो बाबा स्वतः ही शास्त्रों की जो बातें साररूप होंगी वो आगे बताते रहेंगे।

एडवांस पार्टी का प्रारंभ

एडवांस पार्टी का सन् 1976 से जब आरम्भ होता है, रामवाली आत्मा की राम बाप के रूप में जब प्रत्यक्षता होती है, उस समय खास विदेशी आत्माएँ- इस्लामियों का बीज, बौद्धियों का बीज और क्रिश्चियन्स का बीज उसे प्रत्यक्ष करने में विशेष सहयोगी बनती हैं। लेकिन शुरूआत में जहाँ दिल्ली में यह बीज बाप को प्रत्यक्ष करने के निमित्त बनते हैं, वही बाद में जो करके नितांत विरोधी भी बन जाते हैं; क्योंकि विदेशियों में उतना जिगरी, गहरा ज्ञान नहीं हो सकता, जितना भारतवासियों में गहरा ज्ञान हो सकता है। विदेशियों में 'एक नारी सदा ब्रह्मचारी' की पावर नहीं होती; इसलिए वो एडवांस ज्ञान बुद्धि में ठहरता नहीं। वो जन्म-जन्मांतर के संग के रंग से कनवर्टेड विदेशियों के संस्कार संगमयुग में आड़े आ जाते हैं। पवित्रता वाली बात उनकी बुद्धि में असली रूप में गहराई तक बैठती नहीं और उसी बात में फेल हो जाते हैं। इस यज्ञ के अंदर शुरूआत से ले करके अपवित्रता के विघ्न आते रहे। वही अपवित्रता का विघ्न इन कनवर्टेड विदेशी बच्चों को अपनी गिरफ्त में ले लेता है और ये शिव सुप्रीम बाप के पार्ट के ऊपर संशयबुद्धि बन जाते हैं और विरोधी भी बन जाते हैं।

भरतः- विदेशियों में से मुख्य बीज है- इस्लामी। वो भरत का पार्ट बजाने वाली आत्मा इस्लाम धर्म से कनेक्टेड होती है। यहाँ सीढ़ी में ऊपर इस्लाम धर्म की बीज रूप आत्मा को काले कपड़े पहने हुए साथ में खड़ा हुआ दिखाया गया है। काले कपड़े कौन-से धर्म में ज्ञादा चलते हैं? इस्लाम धर्म में। इस्लामियों में काम वासना, व्यभिचार के जो संस्कार होते हैं, तो बीज में भी वो छिलका ज़रूर चढ़ा हुआ होगा। इस प्रकार वह आत्मा भी एक तरफ पु. संगम के आदि में ही एडवांस ज्ञान का सक्रिय पार्ट बजाती है। कौन-सा पार्ट? हिदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सब आपस में भाई-2; लेकिन उन विदेशी आत्माओं को यह पता नहीं है कि भारतीय परम्परा में भाई-2 की स्टेज क्या होती है। जो भारतीय परिवार हैं, उनमें भाई-2 किसे कहा जाता है? ऐसे ही कहने के लिए कह देना भाई-2 और बाप को बाप के रूप में रिगार्ड न देना तो भाई-2 कहे का? भारत की परम्परा में तो बड़े भाई को बाप समान माना जाता है। बाप तो बाप है ही; लेकिन बड़े भाई को भी बाप समान माना जाता है। राजाओं की जितनी भी पावर है वो बड़े भाई को सौंपी जाती है। बड़ा भाई ही छोटे भाईयों की बच्चों की तरह परवरिश करता है।

एडवांस की शुरूवात में जब तीन भाई दिल्ली में सहयोगी बनते हैं, उस समय एक कन्या भी बाप की सहयोगी बनती है। जिसे साकार राम बाप यज्ञमाता का स्थान देते हैं। जो इस्लामी बीज है, वह एक तरफ तो

ढोंग करता है कि ये हमारी माँ है और ये हमारा बाप है। और दूसरी तरफ माँ को अपने हाथ में भी कर लेता है, जो बाप के कंट्रोल में रहनी चाहिए। अगर बच्चा माँ को अपने कंट्रोल में कर ले और अपने तौर-तरीकों से चलाने लग पड़े, तो ऐसे बच्चे को क्या कहा जाएगा? आसुरी या ईश्वरीय बच्चा? आसुरी बच्चा। अगर बाप को बाप के रूप में भी न मानो, बड़े भाई के रूप में ही मानो, तो भी तो बहन हो जाती है। जब लिख करके देते हो कि हमारे माँ-बाप हैं। हम आपस में भाई-बहन हैं। तो फिर भाई-बहन का वो प्रैक्टिकल संबंध भी निभाना चाहिए। जबकि प्रैक्टिकल में परमात्मा आ करके प्रवृत्ति मार्ग के घर-गृहस्थ की स्थापना का फाउंडेशन डाल रहे हैं; लेकिन उसने धोखा दे दिया और जब उसी ने धोखा दे दिया और साथ में जिसे दिल्ली में निमित्त बनाया गया यज्ञमाता के रूप में वह भी धोखा दे जाती है। तो जो बाप का पार्टधारी है वह भी ड्रामा प्लैन अनुसार बुद्धि में ये निश्चित कर लेता है कि इस माता में ही संस्कार थे उस इस्लाम धर्म के साथ जाने के। तभी तो इसने ऐसा पार्ट बजाया। इसको तो जगत् की माँ के आसन पर बैठाया गया; लेकिन इसने क्या काम कर लिया!

उनकी जो बड़ी पूजा स्थली बनती है उसका नाम पड़ गया जा-मा-मिस-जिद 'जामा मस्जिद'। ऐ माँ, कैसी माँ? जो मिस थी। माना शादी की हुई नहीं थी। तू जा। कैसी माँ है? जिद करने वाली। अरे! जब परमात्मा के बन चुके तो इसमें ये जिद क्या कि दूसरे भाई लोग ये कहते हैं कि तुम उस भाई राम वाली आत्मा के साथ अकेली रह सकती हो तो मेरे साथ क्यों नहीं रह सकती? इसलिए तुम हमारे पास भी आ करके क्लास कराओ। इस बात के लिए अगर जिद कर गई तो उसको क्या कहा जाएगा? जायज या नाजायज? नाजायज कहा जाएगा। अगर किसी भी मनुष्य के साथ रहकर तुम पवित्र रह सकती हो तो दूसरे भाई कहते हैं, तुम हमारे पास भी आ करके पवित्र रह करके दिखाओ। ये गलत कहा ना। अरे! क्या कह देने से, लिख करके देने से कोई भाई-बहन हो जाते हैं? ये तो प्रैक्टिकल तुमको एक के साथ जोड़ना है या अनेकों के साथ जोड़ना है? एक के साथ जोड़ना है। ऐसे ही बाबा ने कह दिया, तुम आपस में भाई-बहन हो तो भाई-बहन की तरह आपस में किसी भी ब्रह्माकुमारी के साथ सो सकते हो? रह सकते हो? फिर कोई बाबा के ऊपर उंगली उठाए कि बाबा क्यों रहता है? अरे! बाबा को तो लिखित रूप में दिया हुआ है। सरेंडर हुए पड़े हैं। तो बाबा अपने पास रखता है। बाबा ये थोड़े ही कहता है कि मैं पावन हूँ या कहता था? तो जो नाजायज आचरण है वो उन तीन विदेशी भाईयों के द्वारा अपना लिया गया और उसके कारण वो गुप्त भोगी भी बनते हैं।

अगला लक्ष्मण को दिखाया गया है। वह बौद्ध धर्म से कनेक्टेड आत्मा है। बौद्धी जो होते हैं, वह इस्लामी और क्रिश्चियन के प्रभाव में आ गए। इसलिए बाबा मुरली में इस्लामी, बौद्धी और क्रिश्चियन तीनों को यादव बोल देते हैं; क्योंकि बौद्धी उनके प्रभाव में आ जाते हैं। जब प्रभाव में आ गए तो ना इधर की बोलेंगे, ना उधर की बोलेंगे। इसका मतलब क्या हुआ? संशय में हैं। वह बौद्ध धर्म का पार्ट बजाने वाली आत्मा माना लक्ष्मण। वो बुद्धि से तो सहयोगी होती है; लेकिन पहले तो उसके अंदर विदेशियों से मुकाबला करने की हिम्मत नहीं होती।

शत्रुघ्नः- चार कुमारों में भी जो सबसे छोटा, वह सबसे जास्ती खोटा पार्ट बजाता है। कैन-सा खोटा पार्ट बजाता है? भक्तिमार्ग में क्रिश्चियन्स में गिरजाघर बनाए जाते हैं। गिरजाघर बनने की परम्परा का फाउंडेशन

भी संगमयुग में पड़ता है। वह जो छोटा सबसे खोटा वह सबसे ज्यादा सक्रिय विरोध करता है और परमपिता परमात्मा सन् 1976 से जो घर-गृहस्थ की स्थापना का फाउंडेशन डालते हैं, उस फाउंडेशन में वह विघ्न रूप बन करके आड़े आता है। उसके सबसे जास्ती ये संकल्प चलते हैं कि- हे, भगवान के बने बनाए घर तू गिर जा। सन् 1976 में जो स्थान बनाया जाता है, भगवान जो घर रचता है, घर कोई चार दिवारों को नहीं कहा जाता। कहते हैं- न गृहम् गृहम् इति उच्यते। गृहिणी गृहम् उच्यते। गृहम् ही गृहिणी हीनम्, अरण्य सदृशं मतम्॥ अर्थात् गृहिणी को ही घर कहा जाता है। भगवान ने जो घर बनाया मतलब सहयोगी बनाया, उस घर को उस आत्मा ने उखाड़ दिया। एक का संकल्प हो तब तो ठीक भी है; लेकिन जब संगठित रूप में सारे ही धर्म की जो मुख्य बीज आत्माएँ हैं, इकट्ठे हो करके एक ही संकल्प चलाएँगे तब (उनको) सफलता मिलती ही है। इस तरह दिल्ली में वह बना-बनाया घर जो फाउंडेशन में डाला जाता है वह गिर जाता है और उसकी यादगार में क्रिश्वियन्स की परम्परा में आज तक भी गिरजाघर बनाए जाते हैं। उन्होंने भगवान के बने बनाए घर को गिरा दिया। इसलिए उनके घर का नाम भी पड़ जाता है-'गिर+जा+घर'। यही कारण है कि चित्र में शतुघ्न वाली आत्मा की स्थिरियम सहयोगिनी शक्ति को भी नहीं दिखाया गया है।

इस तरह चौथे नम्बर का भाई हाथ जोड़े हुए खड़ा हुआ है वो ही है - शतुघ्न। शतुघ्न का जो पार्ट बजाने वाली आत्मा है, वह क्रिश्वियन धर्म का मूल बीज है। बाबा ने मुरली में कहा है- •"मंसा में तूफान तो बहुत आवेगा; परन्तु कर्मेन्द्रियों से न करना है। कर्मेन्द्रियों से कर बैठे तो उन कर्मेन्द्रियों को काटा जावेगा। वह अंग काटा जावेगा। अगर दान देकर फिर किस पर क्रोध किया तो वहाँ जबान काटी जावेगी। धर्मराज बाबा घड़ी-2 इन्द्रियाँ कटवाते जाएंगे।" (मु.14.4.73 पृ.2 मध्य) जिन कर्मेन्द्रियों से जो-जो पाप किए वह-वह कर्मेन्द्रियाँ काटी जाएँगी। जिन्होंने रुद्रयज्ञ में कन्या-माताओं प्रति कुटृष्टि चलाई उनकी आँखें फोड़ी जाएँगी। जिन्होंने अपशब्द यूज किए उनका मुख बंद, उनकी जीभ काटी जाएगी। जिन्होंने जिन-2 कर्मेन्द्रियों से जो-जो विकर्म किए, वह-वह कर्मेन्द्रियाँ काटी जाएँगी और जिन्होंने बाहुबल चलाया तो भुजाएँ कट जाएँगी। ये धर्मराज की सजाएँ हैं। ज़रूर संगमयुग की ही बातें हैं ना ! बाबा ने मुरली में कहा है-•" योगबल से होती है स्थापना, बाहुबल से होता है विनाश।"(मु.11.2.68 पृ.2 मध्यांत) • अगर किस पर क्रोध करते होंगे तो डिस्ट्रक्टिव काम किया ना। ऐसे जो माँ-बाप की आबरू गंवाते होंगे उनको फिर क्या पद मिलेगा। (मु.2.1.73 पृ.4 अंत) जिसने बाहुबल का प्रयोग किया वो कौन-से धर्म की आत्मा है? कौन-सा ऐसा धर्म है जिसमें बाहुबल का प्रयोग किया जाता है? क्रिश्वियन धर्म में। जो क्रोधी होगा तो बाहुबल भी चलाएगा। हिस्ट्री में सबसे ज्यादा क्रोध किस धर्म के अंदर होता है? क्रिश्वियन धर्म की आत्माओं में। जो क्रिश्वियन धर्म के अनुयायी है उनके अंदर भी वही गुणधर्म ज़रूर होंगे।

सदगुरु निन्दक ठौर न पावे

"बाप कहते हैं- मैं सदैव परमधाम का रहने वाला हूँ। यह पुरानी दुनियाँ में आकर तुमको वरसा देता हूँ; फिर भी तुम नाम बदनाम करते हो। तब गाया हुआ है कि - सदगुरु का निन्दक सूर्यवंशी राज्य में (ऊँचा) ठौर न पा सके।" (मु.13.11.72 पृ.3 मध्य)

जो दूसरे स्लामी बौद्धी-क्रिश्वियन धर्मों की तीन मुख्य आत्माएँ हैं वो विधर्मी बीज होने के कारण डिस्ट्रिक्टिव पार्ट बजाने वाली हैं। शुरू-शुरुआत की सतोप्रधान स्टेज में तो परमात्मा बाप के थोड़ा सहयोगी बनते हैं; लेकिन बाद में ये टोटल विरोधी पार्ट बजाने लग पड़ते हैं। विरोधी पार्ट बजाने के कारण इनको लेतायुग के अन्त में जाकर थोड़ी-सी राजाई की ताज-पतलून मिल जाती है। बाकी ये लेता के आदि, मध्य में राजाई प्राप्त नहीं कर सकते। ये आत्माएँ पहले तो बाप को थोड़ा पहचानती हैं, बाप के कार्य में मददगार बनती हैं; लेकिन बाद में फिर पूरा विरोधी बन जाती हैं, डिससर्विस करने लग पड़ती हैं तो उसी समय उनकी राजाई भी छीन ली जाती है और फिर लेता के अन्त में जाकर राजभाग की अधिकारी बनती हैं।

आदि स्थापना की इतनी श्रेष्ठ आत्माएँ जब महाविनाश का समय होगा तो सजाएँ खाकर सुधर जाने के बाद ये सारे विश्व के चारों खंडों को कंट्रोल करेंगी। क्रिश्वियन्स का बीजरूप शत्रुघ्नि क्रिश्वियन धर्मखंड को कंट्रोल करेगा। इस्लाम का बीजरूप इस्लाम धर्मखंड को कंट्रोल करेगा और बौद्धी का बीजरूप बौद्धी धर्मखंड को कंट्रोल करेगा; लेकिन इतनी श्रेष्ठ आत्माएँ होते हुए भी ये सतयुग में किसी जन्म में कोई भी प्राप्ति नहीं कर सकतीं। संगमयुग में तो ऊँच-ते-ऊँच प्राप्ति आदि सो अंत के हिसाब से करेंगी; लेकिन सतयुग की 8 राजगद्वियों में इनको कोई पद नहीं मिलेगा। लेता में भी जो शुरुआत और मध्य की गद्वियाँ हैं, उनमें कोई पद नहीं मिलेगा; क्योंकि सद्गुरु निदक ठौर न पावे। द्वापुर से ये दूर धर्मखंडों में फेंकी जाती हैं। भारत में इनको बाप के पास, सुख-शांति की सनातनी दुनियाँ में रह करके शासन की सेवा करने के लिए स्थान नहीं मिलता। सद्गुरु निदक ठौर न पावे। निदा करायी तो नज़दीकी स्थान नहीं मिल सकता। दूर धर्म खण्डों में स्थान मिलेगा।

लेता में भी पहली गद्वी राम की, तो आखिरी जो तीन गद्वियाँ हैं, जो स्वर्ग को काटने वाली गद्वियाँ हैं यानी स्वर्ग को खंडित करने वाली गद्वियाँ हैं। उस स्वर्ग को खंडित करने का काम भी किसने किया? परमात्मा आ करके जो घर-गृहस्थ रूपी स्वर्ग की स्थापना करता है, उसको उन्होंने खंडित करने का काम किया होगा। इसीलिए राम का जो राजगद्वी का यादगार चित्र है, उसमें भी आपने देखा होगा कि राम-सीता तो सिहासन पर बैठते हैं, बाकी जो तीनों भाई हैं वे दास-दासी के रूप में पार्ट बजाते हुए दिखाए जाते हैं। कोई चँवर डुला रहा है। कोई छत लिए खड़ा है। कोई पाँव पखार रहा है इसीलिए बाबा कहते हैं कि अपनी चलन को सुधारो। जो पारिवारिक व्यवस्था शिवबाबा स्थापन करने के लिए आए हैं उसके अनुशासन को भंग मत करो। अगर अनुशासन को भंग करेंगे तो बाबा जानते हैं कि राजधानी स्थापन हो रही है। उसमें नम्बरवार हैं-दास-दासी भी चाहिए, चँवर डुलाने वाले, छत खड़ा करने वाले, पाँव धोने वाले, सब चाहिए। मुरली में कहा है-•"बाबा कहे यह काम न करो, मानेंगे नहीं। ज़रूर उल्टा काम करके दिखावेंगे। राजधानी स्थापन हो रही है, उसमें तो हर प्रकार की(के) चाहिए ना।"(मु.10.12.68 पृ.3 मध्यांत)

ये हुआ सतयुग लेता के 21 जन्मों का हिसाब-किताब। यहाँ सतयुग में आठ नारायणों की आठ गद्वियाँ दिखाई गई हैं। जिसके लिए मुरली में कहा है-•"गाया भी जाता है सतयुग में सूर्यवंशी श्री लक्ष्मी-नारायण की डिनायस्टी थी। जैसे क्रिश्वियन घराने में एडवर्ड दी फर्स्ट, सेकेण्ड, थर्ड चलता है। वैसे वहाँ भी लक्ष्मी-नारायण दी फर्स्ट, सेकेण्ड, थर्ड ऐसे 8 डिनायस्टी चलती हैं।"(मु.26.4.71 पृ.2 मध्य) •"कृष्ण की 8

डिनायस्टी चलती है। पहले कहेंगे प्रिस ऑफ सतयुग। फिर बनता है किंग ऑफ सतयुग। 8 पीढ़ी उनकी पहले चलती है। उस समय तो दूसरे राजाएँ होते नहीं।"(मु.6.9.81 पृ.2 अंत) •"लक्ष्मी-नारायण दी फर्स्ट, दी सेकण्ड, थर्ड । (सतयुग में) आठ बादशाहियाँ चलती हैं। बच्चे राज्य करते हैं। सीता-राम का भी (लेता में) ऐसे चलता है।" (मु.31.7.73 पृ.2 मध्यांत) 8 जन्मों में जो नं.वार लक्ष्मी-नारायण बनने वाली आधारमूर्त आत्माएँ हैं, वे ही लेता में भी जा करके 8 जन्मों में उसी क्रम से राम-सीता बनती हैं; क्योंकि मुरली में बोला है-•"यह अभी जानते हैं हम सो ल.ना. बनते हैं, हम सो राम-सीता बनेंगे।" (मु.25.5.72 पृ.3 मध्यांत) दूसरे वाक्य में बोला-जो लक्ष्मी-नारायण बनते हैं, वही राम-सीता बनते हैं। इसका मतलब हुआ जिस क्रम से ल.ना. बनते हैं, सतयुग में उसी क्रम से राम-सीता बनते हैं। स्वर्ग में पु. संगमयुगी सहित कलाबद्ध ल.ना. बनने वाले 9 हैं। एक कलातीत संगमयुग का और 8 सतयुग के लेता में 12 गद्वियाँ चलती हैं, उनमें पहली जो 9 गद्वियाँ हैं उन पर वही आत्माएँ आसीन होंगी, बाकी जो (तीन) खंडित गद्वियाँ हैं स्वर्ग के शासन को खंडित करने वाली, स्वर्ग को नष्ट करने वाली, उन गद्वियों के ऊपर आसीन होने वाली वे ही आत्माएँ होंगी, जो घर के बच्चे बने अर्थात् आदिदेव बाप के बच्चे बने; लेकिन बच्चे बनने के बावजूद भी उन्होंने बाप को धोखा दिया। बाप का मुँह काला किया। बाप की गलानि की। वे ही तीनों भाई लेता की अंतिम ध्वंसकारी गद्वियों में अविनाशी ड्रामा में एडजेस्ट कर दिए जाते हैं। जो स्वर्गीय संगठन पहले जल्दी बनना चाहिए था, उस परमात्मा के कार्य में इन्होंने विघ्न डाला और विघ्न डालने के कारण सारा कार्य स्थगित हो जाता है, देर में बनता है। तो वह स्वर्गीय संगठन जल्दी तैयार नहीं हो पाता है। उसका इनको दंड ये मिलता है कि लेता के अन्त में जाकर स्वर्ग के विघटन के निमित्त बनते हैं। स्वर्ग स्थापन करने के निमित्त नहीं बन पाते। ये इन आखिरी तीन सीढ़ियों के अधिस्थापक हैं। तो स्वर्ग की जो दुनियाँ हैं वो इनके द्वारा नष्ट होती है। सतयुग, लेता का तो ये हिसाब हुआ।

लेता का अंत

लेता के अंत में ये जो विघटन का फाउंडेशन पड़ जाता है और वो ही फाउंडेशन कलियुगी आखिरी जन्म में आ करके बढ़ने लगता है। ऊपर आत्मलोक से आने वाले धर्मपिताएँ उन्हीं बीजरूप आत्माओं के द्वारा जो जन्म लेने वाले आधारमूर्त जड़े हैं, उनमें प्रवेश करते हैं और प्रवेश करके विपरीत धर्मों की स्थापना शुरू हो जाती है। वो तो झाड़ के चिल में बताया। लेकिन स्वर्गीय भारतवर्ष में इन धर्मों को नहीं दिखाया गया। भारत के उत्थान-पतन की कहानी→ जो सीढ़ी दिखाई गई है उसमें दूसरे धर्मों का कोई ज़िक्र नहीं है। वास्तव में ये जो राम सहित चार कुमार अथवा रुद्रमाला के ये जो भी मणके हैं, वो तो देवी-देवता सनातन धर्म की ही पक्की कलातीत बनने वाली 4.5 लाख सितारों वाली आत्माएँ हैं; क्योंकि बीज हैं। बीज का कभी विनाश तो होता नहीं। 84 जन्म लेने वाले होते हैं। तो वो पार्ट भारत में ही बजाते हैं। जिस किसी भी जन्म में उनको राजा बनना होगा, जब बनना होगा तो भारत में ही वो राजा बनेंगे। दूसरे देशों में अगर राजाई का फाउंडेशन भी डालना है तो फाउंडेशन डाल के फिर वापस आ करके स्वर्गीय भारत में ही जन्म लेंगे।

पुरुषोत्तम संगमयुग में ही रावण-राज्य की शूटिंग

यहाँ जो दिखाया गया है भक्तिमार्ग की सारी परिक्रियाएँ और परम्पराएँ ये उन्हीं आधारमूर्त और बीजरूप राजाओं की हैं जो रावण-राज्य का फाउंडेशन डालने वाले हैं। झाड़ के चित्र में आपको बताया था कि लेफ्ट साइड में जो धर्म हैं, डालियाँ हैं उनकी आधारमूर्त जड़े नीचे भी हैं। जो लेफ्ट साइड में दिखाई गई कामी, क्रोधी, लोभी, मोही, अहंकारी। और उन जड़ों के कोई बीज भी हैं। जो बीज दिन के सितारों रूप में अंत तक गुप्त रहते हैं। बीज जमीन के अंदर बोया जाता है। तो वो खाक में मिलने वाले बीज भी हैं। यज्ञ के आदि में जब ये बीज बोए गए थे वो बीज रूप पितरों की आत्माएँ विकारों में सङ् ग गए। जैसे धरणी में बोया हुआ बीज सङ् ग जाता है। जैसे दिन के सितारे ज्ञानसूर्य की रोशनी में अपने अस्तित्व को नष्ट कर देते हैं। लेकिन उनकी सारी शक्ति जड़ों से होते हुए वृक्ष में समा जाती है। और फिर बाद में वो ही बीज फलों में सन् 1976 के बाद नं. वार आदि सो अंत के हिसाब से फिर प्रत्यक्ष होते हैं। उनमें नम्बरवार ही हैं, कोई देवी-देवता सनातन धर्म के बीज हैं, कोई देवी-देवता सनातन धर्म की जड़ें या सीधा ऊपर जाने वाला तना है और तो कोई विदेशी या विदर्भी धर्मों की जड़ें या डालियाँ भी हैं यहाँ सीढ़ी के आदि में दिखाया गया है जिस समय संगमयुगी ब्राह्मणों का नयी दुनियाँ की मानसी स्थापना का कार्यक्रम दिल्ली में सन् 1976 से चल रहा होता है, उस समय परमपिता स्वयं राम के साकार तन के द्वारा मुकर्रर रूप से प्रत्यक्ष रूप में कार्य कराता है तो राम-राज्य के स्वर्गीय 21 जन्मों की शूटिंग होती है, चढ़ती कला की शूटिंग होती है और जब देहधारी धर्मगुरुओं के हाथ में शासनतंत्र आता है और परमात्मा गुप्त हो जाता है तो रावण-राज्य की शूटिंग होती है। जिसके लिए अ.वा. में बापदादा ने कहा है- • "84 जन्मों की चढ़ती कला (राम-राज्य) और उत्तरती कला (रावण-राज्य) उन दोनों के संस्कार इस (संगम के) समय आत्मा में भरते हो।" (अ.वा.30.5.73 पृ.77 अंत)

सहज रूप में समझने के लिए पहले-पहले जो विस्तार रूप है वो समझ लेंगे; क्योंकि बीजरूप तो होता है छोटा। आत्मा रूपी बीज नजरों के सामने भी उतना नहीं है। आगे चल करके और उसका विस्तार हो जाएगा। जो झाड़ के चित्र में जड़ों के भागों में जितने भी लेफ्ट साइड के नारायण रूप आधारमूर्त जड़ें या बीज दिखाए गए हैं, वो ही ब्रह्मा बाबा के शरीर छोड़ने के बाद ब्राह्मणों की दुनियाँ में जंजीरें फैला रहे हैं। जब तक ब्रह्मा बाबा जीवित थे, ज्ञानसूर्य की रोशनी ज्ञानचन्द्रमा में प्रत्यक्ष हो रही थी तब तक ब्रह्मा का दिन था। उनके शरीर छोड़ने के बाद ज्ञान चन्द्रमा ब्रह्मा तो प्रायः करके गुलजार दाढ़ी में रात में ही प्रत्यक्ष होता रहा; लेकिन उसमें से ज्ञान सूर्य वानप्रस्थी हो गया माना गुप्त हो गया और उसके बाद देहधारी धर्मगुरुओं रूपी रात के सितारों का शासन यज्ञ के अन्दर आ गया। इन देहधारी धर्मगुरुओं ने यज्ञ में रावण के रूप में संगठित हो करके ये सीढ़ी में सोने की जंजीरें फैलाना शुरू कर दिया और उन सोने की जंजीरों में सारे नौ कुरियों के बीजरूप-आधारमूर्त ब्राह्मणों और ब्राह्मणों की दुनियाँ के फालोर्स को अच्छी तरह से बाँध लिया। उन्हीं के द्वारा ये भक्तिमार्ग की अंधश्रद्धायुक्त परम्पराएँ चलायी जाती हैं। जिन परम्पराओं पर चलने से मनुष्य नीचे गिरते जाते हैं। चलाने वाले नं. वार झूठे गुरु लोग खुद भी नीचे गिरते चले जाते हैं। मुरली में कहा है-• "वास्तव में गुरु तो एक ही होता है सद्गति के लिए। बाकी सभी हैं दुर्गति के लिए।" (मु.11.3.69 पृ.1 मध्य) • "यह ढिठोरा पिटवाते रहो- एक सद्गुरु निराकार द्वारा सद्गति, अनेक मनुष्य गुरुओं द्वारा दुर्गति।" (मु.11.3.69 पृ.1 अंत)

बाबा के शरीर छोड़ने के बाद, परमपिता शिव के साकार पार्ट समाप्त होने के बाद भक्तिमार्गीय रावण-राज्य की शूटिंग कैसे होती है वह यहाँ इस चिल में सीढ़ी के उत्तरार्ध में दिखाया गया। मुरली में भी बाबा ने बोला है कि द्वापर जब आरंभ होता है, लेता का अंत होता है तब लेता के अंत में जिन बीजरूप आत्माओं का राज्य होता है वो दूसरे धर्मों की आधारमूर्त और बीज होती हैं- इस्लामी, बौद्धी, क्रिश्चियन। जो देवताएँ थे; 'यथा राजा तथा प्रजा', उसी गति को पकड़ती हैं और लास्ट जन्म में आ करके उसमें से ज्यादातर प्रजा लेता के अंत में दूसरे धर्मों में कन्वर्ट होना शुरू कर देती है।

द्वापरयुग की शुरूवात में इस्लाम धर्म सबसे पहले-2 प्रकाश में आया। मुरली में बोला हुआ है कि रावण जब से सत्ता में आते हैं ब्राह्मणों की दुनियाँ में कहो चाहे 2500 वर्ष की उस नर-निर्मित नरक की दुनियाँ में कहो, इब्राहिम जब से आया या रावण जब से आया तब से भारत में भारतवासियों की आपस में ही लड़ाई शुरू हो गई। • "रावण जब (सत्ता में) आते हैं तो पहले-2 घर में ही लड़ाई शुरू होती है। जुदा-2 हो जाते हैं। आपस में ही लड़ मरते हैं। अपना-2 प्रॉविस (ज़ोन्स) अलग कर देते हैं।" (मु.8.8.68 पृ.3 मध्यांत) • "लेता और द्वापर के संगम पर रावण आते हैं जबकि देवी-देवताएँ वाममार्ग में गिरते हैं।" (मु.10.10.68 पृ.1 अंत) क्योंकि वो व्यभिचारी आत्माएँ आत्मलोक से आ करके दृष्टि-वृत्ति को करण करती हैं और उस समय सूर्यवंशी राम और राम की जो भी सहयोगी आत्माएँ होती हैं, वो उस करप्तान को पसंद नहीं करती। लिहाज़ा संघर्ष हो जाता है और उन इस्लामियों को वहाँ से खदेड़ करके दूर अरब खंड की ओर भगा दिया जाता है। वो अरब देशों में जा करके बड़ी तीव्रगति से बहन-बेटियों के साथ भी व्यभिचार फैलाते हैं जैसे कि झाड़ के चिल में बताया था और तीव्र जनसंख्या वृद्धि कारण दुनियाँ में चारों तरफ छा जाते हैं। ऐसे ही यज्ञ के अंदर भी हुआ। बाबा के शरीर छोड़ने के बाद जो जनरेशन ब्राह्मणों की दुनियाँ में तीव्रता से बढ़ी है, वो पहले लंदन आदि विदेशों में सेवाकेंद्र खुलने के बाद शुरू हुई है।

रावण-राज्य की शूटिंग के पछ्के प्रमाण

(1) लेता अंत का अर्ध विनाश :-

रावण-राज्य का पहला प्रूफ है कि-जब स्वर्ग समाप्त होता है, लेता का अन्त होता है तो द्वापरयुग के शुरूआत में, रावण-राज्य के एकदम आरम्भ में भूकम्प आता है और ज़मीन के हिलने से देवताओं के संगठन के रूप में जो महल-माड़ियाँ हैं, वे ज़मीन में समा जाती हैं और सृष्टि का आधा विनाश हो जाता है। लेता के अन्त में सृष्टि का आधा विनाश भूकम्प के द्वारा होता है; क्योंकि उस समय विकारी प्रवृत्ति का रावण-राज्य शुरू होता है और उस समय देवताओं के वाममार्ग में जाने से स्वर्ग नष्ट हो जाता है। आधा विनाश होता है पूरी सृष्टि का विनाश नहीं होता है। यानी भूकम्प आता है और ज़मीन के हिलने से वो महल-माड़ियाँ (भूगर्भ में) समा जाती हैं।

इसकी यहाँ शूटिंग होती है कि- लेता के अंत के बाद फिर डिस्ट्रक्शन शुरू हो जाता है। धरती कंप होता है। भूकम्प में ये हुआ कि मम्मा के शरीर छोड़ने के बाद जो मम्मा के प्यार में चलने वाली कन्याएँ-माताएँ रूपी धरणी थीं, वे हिल गईं और इनके हिलने से इनके आधार पर चलने वाले जो जिज्ञासु थे, वे टूट पड़े। कुछ तो इसलिए हिले कि उनको ज्ञान का डोस पूरा नहीं मिला। ऐसे ही ब्रह्मा बाबा के भी शरीर छोड़ने के बाद जो

एकमात्र बाबा के प्यार में चलने वाली आत्माएँ थीं, वे भी हिल गईं और टूट पड़ीं और उनके आधार पर चलने वाले जो भाई बहन लोग थे, वो भी टूट पड़े।

उस समय प्रत्येक ब्राह्मण के दिल और दिमाग के अंदर मुरलियों में बताई हुई बाबा की 100 वर्ष आयु को लेकर माया के भूकम्प अर्थात् संशय उठ रहे थे जिनका सही समाधान तत्कालीन अज्ञानान्धकार फैलाने वाले मनुष्य गुरुओं के पास नहीं था। अतः सन् 1965/66 से 68 के बीच ढेर-के-ढेर ब्राह्मण वत्सों की ज्ञान यज्ञ से अकालमृत्यु हो गई। इस तरह यज्ञ के अंदर एक बड़ा विनाश हो गया।

मम्मा-बाबा ने शरीर छोड़ा तो परमपिता शिव भी गुप्त हो गया। क्योंकि उनका टेम्परेरी रथ भी समाप्त हो गया और परमपिता के गुप्त होने से इन देहधारी धर्मगुरुओं का मनमाना द्वैतवादी शासन शुरू होता है और अनेक मतों रूप सिरों के रावण का राज्य शुरू होता है तो विकारी व्यभिचारी वृत्तियाँ यज्ञ के अन्दर आरम्भ हो जाती हैं; क्योंकि मम्मा के शरीर छोड़ने के बाद ब्रह्मा बाबा तो पुरुष तन है और पुरुष तन तो होते ही हैं दुर्योधन-दुःशासन। उनको एक स्त्रे है के धागे में बांधने करने वाली कोई ऐसी शक्ति नहीं रही और जिसने कंट्रोल किया वो कोई आसुरी व्यभिचारी संस्कारों की शक्ति कुर्सी पर आ गई जिसके कारण ब्रह्मा बाबा का चित्त डुलायमान हो गया। बाबा ने वाणी में ये कहा हुआ है कि "राजाएँ जब महाविकारी-व्यभिचारी शूद्र बनते हैं तो मन्दिर बनाते हैं। विकारी राजाएँ ही मन्दिर बनाते हैं, निर्विकारी देवतायें स्वर्ग में मंदिर-मस्जिद-गिरिजाघर नहीं बनाते।

(2) सोमनाथ-स्थापना :-

बाबा ने मुरली में कहा है-• "देवी-देवताएँ उलटे/ हिसक वाममार्ग में आते हैं तो सोमनाथ का मंदिर बनाते हैं।" (मु.19.8.73 पृ.1 मध्य) तो इस मूतपलीती संसार में पहला-2 एकमात्र सत्त्वप्रधान की यादगार मंदिर बना द्वापरयुग का सोमनाथ मंदिर।• "भक्तिमार्ग में सोमनाथ का मंदिर बनता है। सो भी कुछ समय बाद में (ऊँचे-ते-ऊँचे साकार की यादगार) बनता होगा, फिर पूजा शुरू होगी।" (मु.24.8.73 पृ.2 मध्य) जैसे 5000 वर्ष की ड्रामा की शूटिंग 40, 60 या 100 वर्षों में होती है। इसी तरह शूटिंग के 100 वर्ष दुनियाँ में यहाँ आधा+आधा ठन्डे-गरम स्वभाव का एक संवत्सर। जैसे ही बुद्धि की देवी मम्मा ने सन् 1965 में शरीर छोड़ा और सन् 1965 के बाद ही सन् 1966 में सर्वोत्तम हीरो की यादगार सोमनाथ मंदिर की स्थापना विकारी राजा विक्रमादित्य (ब्रह्मा) के द्वारा होती है।

द्वैतवादी द्वापरयुग में राजाएँ विकारी तो होते हैं। विकारी राजाओं को अपनी बुद्धि सरस्वती कन्या जैसी तो उतनी होती नहीं कि क्या करें, क्या न करें? यह दुःख पैदा क्यों हुआ? विकारी होते हैं तो दुःख पैदा होता है। तो उनको राय देने वाला कोई दूसरा श्रेष्ठता सनातनी चोटी का ब्राह्मण ही होता है। इसी प्रकार द्वापरयुगी बाद में आने वाले उन विकारी राजाओं को ज़रूर किसी ने उमंग दी है कि इस दुःख से तुम छुटकारा कैसे पा सकते हो। जैसे राजा विक्रमादित्य को किसी ने राय दी कि तुम निराकारी स्टेज बनाने वाले की उपासना करो, मंदिर बना करके उसकी पूजा करो, तो तुम्हारे मन को थोड़ी-2 अल्पकाल की शांति मिलेगी। तो पालड़ी सेवाकेन्द्र द्वापुरयुगी रजोप्रधान शूटिंग की अवस्था में स्थापन किया जाता है, अहमदाबाद में जो पुराना पालड़ी

सेवाकेंद्र था वो विक्रमादित्य की आत्मा ज्ञान चन्द्र ब्रह्मा ने मधुबन की धन-संपत्ति लगाकर खोला था। इससे पहले बाबा ने कभी भी स्वर्गीय शूटिंग में यज्ञ की सम्पत्ति से किसी सेवाकेन्द्र की स्थापना नहीं की थी। बाकी दूसरे जितने भी सेवाकेंद्र थे वो सब दूसरे-दूसरे संसारी (लौकिक) व्यक्तियों के निमित्त बनने के कारण खोले गए थे। उन व्यक्तियों ने बाबा को निमंत्रण दिया था कि हमारे यहाँ आ करके सेवाकेंद्र खोलो; हम सब व्यवस्था करेंगे। जिसके लिए बाबा ने 12.12.83 की अव्यक्त वाणी में कहा है- • "गुजरात में बापदादा ने सेन्टर खोला है। गुजरात ने नहीं खोला है। इसलिये न चाहते भी सहज ही सहयोग का फल निकलता ही रहेगा। आपको मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। धरनी (माता सोमनाथिनी पार्वती से) सहयोग के फल (किंग फ्लावर की खास बात है)।

इस तरह जो पा+लड़ी सेवाकेंद्र है वो सोमनाथ मंदिर साबित हो जाता है, जो द्वापरयुग के आदि में स्थापन किया जाता है और कलियुगादि की शूटिंग में विधर्मियों के द्वारा नेस्तनाबूत, नष्ट कर दिया जाता है। लूट लिया जाता है। पहले-2 मंदिर किसने बनाया? राजा विक्रमादित्य होगा तो उसकी पत्नी भी होगी। वे सतयुग में पहले-2 युगल थे जिन्होंने पहले-2 द्वापुर में पूजा की शुरूआत की। जो इब्राहिम वाली सोल आई उससे प्रभावित हो गए; ज़रूर खुद स्लामियों के व्यभिचारी वाममार्ग में गए हैं, इसलिए मंदिर बनाते हैं; क्योंकि मुरली में कहा है-• "जो (स्वर्ग में) सम्पूर्ण निर्विकारी होकर जाते हैं उनके (अंधश्रद्धायुक्त भक्तिमार्ग में) मंदिर बनाकर (दाढ़ी-मूँछ वाले ऋषि-मुनि साधु) विकारी लोग उनकी जाकर पूजा करते हैं।" (मु.16.10.73 पृ.1 आदि) नर से 16 कला सतयुगी कृष्ण, प्रिस बनने वाले ब्रह्मा की सोल राजा विक्रमादित्य ने पहले-2 पूजा शुरू की। • "पूजा भी पहले-2 तुमने शिव की की हैं। तब ही तो सोमनाथ का मंदिर बनाया है।" (मु.11.2.68 पृ.3 मध्य)

(3) जड़ चितों की प्रदर्शनी का भक्तिमार्गीय पॉम्प एण्ड शो:-

रावण-राज्य की शूटिंग का तीसरा प्रूफ ये है कि सोमनाथ मंदिर बनने के बाद यानी बेहद ड्रामा में द्वापरयुग शुरू होने के 300-400 वर्षों के बाद तक पहले ढेर-के-ढेर चित्र बनाये जाते हैं। यज्ञ के अंदर बाबा ने हमेशा यही डायरैक्शन दिया कि बच्चे इन चार चित्रों को छत इतना ऊँचा-2 बनाओ। मु.11.2.68 पृ.3 अंत में ये बात आई है कि बाबा तो कहते हैं छत जितनी बड़ी सीढ़ी बनाओ। ऐसे (बुद्धि-क्राइस्ट-नानक जैसे) ट्रान्सलाइट हो जो क्लीयर (फ़रिश्ता) दिखाई पड़े। तो मनुष्य देख वंडर खावें।" बड़े-2 चित्र बनाओ। इन चार चित्रों में सारा ज्ञान समाया हुआ है। जास्ती चित्र बनाने की दरकार नहीं है। जास्ती चित्र बनाने से टू मैनी क्वीन्स का पहाका हो जायेगा। यदि किसी राजा को बहुत रानियाँ होती हैं तो सारी बुद्धि उन रानियों में ही खप जाती है। वो शासनतंत्र क्या चलायेगा? ऐसे ही अनेक चित्रों में बुद्धि जाने से बुद्धि फिर विस्तार में चली जाती है। विस्तार में जाने वाली बुद्धि सार में नहीं टिकेगी। ऐसे ही यज्ञ में हुआ। बाबा ने बोला है- माया के मत पर ढेर-के-ढेर चित्र बनाये। • "बहुत चित्र होने से मनुष्यों का खयालात सारा चित्रों में ही चला जाता है।पहाका है न टू मैनी क्वीन्स....।" (मु.23.2.69 पृ.2 अंत) राम-राज्य की शूटिंग में ऐसे ढेरों चित्रों को बनाने की क्या दरकार थी? यहाँ तो गिने-चुने चार चित्र हैं- लक्ष्मी-नारायण, राम-सीता। इन चार चित्रों के आधार पर ही वहाँ स्वर्ग का सारा ठाठ-

बाट चलता है और यहाँ तो ढेर-के-ढेर चिल तैयार हो गए। मुरली में कहा है कि • चिल आदि जो भी बनाये हैं बेसमझी के। (मु.13.3.71 पृ.2 मध्य) बाबा ने बोला है- •"आसुरी मत पर अनेक ढेर-के-ढेर चिल बने हैं।" (मु.5.5.68 पृ.1 मध्य) माया का थोड़ा इशारा मिला और उन भक्तिमार्गीय रावण-राज्य के गुरुओं ने ढेर-के-ढेर छोटे-2 प्रदर्शनी के चिल खास मायावी नगरी के महाराष्ट्र में तैयार कर दिये। जैसे 2500 वर्ष की मायावी दुनियाँ में क्राइस्ट के आने के समय, आज से 2000 साल पहले आसुरी मत पर महाराष्ट्र साइड में अजन्ता-एलोरा, एलीफैन्टा, कन्हेरी आदि की गुफाओं में ढेर-के-ढेर सैंकड़ों, हजारों चिल तैयार किये गये थे।

ऐसे ही यज्ञ के अंदर भी द्वापरयुग के आदि में ही ढेर-के-ढेर चिल मम्मा के देहांत से- 3/4 वर्ष के बाद सन् 1969 तक ये चिल बनते रहते हैं। तो 300-400 वर्ष इज्ज इक्कल टू 3/4 वर्ष। यानी मम्मा के शरीर छोड़ने के 3,4 साल पूरे हो जाते हैं और यज्ञ के अंदर प्रदर्शनी के ढेर-के-ढेर चिल बन करके तैयार हो जाते हैं। कहाँ बनते हैं? वो ही महाराष्ट्र साइड में माया की नगरी बम्बई में और वो ही आत्मा निमित्त बनती है जो प्रदर्शन करने वाली क्राइस्ट की आधारमूर्त जीसिस कही जाती है, जिसके अंदर प्रदर्शन करने का माद्दा है। वरना भारतीय परम्परा ज्ञान और योग को प्रदर्शन करने वाली नहीं है। ये ज्ञान-योग को प्रदर्शित (एडवरटाइज़) करने की, दिखावा करने की परम्परा तो विदेशियों से आई। जबकि क्राइस्ट ने जन्म लिया था। श्रीमत के बरखिलाफ वो चिल भी तैयार हो गये। इसलिए बाबा ने मुरली में बोला है- •“प्रदर्शनी की राय बाबा ने थोड़े ही निकाली। यह रमेश बच्चे का इन्वेंशन है। फिर बाबा भी पास करेंगे।” (मु.13.6.72 पृ.2 अंत) बाद में फिर (बाबा ने) शरीर छोड़ दिया। पास करना धरा रह गया। मतलब बाबा ने कहा है कि भविष्य में मुकर्रर रथ द्वारा पास करेंगे। तो कोई-न-कोई रूप में बाबा तो पास करेंगे ही। जो चिल ठीक नहीं होंगे उनको कैंसिल कर देंगे। जो ठीक होंगे उनको पास कर देंगे; लेकिन ब्रह्मा बाबा ने अपने जीवनकाल में तो पास नहीं कर पाया। शरीर छोड़ गये। और राय बाबा ने नहीं दी। माने छोटे-2 ढेर-के-ढेर चिल तैयार करने की बाबा की श्रीमत नहीं थी। तो ज़रूर मन मत है। कोई माया रूपिणी की मत थी। माया को बेटी कहते हैं। मुरली में बोला है कि माया को क्या कहते हैं? बेटी। तो कोई माया बेटी की मत पर ये ढेर-के-ढेर चिल बनाये गये। ब्रह्मा बाबा का तो माँ का पार्ट था। अगर बच्चों से माँ, जो विधवा माँ हो गई हो और बच्चों से आँखें तरेर के बात करे तो बच्चे तो उसके ऊपर हावी हो जायेंगे। बाबा तो शुगर कोटेड वाणी बोलते थे। बाबा ने कहा कि ये ढेर चिलों की प्रदर्शनी तो रमेश बच्चे का इन्वेंशन है। तो बच्चे ने समझ लिया, आहा! बाबा हमको बहुत ऊँची स्टेज पे बैठाय रहे हैं। ये नहीं पता था कि हम श्रीमत का उल्लंघन कर रहे हैं। इस तरह वो ढेर-के-ढेर चिल रावण सम्रदाय के द्वारा तैयार कर लिए गये।

मम्मा अगर जीवित होती तो ढेर-के-ढेर चिल नहीं बनवाने देती। उनकी तो चार चिलों पर ही आस्था थी; लेकिन मम्मा जो ज्ञान की देवी थी वो चली गई। ब्रह्मा बाबा को तो उतना ज्ञान की गहराइयों का पता नहीं था। उनके अन्दर तो शिवबाबा बोलता था इसलिए वो ज्ञान सुनाते थे। जो देहधारी गुरु थे, उनमें से उस माया रावण ने किसी व्यक्ति को यह मत दी कि तुम ढेर-के-ढेर चिल बनाओ ताकि तुम्हारा मान-मर्तबा बढ़े और तुम्हारे आधार पर हमारा भी बढ़े।

(4) शास्त्र निर्माण:-

अजंता, एलोरा, एलिफेंटा, कन्हेरी आदि गुफाओं में चित्रों के आधार पर लगभग 3-4 सौ वर्ष बाद भक्तिमार्ग में ढेर-के-ढेर शास्त्र बनाए जाते हैं। मुरली में कहा है-• "ऐसे नहीं कि द्वापर से ही शास्त्र शुरू होते हैं। नहीं। बाद में बनते हैं। पहले तो चित्र बनते, फिर उनकी जीवन कहानी बनाते हैं। पहले चित्र बनावे, तब फिर शास्त्र बनावें। टाइम लगता है। दो/पाँच सौ वर्ष बाद में बैठ शास्त्र बनाए हैं।"(मु.9.8.64 पृ.3 अंत) बाबा ने बताया है कि 'बड़े-2 मोटे-2 वेद, ग्रंथ शास्त्र रचे गए। जैसे भक्तिमार्ग में बड़े-2 पुराण रचे गए। भागवत्, महाभारत महापुराण, योगवाशिष्ठ आदि। वैसे ही शूटिंग कालीन ब्राह्मणों की दुनिया में 'एक अद्भुत जीवनकहानी', 'महाभारत', 'योग की विधि' आदि मोटे-2 ग्रन्थ बनाए गए।

(5) गीता का भगवान्: 16 कलाबद्ध कृष्णचन्द्र

बाबा कहते हैं कि बड़े-ते-बड़ी भूल है गीता के भगवान की। सभी शास्त्रों में मुख्य शास्त्र है 'श्रीमद्भगवद्गीता।' मुरली में कहा है-• "भक्तिमार्ग में पहले सर्वशास्त्रमयी शिरोमणी गीता ही बनती है। गीता के साथ फिर भागवद्, महाभारत भी है। यह भक्ति भी बहुत समय के बाद शुरू होती है। आस्ते-2 मंदिर ठिकाने शास्त्र बनेंगे। 3/4 सौ वर्ष लग जाते हैं।"(मु.2.9.72 पृ.1 मध्य)

गीता में सबसे बड़ी भूल क्या कर दी? गीता ज्ञान दाता कौन है? निराकारी स्टेज वाला शिवबाबा है। उसकी जगह साकारी स्टेज वाले कृष्ण उर्फ़ ब्रह्मा, जिसका कोई भी फोटो आज तक बुद्ध-क्राइस्ट-नानकादि की जैसी निराकारी स्टेज का नहीं देखा जा सकता। जिसका निराकारी स्टेज का चित्र है ही नहीं, उस साकार अवस्था में रहने वाले का चित्र भागवत् में जैसे डाला गया वैसे ही श्रीमत् भगवत् गीता में भी डाला गया है।

हमारी भगवत् गीता है 'मुरली।' मम्मा के शरीर छोड़ने के बाद मुरलियों में लगातार 'पिताश्री' शब्द डाला जाने लगा। 'श्री' शब्द बाद में इसलिए लगा हुआ है कि ये बाद के अगले जन्म में श्रेष्ठ बनने वाला है। पिताश्री ब्रह्मा उनका नाम डाल दिया। गीता ज्ञान का बीजारोपण करने वाला कौन था? वास्तव में गीताज्ञान सुनाना शुरू किसने किया? ॐ मण्डली में शिवबाबा ने प्रजापिता के थ्रू। उस प्रजापिता का नाम-रूप सब गायब कर दिया। बाप की जगह ब्रह्मा बच्चे का नाम डाल दिया। रचयिता की जगह रचना का नाम डाल दिया→ 'पिताश्री' नाम ब्रह्मा का। ब्रह्मा तो रचना है। बाबा के समय की जो मुरलियाँ थीं, उनमें ऊपर किसी का नाम लिखा हुआ नहीं है। 'शिवबाबा याद है' ये लिखा हुआ है। अब जब से मम्मा ने शरीर छोड़ा तब से मौका लगते ही देहधारी धर्मगुरुओं ने बाबा की नज़रों से बचाकर 'शिवबाबा याद है' के पहले 'पिताश्री' शब्द जोड़ दिया- 'पिताश्री शिवबाबा' यानी पिताश्री शिवबाबा हो गया। परमात्मा की जगह उन्होंने पिताश्री का नाम डाल दिया। पिताश्री का नाम डालने से क्या हुआ कि वो सारी वाणी विनाशी ब्रह्मा की हो गई। ये बड़ी भारी भूल हो गई। राम बाप की जगह बच्चे, ब्रह्मा/कृष्ण का नाम डाल दिया।

रावण-राज्य के शुरू में दुनिया की सबसे बड़ी भूल यह हुई कि निराकारी स्टेज वाले शिव-शंकर भोलेनाथ रचयिता जगत्प्रिया की जगह बेहद में जन्म-मरण की शूटिंग 84 के चक्र में आने वाले देहधारी बच्चे 'श्रीकृष्ण' रूपी रचना का नाम-रूप संस्कृत की गीता में और उनके यादगार मंदिरों में भी डाल दिया गया।

इसका फाउंडेशन संगमयुग में तब पड़ना शुरू होता है जब 40 वर्ष की सतयुगी शूटिंग में सन् 1965 से सन् 1969 के बीच द्वापरयुगी शूटिंग के दौरान कृष्ण वाली आत्मा अर्थात् ब्रह्मा का नाम 'पिताश्री' सच्ची गीता (मुरलियों) के फ्रंट पेज पर 'शिवबाबा याद है' से पहले छापना आरम्भ कर दिया गया। इसका स्पष्ट अर्थ यह हुआ कि बाद में श्रेष्ठ बनने वाले पिता+श्री ब्रह्मा ही शिव के साकार रूप गीता का भगवान रचयिता हो गये, जबकि ब्रह्म+माँ तो जगत्पिता की पहली रचना रूपी बड़ी माता है। जो ब्रह्मा-वत्स खुद ही भूले हुये हैं वे दुनियावी धर्मगुरुओं की भूल कैसे सुधारेंगे? 'पहले घर का सुधार, फिर पर का सुधार।' मुरली में कहा है- • "जीवन कहानी में ही नाम बदल लिया है। बाप के बदले बच्चे का नाम डाल दिया है।" (मु.7.8.74 पृ.3 आदि) • "गीता में सिर्फ नाम बदल लिया है। संगम होने कारण यह भूल कर दी है।" (मु.8.7.73 पृ.2 मध्य)

(6) बाप की जीवनकथा श्रीमदभागवत में भी कृष्ण बच्चे का नाम:-

इसी प्रकार और-2 शास्त्र भी बने। जो श्रीमद् भागवत कथा है भक्तिमार्ग में उसमें 16000 रानियों को भगाने की कथा सुनायी गई है। जिस काम के आधार पर उसका नाम रखा गया- 'भागवत' ऐसे ही यहाँ संगम में भी एक मोटी पुस्तक देहधारी धर्मगुरुओं के द्वारा लिखी गई- 'एक अद्भुत जीवन कहानी', कहानी माना कथा। जैसे 16,000 गोपियों को भगाने का अद्भुत काम है ऐसे ही 300-400 रानियों को कैसे सिध-हैदराबाद से कराची तक भगाया गया- वो सरासर झूठी कहानी उस अद्भुत जीवन कहानी में दी हुई है; लेकिन उस श्रीमद् भागवत् कथा में जो असली भगाने वाला था निराकार परमपिता परमात्मा, निराकारी स्टेज वाला मूर्तिमान पीयू/प्रजापिता, उसका नाम तो गुम कर दिया गया और कृष्ण का नाम डाल दिया गया। रूप भी वही डाल दिया गया उसी कृष्ण उर्फ़ ब्रह्मा का। उस पुस्तक के अंदर पहले ही पृष्ठ पर कृष्ण की सोल ब्रह्मा का नाम-रूप डाल दिया गया। बाप की बायोग्राफी में बच्चे का नाम-रूप डाल दिया। ये संसार की एक ही सबसे भारी भूल हो गई।

ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में प्रकाशित 'एक अद्भुत जीवन कहानी' के प्रथम पृष्ठ पर कृष्ण वाली आत्मा अर्थात् ब्रह्मा का नाम और रूप 'पिताश्री' डाल दिया गया। गीता ज्ञान का बीजारोपण करने वाला कौन था? वास्तव में ॐ मण्डली में गीता ज्ञान सुनाना शुरू किसने किया? क्या सिध हैदराबाद में 300-400 कन्याओं-माताओं को भगाने का अद्भुत कार्य बूढ़े दादा लेखराज (पिताश्री) ने किया था या करन-करावनहार निराकारी सो साकारी शिव ने यह कार्य सम्पन्न किया था? शिवबाबा ने प्रजापिता के थ्रू यह कार्य सम्पन्न किया था; उस प्रजापिता का नाम-रूप सब गायब कर दिया। अद्भुत जीवन कहानी में जो कन्याओं-माताओं को भगाने का अद्भुत कर्म बताया गया है वो वास्तव में प्रजापिता राम बाप की कहानी है। मुरली में भी बाबा ने बोला हुआ है- • "भारत को पूरा कलंकित कर दिया है। इतनी रानियाँ थीं, उनको भगाया, मक्खन चुराया, इतने बच्चे थे। वास्तव में यह सभी हैं प्रजापिता ब्रह्मा की कहानी। उसके बदली कृष्ण (ब्रह्मा) को रख दिया है।" (मु.5.5.73 पृ.1 आदि, अंत)

• "मटकी फोड़ी, माखन खाया यह सब उसके लिए झूठ बोलते हैं।" (मु.23.8.68 पृ.3 आदि) ऐसे ही यहाँ यज्ञ के अन्दर भी नाम डाल दिया ब्रह्मा का और फोटो भी डाल दिया ब्रह्मा का। और लिखा हुआ है पिता श्री शिवबाबा। तो पुस्तक पढ़ने वाले की बुद्धि में छाप ये ही पड़ेगी कि भगवान के सारे कृत्य, जो सारे जादूगरी

चमत्कार हैं वो इस व्यक्ति ने किए हैं। जबकि ऐसा कुछ भी नहीं है। मुरली में कहा है- • लिमूर्ति भी दिखाते हैं। सिर्फ शिव को उड़ा दिया है, उनका विनाश कर दिया है। ठिक्कर-भित्तर में ठोक उनका लाश गुम कर दिया है। वह है तो आत्मा ही। खाती भी है, वह ज्ञान का सागर भी है। (मु.ता.10.9.73 पृ.1 मध्य)

(7) मोटे-2 शास्त्रों की शूटिंग का आडंबर:-

आगे यहाँ शास्त्र दिखाए गए हैं कि ढेर-के-ढेर शास्त्र बनाए जाते हैं। जैसे भक्तिमार्ग में बनाया गया 'योग वाशिष्ठ' मोटे-2 दो वॉल्यूम हैं। उनमें राम और वशिष्ठ के बीच में दुनियाभर की कथा-कहानियाँ ले करके संवाद लिखे गए और नाम रखा योग वाशिष्ठ। उस मोटी-सी पुस्तक को पढ़कर आत्मा विस्तार में जाएगी या सार बिन्दु में टिकेगी? विस्तार में ही चली जाएगी। इतनी मोटी पुस्तक, नाम है योग वशिष्ठ और उसको पढ़ने से बुद्धि एकदम सारी दुनियाँ की कथा कहानियों में बिखर जाएगी। तो योग वशिष्ठ हुआ या योग भ्रष्ट हुआ? जैसे वहाँ भक्तिमार्ग में योग वशिष्ठ मोटा-2 ग्रंथ शास्त्र तैयार कर दिया, वैसे ही ब्राह्मणों की संगमयुगी शूटिंग की दुनियाँ में इन देहधारी धर्मगुरुओं के द्वारा कोई दो नं. के व्यासजी महाराज ने एक पुस्तक लिखी-'योग की विधि और सिद्धि' और उस मोटी-सी योग की विधि और सिद्धि पुस्तक में ढेर-के-ढेर पतंजल योग-सूल, कपिलमुनि का सांख्य दर्शन, बड़े-2 और भी देहधारी गुरु जिनके योग के झूठे अनुभव उसमें लिख दिए गए। अपनी मनमत भी उसमें मिक्स की गई और बाबा की मुरलियों की भी कुछ बातें अपने तरीके से जैसे समझी वैसे मिक्स कर दी गई। मतलब किचड़ा इकट्ठा करके उसे पैसे कमाने और नाम कमाने का साधन बनाकर काम में लाया गया। इस प्रकार भक्तिमार्गीय रावण-राज्य के गुरुओं ने ऐसी ही अनेक शास्त्रों की शूटिंग का आडम्बर बना दिया। तो ऐसे-ऐसे लिट्रेचर इन भक्त लोगों ने संगम में छपाए और अभी भी छपाते जा रहे हैं।

इन्हीं ग्रन्थों के बीच जैसे एक और पुस्तक है- 'विश्व का भविष्य।' जैसे भक्तिमार्ग में लिखा गया-'भविष्य पुराण।' अब उस विश्व के भविष्य को क्या करें जिसमें न ये बात बताई गई कि कृष्ण सतयुग में कब पैदा होगा, टोटल नई दुनिया कब आएगी, पुरानी दुनियाँ का विनाश के वास्तविक वर्ष कौन-से होंगे? तो जो मुख्य-2 बातें हैं विश्व के भविष्य की वो तो बताई नहीं गई। बताई भी तो वो ही देहधारी धर्मगुरुओं के आधार पर गढ़ी गई थीं। सूरदास का एक पद दे दिया - "संवत् 2000 के पीछे ऐसो जोग परे, उत्तर-दक्षिण-पूरब-पश्चिम चहुँ दिस काल फिरे।" ऐसी-2 बातें उसमें इकट्ठी करके और लिख दिया गया- विश्व का भविष्य। अरे, बाबा ने तो विनाश की घोषणा मुरली में सन् 1976 में की थी। तुमने संवत् 2000 के पीछे ऐसे युग पर क्यों लिख दिया? देहधारी धर्मगुरुओं से प्रभावित हो कर। इस तालमेल का उस बेचारों को पता ही नहीं। तो वो विश्व का भविष्य ऐसे ही बन करके रह गया जैसे भक्तिमार्ग में भविष्य पुराण बन करके रह गया। उसमें सब मनोकल्पित राजाओं के नाम दिए और राजाओं की जो कलियुग के अंत तक लम्बी वंशावली दिखाई गई है, वो सारी झूठी साबित हो गई। ऐसे-2 ढेर-के-ढेर झूठे-2 वेद, शास्त्र, ग्रंथ उन व्यास जैसे महर्षियों के द्वारा लिखे जाते हैं, जो भगवान बन करके बैठते हैं। इसका मतलब ये हुआ कि वो 'विश्व का भविष्य' वास्तव में भक्तिमार्ग की ही तरह पैसे और सम्मान कमाने का एक साधन बन गया।

मुरलियों में बाबा ने डायरैक्शन दिया कि बच्चे छोटी-2 पुस्तकें छपाओ। आजकल लोगों के पास इतना टाइम नहीं है जो तुम्हारी विस्तार की बातों में जाएँ। ता.12.2.69 पृ.1 के अंत की मुरली में कहा है - • "भक्तिमार्ग में आधा कल्प से लेकर किसम-किसम के शास्त्र पढ़ते आए हैं। तुम यह छोटी किताब आदि छपाते हो मनुष्यों को समझाने लिए" मुरली में ये भी कहा है-• "दिन-प्रतिदिन बड़े किताब बनाते जाते हैं। कितनी बायोग्राफी बनाते जाते हैं!" (मु.24.5.64 पृ.1 मध्यांत) बाबा मम्मा जब तक जीवित रहे तब तक छोटी-2 पुस्तकें छपायी जाती रहीं। जैसे ही उन्होंने शरीर छोड़ा, उन देहधारी धर्मगुरुओं ने जो लोकेषण से प्रभावित थे, लोगों में हमारा मान-सम्मान हो जाए अथवा धनेषण से प्रभावित थे कि धन खूब अर्जन कर लें, ताकि ब्राह्मणों की दुनियाँ में हमारा नाम रोशन हो, ब्राह्मणों की दुनियाँ में रुतबा बना रहे, उन लोकेषण और धनेषण के पुजारियों ने खूब मोटी-2 पुस्तकें छपा दीं। जबकि श्रीमत् भगवत् गीता में कहा है-

यावानर्थ उदपाने सर्वतः सम्प्लुतोदके ।

तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः ॥ 2/46

सर्वतः (चारों ओर से) संप्लुतोदके (लबालब भरे हुए बड़े मानसरोवर के) {होने पर} यावान् (जितना) अर्थः (प्रयोजन) उदपाने (पोखरे में रह जाता है), तावान् (उतना) {ही प्रयोजन} विजानतः (विशेष ज्ञानवान्) ब्राह्मणस्य (ब्रह्मा-वत्स का) सर्वेषु वेदेषु (सब वेदों ब्रह्म वाक्यों रूपी मुरलियों में रह जाता है) अर्थात् साक्षात् भगवान् द्वारा सत्य ज्ञान मानसरोवर = गीता ज्ञानामृत मिल जाने से वेद-शास्त्र आदि पढ़ने की कोई ज़रूरत नहीं रहती।

(8) व्यभिचारी पूजा की शुरूआत:-

ऐसे ही यहाँ सीढ़ी के मध्य में दिखाया गया है कि शास्त्रों के आधार पर फिर भक्तिमार्ग में बड़े-बड़े मन्दिर बनाए गए और उन बड़े-बड़े मन्दिरों में पहले-पहले तो एक अव्यभिचारी निराकार परमब्रह्म परमेश्वर परमपिता परमात्मा की यादगार एकलिंग शिव की पूजा, उपासना ही होती थी जिसके लिए बाबा ने मुरली में कहा है-• "पूजा भी पहले शुरू होती है अव्यभिचारी। पहले शिव की ही पूजा करते थे। उसके ही मंदिर बनाते थे, फिर ल.ना. के बनावेंगे।... फिर राम-सीता के मंदिर बनाने लग पड़ेंगे। फिर कलियुग में देखो- गणेश, हनुमान, चण्डिका देवी आदि-2 का, अनेकानेक देवियों आदि के चित्र बनाते रहते हैं।" (मु.9.2.71 पृ.2 आदि)

हमारे यज्ञ में भी इसकी शूटिंग हो रही थी। मम्मा-बाबा जब तक जीवित थे मेडिटेशन हॉल में सिर्फ एक शिवबाबा का चित्र शिवलिंग ही लगाया जाता था। मम्मा-बाबा के रहते स्वर्गीय शूटिंग में हरेक सेवाकेंद्र पर याद करने के लिए सामने की ओर शिवबाबा का ट्रांसलाइट का चित्र ही लगाया जाता था। दूसरा कोई चित्र स्मरणार्थ, महिमार्थ, दर्शनार्थ नहीं लगाया जाता था; क्योंकि चित्र तो लगाया ही जाता है महिमा करने के लिए, स्मरण करने के लिए, दर्शन करने के लिए ताकि याद आता रहे; लेकिन मध्य द्वापरयुग में आते-2 साकार देवी-देवताओं के चित्र बनने लगे, मूर्तियाँ बनने लगी और उनकी मंदिरों में स्थापना होने लगी, ढेरों भगवान माने जाने लगे। ऐसे ही यज्ञ के अन्दर हुआ। जब तक मम्मा-बाबा जीवित रहे तब तक क्लास रूम के अन्दर सिर्फ

शिव ज्योतिबिदु का फोटो लगाया जाता था बाद में मम्मा-बाबा-दीदी-दादी और दादायें भी जैसे भगवान बनकर बैठ गए।

मुरली में बताया है- 'पूजा उनकी होती है, जिन्होंने याद में रह करके कर्मइन्ड्रियों से पवित्र कर्म किए हैं। अ.वाणी में बाबा ने बताया है- •"जो हृर कर्म में कर्मयोगी बनता है, उसकी पूजा भी हर कर्म की होती है। (अ.वा.30.11.92 पृ.108 अंत) •"जो कर्म याद में रहकर करते हैं वह कर्म यादगार बन जाते हैं।" (अ.वा. 28. 06. 73 पृ. 117 मध्यादि)

देवताओं की हर कर्मेन्द्रिय का पूजन दिखाया जाता है- कमल नयन कहते हैं, हस्त कमल कहते हैं; लेकिन शिव की हर कर्मेन्द्रिय का पूजन नहीं है। विशेष रूप से लिंग पूजन का महत्व है। तो उस एक की ही पूजा होनी चाहिए। शिवबाबा ने ही देहभानियों को निराकारी बनाया है। आत्माओं को क्या निराकारी बनाया जाएगा? आत्माएँ तो होती ही हैं बिन्दु। आत्माएँ जो शरीरधारी थीं, जीवात्माएँ थीं, जो देहअभिमानी मनुष्य थे, उनको आत्माभिमानी बनाया। जो इन्द्रियों की स्मृति की रग पड़ी हुई थी वो छुड़वाई। हम आत्मा हैं, शरीर का भान छूट गया। तो जिसने निराकारी स्टेज में रहने वाला बनाया उसकी पूजा पहले होती है और फिर जो उस स्टेज में टिकने वाले नम्बरवार दूसरे देवताएँ निकले उनकी बाद में व्यभिचारी पूजा होने लगी। लक्ष्मी-नारायण पहले देवता तैयार हुए जिनकी देवों में पहले पूजा होती है। गीता में भी आया है:-

यान्ति देवव्रता देवान्पितृन्यान्ति पितृव्रताः ।

भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपि माम् ॥ 9/25

देवव्रताः (देवताओं के भक्त) देवान् (देवताओं को) यान्ति (पाते हैं), पितृव्रताः (पितृभक्त) पितृन् (पितरों-{माँ-बाप} को) यान्ति (पाते हैं), भूतेज्याः (भूतों के पुजारी) भूतानि (भूतों को) यान्ति (पाते हैं और) मद्याजिनः (मेरे में {तन-मन-धन} यजन करने वाले) मां अपि यान्ति (मेरे ईशित्व राजाई भाव को ही पाते हैं)।

(9) युगल देवताओं की उपासना :-

ऐसे ही संगमयुग में यज्ञ के अंदर मम्मा-बाबा के शरीर छोड़ने के बाद पहले लिंग का एक बड़ा ट्रान्सलाइट का चित्र लगा दिया गया और बाद में मम्मा-बाबा दोनों नीचे चित्रों में चित्रित किये जाने लगे। हेड ऑफिस में भी - ऊपर निराकार ओर नीचे मम्मा-बाबा के साकार चित्र। 'यथा राजा तथा प्रजा' के नियमानुसार सभी सेवाकेंद्रों में मम्मा-बाबा के इन युगलमूर्त जड़चित्रों की स्थापना हो गई। जबकि खास देहरूपी जड़मूर्ति से बुद्धियोग तुड़वाने के लिए अवतरित शिवबाबा ने मुरलियों में यह सरक्त डायरैक्शन दिया है-•"इस ब्रह्मा के पास तो कुछ भी नहीं है। इनका चित्र रखने की भी दरकार नहीं।" (मु.27.2.70 पृ.2 आदि) बाबा ने मुरली में भक्तिमार्ग की निशानी बताते हुये कहा है-•"भक्तिमार्ग में मनुष्यों की बुद्धि में अनेकों की याद आती है। शिव के (सच्चे-2) मंदिर में जाओ तो वहाँ और भी ढेर चित्र रखे हुए होंगे। तो व्यभिचारी ठहरे ना। सभी के आगे सिर झुकाते रहते हैं। (यहाँ मम्मा-बाबा-दीदी-दादी आदि देहधारी) गुरुओं की भी मूर्ति बनाकर रखते हैं।" (मु.29.2.68 पृ.2 मध्य) इस तरह भक्तिमार्गीय रावण-राज्य की व्यभिचारी शूटिंग की शुरूआत हो गई। जैसे भक्तिमार्ग में देहधारी देवताओं के चित्र पहले-2 बने। मन्दिरों में उन्होंने देहधारी देवताओं को भी चित्रित कर दिया, मूर्तियाँ

बना दीं और उनकी व्यभिचारी पूजा होने लगी। शंकर-पार्वती की पूजा, लक्ष्मी-नारायण की पूजा। ऐसे ही हमारे यज्ञ में हो गया। एक शिवबाबा में बुद्धि न लगाय के तीन आत्माओं में बुद्धि लगा दी। तो व्यभिचारी याद हुई या अव्यभिचारी याद हुई? याद व्यभिचारी हो गई। इन देहधारी धर्मगुरुओं का भक्तिमार्ग में ये करिश्मा है।

ये ममा-बाबा की उपासना करने वाली प्रवृत्ति मार्ग की उपासना तो है, वही यहाँ दिखाई गई है और जो उपासना करने वाले हैं, वे भी प्रवृत्तिमार्ग वाले हैं, इसलिए उन प्रवृत्तिमार्ग वाले गृहस्थियों को जिम्मेवारी का ताज भी दिखाया गया है।

(10) बाद में सिगल देवताओं की भी व्यभिचारी पूजा:-

उसके बाद दुनियाँ में और पतन हुआ, इधर ब्राह्मणों की दुनियाँ में भी जो प्रवृत्तिमार्ग की उपासना थी उसका भी खण्डन कर दिया गया। ब्राह्मणों की दुनियाँ में पहले-2 जो 16 कला सम्पूर्ण देवताओं की युगल पूजा होती थी, उसको फिर सिगल बना दिया।

जैसे-युगल अगर जा रहे हैं, तो युगल में किसी की दृष्टि-वृत्ति इतनी नहीं जाएगी; लेकिन अगर सिगल जा रहा है तो जो एण्टीसेक्स वाले मेल या फिमेल की वृत्ति जा सकती है। इस व्यभिचार की चोरी के लिए मौका मिल सकता है। जैसे-रावण ने भी सीता को पहले युगल से सिगल बनाया। तो यहाँ भी वही रावण सम्प्रदाय के देहधारी धर्मगुरुओं ने मेडिटेशन हॉल में से ममा का चित्र हटाय दिया। उसे सौतिया डाह कहो, कुछ भी कहो। ममा को उन्होंने पसंद नहीं किया; क्योंकि यज्ञ में शासन तंत्र फीमेल्स का रहा या मेल्स का रहा? शासन तंत्र तो दीदी फीमेल के हाथ में आ गया। भल बाबा ने ममा ने शरीर छोड़ दिया। तो उस फीमेल ने ममा के चित्र को देखना पसंद नहीं किया। सौतिया डाह होता है न? वही अकेली कृष्ण कन्हैया की बनके रहेगी? क्या मैं नहीं बन सकती कृष्ण कन्हैया की राधा? तो ममा का चित्र हटा दिया। अकेले कृष्ण कन्हैया उर्फ़ बाबा का चित्र यानी ब्रह्मा बाबा का चित्र मेडिटेशन हॉल में लगाया। ऐसे तो दोनों परम्पराएँ साथ-2 भी चली। कई सेवाकेन्द्रों में लक्ष्मी-नारायण के चित्र यानी ममा-बाबा के चित्र भी रहे और जो दाढ़ी की सिगल पूजा से विशेष प्रभावित हुए, उन्होंने तो खास ममा के चित्र को हटा करके ऊपर निराकार और नीचे ब्रह्मा बाबा का चित्र लगा दिया।

इस तरह और ही ज्यादा व्यभिचारी मनसा बनने से स्त्री वर्ग ने विशेष रूप से कृष्ण की पूजा करना शुरू कर दी। ऐसे तो नरक में काम वासना सबके अन्दर समाई हुई ही है। स्त्री को पुरुष तन अच्छा लगता है तो उन्होंने, सिगल कृष्ण की पूजा शुरू की और पुरुषों ने अपनी मानसिक वासना पूर्ति के लिए अकेली देवी की पूजा शुरू कर दी। पूजा में भी इस तरह का व्यभिचार होने लगा। ऐसी जो तमोप्रधान पूजा है उसमें जैसे इस बात की बास आती है कि सिगल पूजा क्यों? देवी-देवताएँ तो प्रवृत्तिमार्ग वाले थे। परमात्मा ने प्रवृत्तिमार्ग स्थापन किया। फिर सिगल की पूजा क्यों शुरू कर दी? कृष्ण के साथ राधा क्यों नहीं? तो यहाँ दिखाया गया है कि रावण की वृत्ति क्या होती है? रावण सिगल देखना चाहता है। अकेला करेगा तो उसका काम बनेगा और राम-सीता दोनों साथ होंगे तो उसका काम सहज बनने वाला नहीं। इसलिए वो पंचवटी से राम को भगाने की चालबाजी करता है।

जैसे द्वापर के मध्यांत तक सिगल देवता कृष्ण की उपासना का आरम्भ हो गया ठीक वैसे ही हमारे स्त्रीबहुल यज्ञ में पुरुष चोले वाले ब्रह्मा की उपासना अधिक होने लगी। प्रत्येक सेवाकेंद्र से ममा का चित्र या तो हटा दिया गया या बहुत छोटे साइज में इधर-उधर रख दिया गया; क्योंकि युगलमूर्त देवताओं की अपेक्षा विपरीत लिंग वाली अकेली मूर्ति देह-अभिमानियों को अधिक आकर्षित करती है।

तो यहाँ सीढ़ी में द्वापर के मध्यांत में भी ये बात दिखाई गई है कि जिन विधर्मियों का इण्टेन्शन नर्क बनाने का होगा वो सिगल की उपासना करने वाला होगा। युगलमूर्त की उपासना नहीं करेगा। जैसे देवी पूजा। द्वापर के मध्यांत में पहुँचते-2 सिर्फ़ सिगल कृष्ण की ही पूजा नहीं होती। सिगल देवियों की भी उपासना पुरुषों के द्वारा शुरू हो जाती है। इसलिए बाबा ने मुरली में बोला है कि देवी की उपासना करने वाले हैं (पुरुष) रावण सम्प्रदाय। अरे, तुम सिगल देवी की पूजा क्यों करते हो? उसकी अकेली की मूर्ति बना करके क्यों रखते हो? देवी है तो उसके साथ कोई देवता भी तो होगा। माता है, जय माता दी। और जय पिताजी कहाँ गए? (किसी ने कहा- माताएँ पवित्र रहीं असली।) माताएँ पवित्र रहीं तो पिता को उठा के कहीं नर्क में भेज दिया? अरे, साथ रहके पवित्र रहीं उस पवित्रता का गायन है कि अकेले रह करके पवित्र रहीं उनकी पवित्रता का गायन है? कोई तो ऐसे होंगे जो 16 कला सम्पूर्ण देवता भी बनेंगे नम्बरवार। ये तो निश्चित है। जहाँ अपवित्रता वाली बात आ जाती है उसमें लड़ाई लड़ने के लिए सबसे पहले पुरुष वर्ग ही खड़ा होता है। यज्ञ के आदि ॐ मण्डली में भी जो पहले-2 बड़े-2 घरानों के पुरुष चले थे, वे सब विरोधी हो गए। बाबा ने मुरली में बताये हुए हैं। ऐसे ही एडवांस पार्टी की जब शुरूआत हुई, तो जो बड़े-2, अच्छे-2 दिल्ली के अंदर महारथी पुरुष वर्ग थे, वो सब धराशायी हो गए, सब विरोधी हो गए। थोड़ी-सी माताएँ जा करके बच्चीं वे सब बांधेली हो गईं। जैसे सिध हैदराबाद में बांधेली हो गई थीं। जो आदि ॐ मण्डली में हुआ सो अंत में एडवांस में भी हुआ।

यही कमजोरी है कि सिगल उपासना करने वाले स्वर्ग की जिम्मेवारी का ताज धारण नहीं कर सकते; क्योंकि जो रावण होगा वो सीता को अकेला करेगा। इसका मतलब उसकी नीयत में तो खोट है ना? नीयत में खोट होने के कारण वह नारकीय वेश्यालय बनाना चाहता है। वह पवित्र स्वर्ग की स्थापना नहीं करना चाहता है। ऐसे ब्राह्मण परिवार में जन्म ले करके भी नर्क ही बनाएँगे। स्वर्ग नहीं बना सकते। इसलिए ऐसे भक्तों को ज़िम्मेवारी का ताज धारण किया हुआ नहीं दिखाया गया है और जो कनवर्टिड स्वभावी आत्माएँ स्वर्ग की ज़िम्मेवारी का ताज धारण नहीं करती वे फिर द्वापर और कलियुग में आकर ताजधारी राजाएँ भी नहीं बन सकतीं। उन्होंने संगमयुग में भी पवित्रता का ताज धारण करने के नियमों का उल्लंघन किया था और अपने अनुगामियों से भी कराया था। स्वर्ग की स्थापना वही कर सकेंगे, जो देवी-देवताओं दोनों को मानने वाले हैं, प्रवृत्ति को मानने वाले हैं। इसलिए बाबा ने उन्हें मुरली में सीढ़ी के चित्र में चिलित दैत्य कहा है- •"कनिष्ठ हैं दैत्य। कनिष्ठ मनुष्य बैठ उत्तम मनुष्यों की महिमा गाते हैं। मंदिर बनाकर ताज वालों को बिगर ताज वाले नमन करते हैं। सीढ़ी में शायद कुछ ऐसा है चित्र।"(मु.7.3.74 पृ.2 आदि)

तात्पर्य यह है कि जो युगल देवताओं की उपासना करने वाले हैं, उनको जिम्मेवारी का ताज दिखाया गया है। वो प्रवृत्ति मार्ग के पोषक हैं। इसलिए पवित्र प्रवृत्ति मार्ग के घर-गृहस्थ में रहने वाले हैं, वो ही स्वर्ग की स्थापना कर सकते हैं। निवृत्ति मार्ग वाले घर-घाट छोड़ने वाले संन्यासी स्वर्ग की स्थापना नहीं कर सकते।

(11) कम कला वाले देवताओं की पूजा-

प्रवृत्तिमार्ग की उपासना में भी अन्तर है। सीढ़ी में ल.ना. और कृष्ण वगैरह ये तो फिर भी 16 कला सम्पूर्ण देवता थे; लेकिन बाद में ऐसे देवताओं की उपासना होने लगी, जो कम कलाओं वाले थे, फेलियर्स थे।

सतयुग में पहली पीढ़ी के अलावा जितने भी बाद वाले नारायण हैं दूसरी गद्दी से ले करके लास्ट गद्दी तक, वो सारे ही कम कलाओं वाले हैं, सब फेलियर हैं, सब कृष्ण चन्द्रवंशी हैं। ऐसे कम कलाओं वाले जो नारायण बनने वाली आत्माएँ हैं उनको भी सेवाकेंद्र रूपी मंदिरों में सरेंडर कराके बैठा दिया गया और उनकी ऐसे पूजा हो रही है जैसे अर्धनारीश्वर भगवान-भगवती। भक्तों के लिए उनकी मनमत भगवान की श्रीमत है और उनके महावाक्य भगवान के महावाक्य हैं। मुरली की तो बात ही नहीं मानेंगे; ऐसे राम-सीता की उपासना करने वाले भी यहाँ बैठे हुए हैं। वे सब कम कलाओं वाले जो फेलिअर चन्द्रवंशी नारायण हैं, वे सीढ़ी में दिखाए गए हैं; लेकिन ये कम-से-कम प्रवृत्ति मार्ग की तो उपासना है। चलो, कम कलाओं वालों की है। इसलिए उनको भी स्वर्ग में जिम्मेवारी का ताज दिखाया गया है।

(12) जानवरों की पूजा-

द्वापर का अंत होते-2 या द्वापरयुगी शूटिंग का अंत होते-2 हिसक जानवरों की दुनियाँ की कलियुगी शुरूआत होती है। कलह-क्लेश वाली मानवीय इतिहास की दुनियाँ। जानवरों का काम क्या होता है? लड़ाई-झगड़ा मारा-मारी करना। तो पापी कलियुग की शुरूआत होते ही सिगल देवताओं तक की तो गनिमत थी, राम सीता कम कलाओं वाले पूजनीय देवता तो हैं ही; परन्तु आगे जब कलियुग की शुरूआत हुई तो कलियुग की शूटिंग होते-होते हिसक खूंखार जानवर जैसे स्वभाव-संस्कार वाले जो राक्षस जैसे मनुष्य यज्ञ के अन्दर हैं, जानवर जैसे स्वभाव वाले आततारी और हिसक सिगल देव-मूर्तियों की पूजा करते हैं। मन्दिरों में, आश्रमों में स्थान बनाकर भगवान की तरह उनकी पूजा भी करते हैं और उनकी ही श्रीमत् को फॉलो करने लग पड़ते हैं।

वास्तव में हुनमान, गणेश का पार्ट बजाने वाली राम-कृष्ण की भी आत्माएँ हैं। महावीर जिसे कहते हैं, माना आदिवासी भीलों का आदिदेव वीर बाबा शंकर का पार्ट बजाने वाली आत्मा और गणेश का पार्ट बजाने वाली माता की पुजारी कृष्ण की आत्मा। वास्तव में वो महावीर हुनुमान, गणेशजी का पार्ट बजाने वाली आत्माएँ हैं।

हनुमान

ये 'हनुमान जी' दिखाए गये हैं। पूँछड़ी वाला हनुमान। हनुमान का काम क्या है? हनुमान का काम है रावण की लंका में पूँछ से आग लगाना, यह उनकी जानवरियत की निशानी दिखाई जाती है। पूँछ कहाँ दिखाई जाती है? कमर में। कमर में दिखाई गई है क्योंकि कामेन्द्रिय कमर में है। काम वासना से आविर्भूत ये अव्वल-दोयम नं.

आत्माएँ जो हैं, इनकी पूँछ बहुत लम्बी है। अर्थात् काले मुँह वाले बंदरों का M. आबू में देहअभिमान का दुम्ब सबसे बड़ा दिखाया गया।

ऐसे-2 जो हैं यज्ञ के अंदर भी हैं जिन्होंने अपनी काम विकार की पूँछ से सेंटर के सेंटर उखाड़ दिए। ऐसों को भी भक्तिमार्ग में सरेंडर कराके मंदिरों में देवता बना के बैठाय दिया गया और वो भगवान बन करके पूजा लेते हैं। बड़े-2 जो हेड्स हैं, देहधारी धर्मगुरु वो अच्छी तरह से जानते हैं कि हनुमान के क्या-2 कारनामे हैं? कैसे-2 इन्होंने पूँछड़ी से आग लगाई है; लेकिन फिर भी इनको भगवान बना करके सरेंडर कराए के बैठाया गया।

आज इनकी बात को ऐसे ही माना जा रहा है अर्थात् उनकी पूजा रोटी-बेटी से ऐसे ही होती है जैसे किसी दामाद या बहनोई की होती है भगवान बन करके बैठ गए; लेकिन निवृत्तिमार्ग के संन्यासियों जैसे सिगल भगवान।

गणेश

हनुमान के आगे दिखाया गया है - गणेश जी। इनकी काम विकार की निशानी पूँछ तो नहीं दिखाई गई है; लेकिन ऐसे भी नहीं कि इनकी पूँछ होती नहीं। पूँछ तो होती है थोड़ी-बहुत; लेकिन इनकी सूँड़ बहुत लंबी चौड़ी दिखाई गई है माना देहअभिमान की निशानी मुख में वाणी की चीत्कार दिखाई गई है। इनके सूँड में इतना देह-अभिमान भरा हुआ होता है कि ये अपने विरोध में किसी की कोई बात सहन नहीं कर सकते।

इनका शरीर हाथी की तरह लम्बा-चौड़ा दिखाया जाता है। शरीर को बड़ा दिखाने का मतलब देह-अभिमान बहुत है। हाथी की आँखों में जितना मद भरा रहता है इतना किसी दूसरे जानवर की आँखों में मद नहीं दिखाया जाता। हनुमान जी, जो मार पूँछड़ी से नहीं मार पाते वो मार ये अपनी सुरमाई दृष्टि और वृत्ति से मारते हैं। और वो मार ज्यादा ही घातक होती है।

कान बहुत बड़े-बड़े हैं यानी ज्ञान बहुत सुनते और सुनाते भी हैं। उनमें ज्ञान सिर्फ़ सुनने-सुनाने का मादूदा बहुत है। माथा भी चौड़ा है मतलब अक्ल भी तीखी है; लेकिन देह-अभिमान से बाज़ नहीं आ सकते। मुख से ज़रूर ऐसे वचन बोलेंगे या कोई ना कोई ऐसी आँख ज़रूर लड़ाएँगे जिससे अप्रत्यक्ष वायुमंडल खराब हो जाए। दूसरे की वृत्ति खराब हो जाए। इस तरह की जो देह-अभिमानी सूँड़ वाली आत्माएँ हैं, जिनके मुख में देहअभिमान है; परन्तु कमर में इतनी कोई निशानी नहीं दिखाई पड़ती, जितना मुख में दिखाई पड़ती है।

बाबा ने मुरली में कहा है कि कर्मेन्द्रियों से विकर्म नहीं होना चाहिए। आँख और मुख में जो इन्द्रियाँ हैं वह ज्ञानेन्द्रियाँ हैं; इसलिए वायब्रेशन भले अप्रत्यक्ष रूप से खराब हो; लेकिन उनका इतना विकर्म नहीं बनता। ज्ञानेन्द्रियों से पाप कर्म नहीं कहा। कर्मेन्द्रियों से विकर्म होता है उसका प्रत्यक्ष पाप कर्म बनता है। लेकिन ये बात शिवबाबा पहले बोलते थे। अब वो बात भी लागू नहीं होती। अब एडवांस ज्ञानमार्ग में अगर वायब्रेशन से भी श्रीमत की बरखिलाफी होती है और दृष्टि से अगर चंचलता बढ़ती है तो अभी दंड ज्यादा है; क्योंकि अभी तीव्रता से मंसा सेवा का टाइम चल रहा है। पहले बेसिक पढाई में मंसा सेवा का टाइम नहीं था सिर्फ़ वाचा और कर्मणा की भागदौड़ स्थूल चित्रों की प्रदर्शनी-प्रोजेक्टर या मेले-मलाखड़ों आदि की ही सेवा थी।

तो ऐसे जो गणेशजी महाराज हैं उनको भी यहाँ पवित्रता का छोटा-सा ताज दिखाया गया है; क्योंकि स्थूल कर्मन्द्रियों से ये पवित्र रहे; लेकिन अभी हैं यह भी सिगल। यज्ञ के अंदर जो बड़े-2 मुखिया शासक हैं। वे अच्छी तरह से जानते हैं कि इनकी दृष्टि-वृत्ति ठीक नहीं है। उनके मुख से भरी सभा में ऐसे वाक्य उच्चारण हो जाते हैं, जिनसे वायब्रेशन खराब हो जाए; लेकिन फिर भी उनको मंदिरों में निमित्त बना करके ऐसे सरेंडर कराके बैठा दिया गया है जैसे भगवान। ऐसे जानवरों की पूजा करने वाले जो बैठे हैं, वे भी ताजहीन सिगल संन्यासी ही दिखाए गए हैं, उन गणेश जी को फिर भी ज्ञान की जटायें, पवित्रता का ताज दिखाए हैं, यह तो पूरे ही घुटमुडे संन्यासी बैठे हुए हैं। इनके तो माथे के बाल भी उड़ गए। ताज तो दूर की बात। इनका तो माया पूरा ही माथा मूँड़ लेती है। माया ने बुद्धि रूपी माथा मूँड़ा हुआ है तब तो ऐसे जानवरों की पूजा करते हैं। जानवरों की पूजा करने का मतलब क्या? अपनी भारतीय परम्परा में मान्य किसको माना जाता है? जिसको अपनी बहन-बेटी देते हैं, उनको मान्य मानते हैं। जो मान्य पक्ष होता है उसकी हम पूजा करते हैं। मान्य मानते हैं और उससे उसी तरीके से आचरण करते हैं, सम्मान देते हैं। यहाँ यह जानवरों की पूजा करते हैं, इसका मतलब यह अपनी बहनें और बेटियाँ ऐसों की सुपुर्दग्गी में छोड़ देते हैं तो पूजा करना हुआ न, माथा टेकना हुआ। तो ऐसे जो खुद ही माथा टेकने वाले हैं वे क्या स्वर्ग स्थापन करेंगे! यह तो स्वर्ग को और ही उखाड़ेंगे।

गणेशजी तो शास्त्र लिखते थे। अच्छा, पूँछड़ी वाले हनुमान है वह पवित्रता की डींग हाँकते थे। मैं बहुत बड़ा ब्रह्मचारी हूँ। जैसे कोई आदमी हो, हो तो अपवित्र लेकिन प्योरिटी अखबार निकालने लग पड़े। तो दुनियाँ में पवित्रता की सबसे झूठी डींग मारने वाला तो वो ही हो गया जो अच्छे-से जमा हुआ सेण्टर भी उखाड़ के भाग खड़ा हो।

(अब) ये (तो) गणेश, हनुमान की पूजा की शूटिंग हो गई। बाबा ने मुरली में कहा है-• "दैवी गुणों वाले मनुष्य थे। अभी (संगम में) आसुरी गुणों वाले असुर या जानवर बनते हैं, और कोई फर्क नहीं है। पूँछ वाला वा सूँड़ वाला मनुष्य होता नहीं है। देवात्माओं की सिर्फ यह (जानवरियत की) निशानियाँ हैं।" (मु.15.12.68 पृ.2 अंत) श्रीमत् भगवत् गीता में भी आया है-

अन्तवत्तु फलं तेषां तद्वत्यत्प्रमेधसाम् ।

देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि ॥ 7/23

तेषां (उन) अल्पमेधसां (अल्पबुद्धि वाले, बेसमझ लोगों का) तु (तो) तत् (वह) फलं (फल) अन्तवत् (विनाशी) भवति (होता है; क्योंकि) देवयजः देवान् (कलाओं में बंधे {कनवर्टिड} (देवताओं को) यान्ति (पाते हैं) (और) मद्भक्ताः (मुझे भजने वाले) मां (मेरे कलातीत सूर्यवंशी पद को अर्थात् अर्धनारीश्वर शिव के भगवान्-भगवती स्वरूप को) अपि (ही) यान्ति (पाते हैं)।

(13) मनुष्य द्वारा मनुष्य की पूजा-

आगे ये दिखाया गया कि ये देहधारी धर्मगुरु इससे भी संतुष्ट नहीं हुए। उन्होंने फिर मनुष्य द्वारा मनुष्य की पूजा शुरू की। मनुष्य द्वारा मनुष्य की पूजा का मतलब शिवोऽहम्। हम ही सबकुछ हैं। हम ही शिव हैं। हम जो डायरैक्शन दें उस पर चलो और ये व्यभिचारी पूजा बनाने का मकसद यही था कि अनेकों की पूजा होगी तो

बाद में हमारी भी पूजा भगवान समझ करके होने लग पड़ेगी। यह गुरुजी महाराज बैठे हुए हैं। ऊपर से ले करके नीचे तक, एड़ी से लेकर चोटी तक रंगे हुए हैं। कोई तो ऊपर से कम रंगे हुए दिखाये हैं, नीचे से ज्यादा रंगे हुए हैं। इनका जो रंगीन या सफेद चोला है, इनके अंदर इस बात को साबित करता है कि ये ज्ञान की ऐसी रंगीली बातें सुनाते हैं कि कोई भी सीधा साधा व्यक्ति झट से सफेद कपड़े पहनने वाला ब्रह्माकुमार बन करके इनके सामने प्रस्तुत हो जाए। इतने ज्ञान सुनाने में ये पटु, चालाक हैं।

यहाँ सीढ़ी में परम भक्त ब्रह्माकुमार भी कैसा दिखाया? सिर्फ सफेद पोशा नहीं है, वरन् ब्रह्माकुमार भी है ऐसा जो गुरुजी के सामने हाथ जोड़ करके और माथा झुका करके नम्रचित्त हो करके बैठा हुआ है। भगवान शिव की वाणी के प्रति उसका ध्यान नहीं होगा, क्लास टीचर (अर्थात्) जो बहन निमित्त बनाई होगी उसके प्रति उसकी उतनी नम्रता नहीं होगी; गुरुजी जिधर चलाएँगे उस तरफ चलने की उसकी लगन जरूर होगी। उनके गुरु जी जब तक ज्ञान में चलेंगे तब तक वह भी ज्ञान में चलेगा और जिस दिन गुरु का कंटा कट जाएगा, ज्ञान में से टूट जावेंगे उस दिन वह चेलाजी भी ज्ञान में से टूट जाएगा। ऐसे-ऐसे गुरु-चेले हर आश्रम में देखने को मिल सकते हैं। ऐसे गुरु जी को अपना भाषण करने के लिए कोई गद्दी भले नहीं मिलती है। है तो वह जिज्ञासु की ही कैटागिरी, नीचे ही बैठते हैं, शिष्य ही हैं; लेकिन वह औरों के सामने हैं अच्छे खासे गुरु, जो ऐसे ब्रह्माकुमार बनाने में बड़े पटु हैं। सफेद पोशा ब्रह्माकुमार-कुमारी फट बना देंगे। खुद चाहे रंगीन कपड़े पहनते हों; लेकिन बी.के. ऐसा तैयार करेंगे जो ऊपर से नीचे तक एकदम टाइट सफेद पोशा, बढ़िया दिखावटी बी.के. होगा।

हर सेंटर्स में ऐसे जिज्ञासु और ऐसे गुरु जरूर देखने को मिलेंगे। बाबा की बात नहीं मानेंगे। मुरली सुनने से उनको प्यार नहीं होगा। टीचर की बातों से उनको कोई प्यार नहीं होगा। मम्मा-बाबा से उनको कोई प्यार भी नहीं होगा। जो गुरु उनको ज्ञान में खींच करके लाया है बस, वह गुरु ही उनके लिए भगवान हो जाता है। साधारण से साधारण ज्ञान-रंग से रंगा हुआ रंगीला मनुष्य-गुरु, जिसे कोई गद्दी कभी भी न भी मिली हो वह यदि किसी व्यक्ति को सफेद पोशा ब्रह्माकुमार बनाने में सफल हो जाता है तो वह भी भगवान की तरह अपनी पूजा करवाने में नहीं चूकता। यहाँ तक कि उस तथाकथित भगवान का वह पुजारी निमित्त बनी टीचर की ही नहीं, बल्कि अपने उस रंगीले गुरु की भेंट में सदगुरु शिवबाबा की मुरली रूपी महावाक्यों की भी खुलेआम अवहेलना कर जाता है।

सीढ़ी के पुराने चित्र में चित्रित इस तरह की 'व्यभिचारी भक्ति' की पराकाष्ठा वाला गुरु-चेले का चोली-दामन का साथ भी हर सेवाकेंद्रों में देखने को मिलेगा।

(14) पाँच तत्वों की पूजा-

गुरु पूजा, मनुष्य-मनुष्य की पूजा जब ज्यादा बढ़ती है तो पाँच तत्वों की पूजा का उग्र रूप भी धारण करती है। कलियुग मध्यान्त की शूटिंग में अग्नि, जल, जड़ वृक्ष, मिट्टी आदि जड़ तत्वों की पूजा दिखाई गई है। पाँच जड़ तत्वों को भी भगवान समझ करके उनकी पूजा होने लगती है। इस तरह पाँच तत्वों की ये पूजा पाँच भूतों की पूजा के समान है। 5 तत्वों के संघात प्रकृति का सर्वश्रेष्ठ नमूना मनुष्य का शरीर है। इन 5 तत्वों से बने जड़

शरीर रूपी मूर्ति की पूजा को बाबा ने भूत पूजा कहा है। मुरली में बाबा ने कहा है-• "पहले अव्यभिचारी भक्ति शुरू हुई। अभी कितनी व्यभिचारी भक्ति है। (जड़) शरीरों की भी पूजा करते। इनको भूत पूजा कहा जाता है। शरीर पांच भूतों का बना है।" (मु.25.7.76 पृ.2 मध्य) • "तुम जानते हो जो हमको ऐसा बनाते हैं उनकी पूजा होगी। फिर हमारी भी पूजा होगी नम्बरवार। फिर गिरते-2, 5 तत्वों की भी पूजा करने लग पड़ते हैं। शरीर 5 तत्वों का है ना। 5 तत्वों की पूजा करो या शरीर की करो बात एक ही हो जाती।" (मु.9.1.69 पृ.2 मध्य) गीता में भी आया है-

यजन्ते सात्त्विका देवान्यक्षरक्षांसि राजसाः ।

प्रेताभूतगणांश्वान्ये यजन्ते तामसा जनाः ॥ 17/4

सात्त्विका: (सत्त्वगुणी लोग) देवान् (देवताओं को), राजसा: (राजसी वृत्ति के लोग) यक्षरक्षांसि (यक्ष-राक्षसों को और) अन्ये (दूसरे) तामसा: (तामसी) जनाः (लोग) प्रेतान् (प्रेतों) च (और) भूतगणान् (सूक्ष्म {देहधारी} भूत समुदाय को) यजन्ते (पूजते अथवा याद करते हैं)।

पाँच तत्वों के शरीर की पूजा मतलब किसी व्यक्ति विशेष की पूजा या किसी गुरु विशेष की ही सेवा कहो - ये हैं तो देह की ही पूजा। किसी व्यक्ति विशेष की विशेष सेवा करना, खास खुट्टेबरदारी करना, सबको आत्मिक दृष्टि से न देखना। यह सिर्फ ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ही बात नहीं, जिस-जिस संस्था ने इस दैहिक पूजा का रूप पकड़ा है उसका रिजल्ट हुआ- पाँच तत्वों के शरीर की पूजा। जब उसमें देहधारियों की पूजा होने लग पड़ती है, तब एकदम पतन होना शुरू होता है। खास करके पुरुष वर्ग जब अपनी देह की पूजा लेना शुरू कर देते हैं तो पतन ज़रूर होता है। यज्ञ के अंदर हर सेवाकेंद्र में ये देह की पूजा खास करके कन्याएँ-माताएँ विशेष करने लग पड़ती हैं।

प्रायः करके गददीनशीन देहधारी धर्मगुरुओं द्वारा धार्मिक सेवाकेंद्रों रूपी मंदिर-मस्जिद-गिरजाघर-गुरुद्वारों में भोली-भाली कन्याओं माताओं को घर-गृहस्थ छुड़वाकर अधीन बनाई गई कन्याओं से देवदासियों जैसी यज्ञसेवा के नाम पर इस प्रकार की ज़ोर-ज़बरदस्ती वाली भूत प्रेतानी व्यक्तिगत पूजा कराई जाती है। यज्ञ की सामूहिक सेवा करना दूसरी बात है; परंतु किसी से व्यक्तिगत सेवा लेना या देना श्रीमत के विपरीत है। चाहे वह कपड़ा धोने, बर्तन माँजने, खाना बनाने या तेल मालिश करने आदि किसी भी प्रकार की व्यक्तिगत सेवा क्यों न हो।

देह की पूजा का मतलब है- जैसे-क्लास हो रहा है, क्लास होने के बाद सबको टोली बाँटी गई। चम्मच, कटोरियाँ, ग्लास वगैरह दिए गए। फिर उन्होंने डायरैक्शन दिया कि भाई उनको साफ करो तो कोई भगतजी महाराज ऐसे होते हैं, कटोरी वगैरह सब एक जगह पर इकट्ठी कर दीं, ले जाके रख दी और रफूचक्कर हो गए। हमको माँजने पड़ेंगे। भाग गए। कोई ऐसे होते हैं कि अपने जो गुरुजी महाराज होते हैं, दीदी-दादा वगैरह उनके तो साफ कर दिए और रोज़ ही साफ करते रहते हैं; लेकिन बाकी दूसरों के साफ करने से अलग हो गए। तो ये हुई देह पूजा।

भावना ये रहनी चाहिए कि ये तो बाबा के सभी बच्चे हैं, बाबा के बच्चों की हम सेवा कर रहे हैं माना ईश्वरीय सेवा कर रहे हैं। अगर किसी एक व्यक्ति विशेष की पूजा करते हैं, जैसे सेंटर्स पर अक्सर देखा जाता है, बड़े-2 गुरु हैं, आचार्य हैं, पीठाधीश-मठाधीश बैठे हुए हैं, उनके शरीर की तो खूब पूजा होगी, उनके कपड़े भी धोए जाते हैं, बर्तन भी धोए जाते हैं, उनके लिए बढ़िया-2 खाना भी बनाया जाता है और खास करके माताएँ ऐसा काम करती हैं। ऐसे तो जो असिस्टेंट बहनें, वो भी करती हैं। वो तो मजबूरी में कर रही हैं। हाँ, लेकिन अपने पड़ोस में अगर कोई ब्रह्माकुमार भूखों मर रहा हो तो उसको देखने भी नहीं जाएँगे।

टोली बाँटने के बाद जो बर्तन इकट्ठे हुए उन सब बर्तनों को अगर कोई जिज्ञासु धोने के लिए बैठ जाए तो वह हुई यज्ञ की सेवा; लेकिन कोई एक खास भाई या बहन के बर्तन साफ कर दें और बाकी दूसरों के साफ करने से इन्कार कर दें तो ये पाँच तत्वों की खास पूजा हुई। ब्राह्मणों की दुनियाँ में खास यहाँ दिखाया है ऐसी भूत-पूजा होने लग पड़ती है। भूत पूजा के संबंध में बाबा ने मुरली में कहा महावाक्य बोले हैं-• "कई हट्टी-कट्टी ब्राह्मणियाँ कपड़े भी धुलवाती हैं। बर्तन भी साफ करवाती हैं। वास्तव में उनको सभी कुछ अपने हाथ से करना है। तबीयत की बात अलग है। यहाँ सभी सुख ले लेंगे तो वहाँ (अब आने वाले संगमयुगी 21वें हीरे तुल्य सर्वश्रेष्ठ जन्म में) सुख गँवा देंगे। यहाँ ही नवाब बन जाती हैं।" (मु.26.10.76 पृ.3 अंत) गीता में भी आया है-

एतान्यपि तु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा फलानि च ।

कर्तव्यानीति मे पार्थ निश्चितं मतमुत्तमम् ॥ 18/6

पार्थ (हे पृथ्वीपति!) तु (कितु) एतानि (इन) कर्माणि (अलौकिक कर्मों को) अपि (भी) संगं (सांसारिक (आसक्ति) च (और) फलानि (फलों को) त्यक्त्वा (त्याग कर ही) कर्तव्यानि (करना चाहिए), इति (ऐसा) मे (मेरा) निश्चितं (निश्चित) उत्तमं मतम् (उत्तम मत है)। (यदि यहीं फल भोग लिया, तो परलोक में क्या प्राप्ति होगी !) • सर्विस से यहाँ सुख लेंगे तो वहाँ का सुख कम हो जावेगा। (मु.16.1.67 पृ.3 आदि)

"कोई-2 हेड ब्राह्मणियाँ यहाँ ही बड़ा आराम से रहती हैं। दास-दासियाँ रखती हैं। बिस्तरा बनाओ, चाय ले आओ, यह करो। उनको बाबा देह-अभिमानी समझते हैं। बाप कितना निरअहंकारी है। बच्चों को बड़ा म्यूजियम मिल जाता है तो बस हुकुम चलाने शुरू कर देते हैं। जैसे रानी होकर चलती हैं।" (मु.12.11.68 पृ.2 अंत) • "ऐसी भी बहुत ब्रह्माकुमारियाँ हैं जो भक्तिमार्ग बैठ सिखलाती हैं। जैसे साधु-संत करते हैं। कृष्ण की मूर्ति रख उनको माथा टेका। ब्रह्माकुमारियों के आगे भी माथा टेका। कुछ-न-कुछ आमदनी मिली। बैठकर खाते। कितनी सत्यानाश कर रही हैं। चढ़ने के बदली और ही गिरते हैं।" (मु.11.4.72 पृ.2 अंत)

(15) द्रौपदी की पुकार:-

ब्रह्माकुमारी आश्रम में श्रीमत के बरखिलाफ ऐसे बहुत से पुरुष सरेण्डर कर दिए गए हैं। जबकि बाबा ने किसी भी मुरली में ये नहीं कहा कि पुरुषों को गौशाला रूपी सेण्टर में रख दिया जाए। अरे! कृष्ण भगवान है तो कृष्ण गौपाल बनेगा कि बैलों को पालेगा? पुरुष जो हैं वे शक्तियों की सुरक्षा करें, धन कमाकर उनको दें, न कि और ही वहाँ बैठकर खाएँ।

ऐसी भूत पूजा का नमूना कोई सरेंडर्ड ब्रह्माकुमार के प्रति होने लग पड़ता है, ऐसे पुरुष वर्ग के प्रति माताएँ और कन्याएँ ऐसी 5 तत्वों की सेवा, उपासना करने लग पड़ती हैं। खास करके मालिश करना, कपड़े धोना, बर्तन मलना वगैरह-2। तब उस पूजा का जो घिनौना रूप है वह सामने ज़रूर आ जाता है। पुरुष जितने भी हैं सब दुर्योधन-दुःशासन बताए हैं। कोई भगवान नहीं हो सकता। क्योंकि भगवान भी प्रजापिता में प्रवेश करता है। वह प्रजापिता भी दुर्योधन-दुःशासन की लिस्ट में हो गया तो और कौन बचेगा? जब ऐसा घिनौना रूप सामने आ जाता है- दुर्योधन-दुःशासन द्रौपदी की लाज खींच रहे हैं और नीचे साफ-2 शब्दों में लिखा हुआ है 'हाय! शिवबाबा बचाओ।' बाबा ने मुरली में कहा है- • बाप कहते हैं- इस समय हरेक दुर्योधन और द्रौपदियाँ हैं। दुर्योधन, द्रौपदी को नंगन करते हैं। द्रौपदियाँ तो वास्तव में सभी ठहरीं। कुमारी अथवा माता सभी द्रौपदियाँ हैं। कीचक तो ढेर हैं जो पिछाड़ी पड़ते हैं। कीचक आदि की अभी की बात है। (मु.7.5.73 पृ.2 मध्य) • द्रौपदी पुकारती है कि बाबा हमको नंगन होने से बचाओ। हम पवित्र बनकर कृष्णपुरी में जाने चाहती हैं। कन्याएँ भी पुकारती हैं- माँ-बाप हमको तंग करते हैं, मारते हैं कि विकारी बनना ही होगा। (मु.1.5.72 पृ.2 मध्य) • द्रौपदी कोई एक थोड़े ही हैं। हजारों करोड़ों नंगन होती रहती हैं। सभी नहीं पुकारते हैं। जिनको बाप की डायरैक्शन मिलती है पावन बनने लिये उनको पतित होने तंग करते हैं तो पुकारती हैं। (मु.1.3.69 पृ.1 आदि)

ये 'हाय! शिवबाबा बचाओ' की गुहार ब्रह्माकुमारी लगाएगी कि कोई दुनियाँवी औरत लगाएगी? दुनियाँवी औरत तो जानती ही नहीं कि शिवबाबा क्या होता है। इस चिल में ये ऊपर से लेकर नीचे तक रावण सम्प्रदाय की भक्तिमार्ग की सारी सारी कथा-कहानी कलीयर कर दी। यहाँ जो चिल दुर्योधन-दुःशासन के रूप में दिखाया गया है, वह भी एड़ी से लेकर चोटी तक सफेदपोश ब्रह्माकुमार का दिखाया गया। ये जरूर कोई परमप्रसिद्ध ब्रह्माकुमार ही फोटोज में भी दिखाया गया होगा। टोपी, अचकन, चुड़ीदार, पाजामा। ज्ञानामृत के जो पुराने-2 चिल हैं, उनमें भी वो चिल अवश्य देखे जा सकते हैं। नम्बरवार ब्रह्माकुमार हैं।

चिल बनाया तो बुद्धिमानों की बुद्धि परमपिता परमात्मा ने बुद्धियोग से बनवाया। बाद में क्यों बनाया? साक्षात्कार से नहीं, बुद्धियोग से बनवाया; लेकिन बनाया गया तो रावण-राज्य की शूटिंग पूरी होने से पहले ही बनाया गया ना! परमपिता+परमात्मा ने बनवाया ना। जैसे परमात्मा ने शास्त्र पहले से ही बनवाय के रखे हैं। ड्रामा प्लैन अनुसार ऐसे कहो। ड्रामा में ये बात नूँधी हुई है।

ब्रह्माकुमार दिखाया गया व्हाइट ड्रेस, आजकल सन् 1976 के बाद सीढ़ी के चिल में ये ड्रेस नहीं दिखाते हैं। शर्म से उसने अपनी ड्रेस ही चेंज कर ली है। इस ज्ञान यज्ञ में कोई भी असुर का चेहरा छिपा नहीं रह सकता। ये ब्राह्मण परिवार एक शीशे का महल बन जाएगा। मुरली में बोला है कि इसमें कोई भी असुर अपने चेहरे को छिपाय नहीं सकेगा।

यहाँ जो चिल दिखाया गया है, उसमें ये भी दिखाया गया है कि दुःशासन जी महाराज हाथ में कटारी लिए हुए हैं। इसके बारे में मु. में कहा है-• तुम्हारे (एडवांस ज्ञान में) नं.वार में भी कोई तो बिल्कुल ही तुच्छ बुद्धि रह जाते हैं। तुम जानते हो कितने कपूत बच्चे हैं। P.B.K ब्रह्माकुमार कहलाने वाले भी कपूत हैं। उनसे

तो साधु लोग अच्छे हैं। पवित्र रहते हैं। समझू हैं। यहाँ तो ऐसे-ऐसे हैं जो पतित दुनियाँ वालों से भी बदतर हैं। (मु.1.10.73 पृ.3 अंत)

• कन्याएँ सर्विस पर जाती हैं तो कीचक (ब्रह्माकुमारी के) पिछाड़ी में पड़ते हैं। फिर लिखा है भीमसेन ने कीचकों को पकड़ा है। कीचक माना एकदम डर्टी ब्रूटस, जो पिछाड़ी पड़ते हैं। कीचक आदि की अभी की बात है। इस समय सभी द्रौपदियाँ, कीचक, दुर्योधन हैं। आसुरी सम्प्रदाय हैं। इसकी बहुत संभाल करते रहना है। अगर बाप के पास आये फिर कीचक बने तो पिता (पता) नहीं, धर्मराज बन क्या हाल करूँगा! (मु.7.5.73 पृ.2 मध्यांत) ये कोई स्थूल कटारी की बात नहीं है। बाबा तो कहते ही हैं काम कटारी की शुरूआत आँखों से भी होती है। आँख से ही कटारी पहले चलाई जाती है।

तो यज्ञ के अंदर देहधारी धर्मगुरुओं ने जो बाबा का कभी भी डायरैक्शन मुरली में नहीं रहा होगा कि-कच्ची, कम उम्र की कन्याएँ, कोमल कलियाँ संदली पर बैठकर जाति-2 के पुरुषों को दृष्टि का दान दें- इसको योग कहा जाता है, वही धंधा देहधारी धर्मगुरुओं ने व्यभिचार का पोषण करने के लिए शुरू कर दिया। जो भारत वर्ष की कन्याएँ, माताएँ, सीताएँ, सावित्री इस बात के लिए प्रसिद्ध हैं कि उन्होंने परपुरुष रावण की तरफ आँख उठाकर भी नहीं देखा। भले उसके वाटिका में राज्य में रही; लेकिन फिर भी आँख उठाकर भी नहीं देखा। उसी भारतवर्ष में इन देहधारी धर्मगुरुओं ने ये क्या योग के नाम पर रज-रज के वाचा, दृष्टि-इन्द्रिय& कामेन्द्रिय के भी भोग का प्रबंध कर रखा है।

इन देहधारी धर्मगुरुओं को यह पता नहीं है कि हम तो देहधारी धर्मगुरु हैं ही; लेकिन हमारा भी कोई बेहद का बाप इस सृष्टि पर पहले से ही मौजूद है। इसलिए बाबा मुरली में ठोक-ठोक के बोलते हैं- • बच्चे! तुम्हारा बाप आया है। तुम तो जैसे हो तैसे हो ही हो; लेकिन तुम बातों से ऐसे सुधरने वाले नहीं हो।

बाबा ने मुरली में तो नहीं कहा कि एक दूसरे को दृष्टि वृत्ति-वाचा और कर्मेन्द्रियों का दान देना यही योग है। शिवबाबा ब्रह्मा के तन में आ करके दृष्टि देते थे। दृष्टि लेने वाले ईश्वरीय भावना से लेते थे। तो परमात्मा की दृष्टि से तो सृष्टि सुधर सकती है। परमात्मा की जो इन्द्रियाँ हैं उन इन्द्रियों से जब मनुष्यों की इन्द्रियों का मेल होगा तो इन्द्रियों में सुधार आ सकता है; लेकिन मनुष्यों की चंचल दृष्टि पतित है या पावन? मनुष्य की दृष्टि तो खुद ही पतित है। दृष्टि सुधर जाए तो और क्या चाहिए! फिर तो और कुछ चाहिए ही नहीं। तो जिस मनुष्य की दृष्टि पतित है वह मनुष्य दृष्टि दे करके कैसे पावन बनाएगा?

ब्रह्मा भी देहधारी धर्मगुरु है। कोई भगवान नहीं। उसकी एकट का शिवबाबा जिम्मेवार है.... शिवबाबा क्यों एक-2 की भावना को बैठ करके चेक करें? जैसा करोगे वैसा पाओगे और ब्रह्मा को तो वैलिड है; क्योंकि उनके तन में भी शिवबाबा टेम्परेरी तो आता ही था। पुरुषों को ऐसे फीमेल्स के साथ बैठने को वैलिड है ही नहीं। यहाँ तो कन्याएँ, माताओं को शिवबाबा के बेहद ब्राह्मण परिवार संभालने लिए माता रूप में निमित्त बनाया जाता है।

केवल बोलने या समझने से बहन-बेटी नहीं हो जाती। समझने से बहन के अंदर शिवबाबा प्रवेश नहीं कर जाता। लिख करके भी दो बहन हैं; लेकिन उसमें शिवबाबा प्रवेश नहीं करेगा। गीता पाठशालाओं को तो

वैलिड कर दिया है। जो आपस में पति-पत्नि हों दोनों ज्ञान में चल रहे हैं, वो गीतापाठशाला चला सकते हैं। उनमें भी माता क्लास को कंट्रोल करे। वही अच्छी बात है। भाई नहीं। अगर भाई बैठता भी है तो युगल को साथ ले करके क्लास में बैठे। कहने का मतलब ये सब हुआ तो ये राँग हुआ, मुरली के बरखिलाफ़ हुआ। मुरली में तो बाबा ने कहा है- बाप ब्रह्मा में बैठ करके दृष्टि देते हैं। सकाश देते हैं। हम बच्चे तो ऐसा नहीं करेंगे। • बाबा कहते हैं- मैं एक-2 आत्मा को सकाश देता हूँ। सामने बैठ लाइट देते हैं। तुम तो ऐसे नहीं करेंगे। (मु.12.4.68 पृ.4 मध्य) यानी बच्चे ऐसा नहीं कर सकते। ब्रह्मा की आत्मा भी कोई दृष्टि देने वाली नहीं है। ब्रह्मा के अंदर भी दृष्टि देने वाला कौन है? शिवबाबा। ब्रह्मा की सोल भी उस समय याद करने वाली है या दृष्टि देने वाली है? याद करने वाली है।

तो इन देहधारी धर्मगुरुओं द्वारा बिलकुल धर्म की जगह अधर्म फैलाए दिया जाता है। ये जो अधर्म फैलाया जाता है, उसका मूल कारण है कि इनकी बुद्धि 2500 साल से ही विकारी बनी पड़ी है। ये कलाबद्ध कृष्ण सो कंस के कुसावे में अच्छी तरह से आ जाते हैं। इनकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। वरना यह स्वर्ग की बहुत श्रेष्ठ आत्माएँ हैं, अगर कंस इनको ना कोसे तो।

पुरुष स्त्री को और स्त्री जाति-जाति के पुरुषों को दृष्टि का लेन-देन करे। अरे! आँख भी तो एक इन्द्रिय है। इस इन्द्रिय का अनेकों गैरों के साथ लेन-देन करना क्या ये व्यभिचार नहीं हो गया? और इन्द्रियाँ इतना धोखा नहीं देतीं, आँखें सबसे जास्ती धोखा देने वाली हैं। तो जो सबसे जास्ती धोखा देने वाला अंग है उसी का संग हम दूसरों के साथ करेंगे और वो भी कोमल कन्याओं का, तो रिजल्ट क्या होगा? व्यभिचार, भ्रष्टाचार और ही ज्यादा बढ़ेगा। उसे कोई रोक नहीं सकता। बजाय स्वर्ग स्थापन होने के और ही नर्क स्थापन हो जाएगा। यज्ञ के अन्दर अभी भी वो ही नर्क स्थापन हो रहा है। सेवाकेन्द्रों में और ही झगड़े चल रहे हैं। झगड़े कब चलते हैं? जितना इन्द्रियों का व्यभिचार बढ़ता जाएगा उतने ही झगड़े भी बढ़ते जाएँगे।

जैसे सीढ़ी के चिल में उस दुर्योधन-दुःशासन ने अपने बुद्धि रूपी पाँव से उस स्त्री के बुद्धि रूपी पाँव को दबोच रखा है मतलब हावी हो गया, कब्जे में कर लिया और हाथ में काम कटारी पकड़ ली, मतलब नैन कटारी से लगातार उसको मार रहा है। पुरुष वर्ग जो होता है उसका बुद्धिरूपी पाँव भी प्रखर होता है और कन्याओं का बुद्धिरूपी पाँव एवं अन्य इन्द्रियाँ उतना प्रखर नहीं होती। उनकी बुद्धि कोमल होती है। सब इन्द्रियाँ कोमल होती हैं। तो कठोर इन्द्रियों और कठोर मन-बुद्धि वाला पुरुष जब स्त्री के ऊपर हावी होता है तो स्त्री अधीन हो जाती है। तो यहाँ दिखाया गया है कि कैसे कोमलांगी की बुद्धि रूपी पाँव को पाँव से दबोच रखा है। यानी उसकी बुद्धि के ऊपर वो पुरुष हावी हो जाता है।

और जो चीर खींच रहा है वो चीर रूपी सारा शरीर भी मटमैला हो गया। ऐसे नहीं है कि ये ब्रह्माकुमारी नहीं हैं, इसको सफेद साड़ी क्यों नहीं दिखाई गई; लेकिन सफेद साड़ी मैली हो गई- इस बात को चिलित करने के लिए चिलकार ने यहाँ मटमैली साड़ी दिखाई है। उसके वस्त्र मैले दिखाए गए हैं, इसका मतलब क्या हुआ? ये जो मैले वस्त्र दिखाए गए हैं, है तो सफेद साड़ी ही है; लेकिन उस देह रूपी वस्त्र को उस दुःशासन ने गंदा कर दिया है। इसलिए उस सफेद साड़ी को गंदा दिखाने के लिए, ऐसा मटमैला रंग कर दिया गया।

यहाँ लिखा हुआ है- 'हाय शिवबाबा बचाओ।' यानी उन अबलाओं की जाति में इतनी शक्ति नहीं होती है जो पुरुष तन का मुकाबला करें। उसके अन्दर खुद ही संग के रंग से कमजोरी आ जाती है; इसलिए ये अन्दर से आवाज निकल रही है- हाय! शिवबाबा, हम तो यहाँ पवित्र रहने के लिए अर्पण हुए थे और यहाँ तो हमारी पवित्रता पर ही धात होने लगा। तो अन्दर से आवाज निकलती है- हाय! शिवबाबा बचाओ, हमें तो ये वैश्या बना रहा है, हम तो अब तुम्हारी शिव शक्ति नहीं रही। तो अन्दर से ये जो आवाज़ निकलती है वो आवाज किसी ब्रह्माकुमारी की ही है, जो यहाँ दिखाई हुई है। कोई दुनियाँवी स्त्री जो है वो शिवबाबा शब्द का उच्चारण नहीं करेगी।

यज्ञ के अन्दर जो ऐसी वृत्ति है उसका मूल कारण हुआ कि सेण्टर्स के अन्दर जो पुरुष सरेण्डर होकर या समझे जाकर घुसे हुए हैं, उनके द्वारा ये सारा घोटाला हो रहा है। अगर उन पुरुषों को सरेण्डर ना माना जाता तो ये घोटाला नहीं होता। बाबा ने तो कभी मुरलियों में ये ऑर्डर ही नहीं दिया है कि पुरुषों को सरेण्डर समझने की जरूरत है। अरे, पुरुष तो दुनियाँ में जहाँ भी चाहे अपना कमाएँगे, खाएँगे, उनको सुरक्षा की क्या जरूरत है। कन्याओं-माताओं के ऊपर अपवित्रता का हमला हो सकता है। उनको पवित्रता के लिए रक्षा की आवश्यकता पड़ सकती है, तो वे आकर ईश्वरीय यज्ञ में शरण ले सकती हैं।

कितना विचित्र ड्रामा है। कन्याओं-माताओं की रक्षा के लिए रखे जाने वाले रक्षक यानी गार्ड ही तमोप्रधान कलियुगी शूटिंग में भक्षक बन जाते हैं। शायद इसलिए अ.बापदादा ने सावधानी दी थी कि • पांडवों को गार्ड बनाकर शक्तियों की रखवाली के लिए निमित्त बनाया हुआ है। पांडवों को पीछे रहकर शक्तियों को आगे करना है। गाइड नहीं बनना है। गार्ड बनना है। जब पांडव गाइड बनते हैं तो गड़बड़ होती है। इसलिए पांडव सेना को गार्ड बनना है। (अ.वा.2.4.70 पृ.235 मध्य)

जब रुद्र-यज्ञ में ऐसे पतन होने लग पड़ता है, तब बिल्कुल रावण-राज्य का घिनौना रूप जो कि आँखों से देखने की चीज़ नहीं है वह सामने आता है। आगे चल करके ये दिन-प्रतिदिन दुनियाँ में गंद बढ़ता जावेगा। बाहर की दुनियाँ में ही नहीं, ब्राह्मणों की दुनियाँ में भी आगे चल करके गंद और ज्यादा बढ़ेगा। तब तो बातें और कलीयर हो जाएँगी।

(16) डुबी जा-डुबी जा-

आगे सीढ़ी में यहाँ दिखाया गया है- देवी पूजा डूब जा-डूब जा। भक्तिमार्ग में देवियों की पूजा करते हैं, बहुत मान-सम्मान देते हैं, गहने पहनाते हैं, मन्दिर बनाते हैं। मन्दिर बनाने में, गहने पहनाने में, पूजा करने में लाखों रूपया खर्च कर देते हैं। 8-9 दिन उनकी पूजा करके बाद में उनको सागर या नदियों में ले जाकर डुबो देते हैं। डूबती नहीं हैं तो पाँव से जबरदस्ती भी डुबो देते हैं। ये सब भक्तिमार्ग की परम्पराएँ कहाँ की हैं? संगमयुग में इन हृद-बेहृद के देहधारी धर्म गुरुओं की ही ये सारी करतूत है अथवा देहधारी धर्मगुरुओं के प्रभाव में आकर, प्रभावित होकर जो भी ये कर्म करते हैं, उनकी ये स्वार्थ भरी करतूतें हैं। बाबा ने यज्ञ-सेवा के लिए कन्याओं-माताओं को समर्पित कराया। वे कन्याएँ-माताएँ निमित्त मातृ पुरुषार्थी रूप में सेवाधारी हैं। वे कोई देवियाँ नहीं हैं। देवी-देवताएँ सतयुग में होंगे। इस कलियुग में कोई देवी-देवता नहीं होते, जैसे मुरली में बोला देवी की पूजा

करने वाले हैं रावण सम्प्रदाय। बाबा ने मुरली में कहा है- • "बाबा बहुत कड़े-2 अक्षर देते हैं। देवियों को भी कटारी, इतनी भुजाएँ क्यों देते हैं? जैसे रावण को भुजाएँ दी हैं वैसे देवियों को भी दी हैं। तुमको तो इतनी भुजाएँ हैं नहीं; परंतु रावण सम्प्रदाय है ना; इसलिए भुजाएँ भी दे दी हैं। रावण सम्प्रदायवासी ही उनकी पूजा करते हैं। देवियों की पूजा गोया रावण की पूजा। फिर इनसल्ट कितनी करते हैं। देवियों को सजाकर पूजा आदि कर फिर कहते हैं डूब जा। नहीं डूबती तो ऊपर चढ़कर भी डुबोते हैं। कितनी नॉनसेन्स बुद्धि माता पर भी चढ़ाई करने वाली आसुरी बुद्धि है।" (मु.7.4.68 पृ.2 आदि)

देवी की पूजा करने वाले शिवबाबा की मुरली की बात पर इतना ध्यान नहीं देंगे, याद नहीं करेंगे, बाबा के डायरैक्शन पर उतना अमल नहीं करेंगे। वही बात मुरली में रोज़ आती रहे बच्चे, सेंटर्स खोलो; म्युजियम खोलो तो ध्यान नहीं देंगे; लेकिन जिस दिन उनकी वो देवी जी डायरैक्शन देंगी-भाई जी, अपना कोई सेंटर खोलना चाहिए, तो फट से उस देवी जी के पुजारी देवी जी के लिए महल बनवाकर तैयार कर देंगे। शहर-शहर में ऐसे सेंटर्स बन रहे हैं और जड़ सो चैतन्य देवी जी की उस मन्दिर में प्रैक्टिकली स्थापना कर दी जाती है। अच्छे-2 वस्त्र, अच्छा-2 पहनावा, साज-श्रृंगार, सोफासैट, डबल बैड, रंगीन टी.वी., फ्रीज़, मोटर गाड़ी आदि सब साज-सामान आश्रमों में इकट्ठा कर दिया जाता है। अपनी बीबी-बच्चों के लिए भले वो दूध, कपड़ा और मकान का इन्तजाम ना कर सकें, जिन्दगी भर रुलाते ही रहें; लेकिन देवियों की पूजा में सारा पैसा बरबाद कर देते हैं।

जब बाद में प्रैक्टिकल में एकमात्र कल्याणकारी बेहृद के बाप की प्रत्यक्षता होती है, बाप का असली रूप संसार में प्रत्यक्ष होता है, तो ऐसे देवी-पूजा करने वाले जो रावण सम्प्रदाय हैं, उन्हें बहुत पश्चाताप होता है। उस पश्चाताप को पश्चाताप की वृष्टि से भी नहीं देखते। वे ये देखते हैं कि इन देवियों ने हमको नीचे गिराया है, ये देवियाँ नहीं राक्षसियाँ हैं, फिर वे उनको राक्षसियाँ नज़र आती हैं। जब ईश्वर के स्वरूप की उनको प्रत्यक्षता होती है तो आश्रमों में जाकर उन देवियों का अपमान करना शुरू कर देते हैं और इतना तक अपमान करते हैं कि आखिरीन उनके मान-मर्तबे को डुबो ही देते हैं। यह सब कहाँ की बातें हैं? हमारे यज्ञ के अन्दर की ही बातें हैं। अभी (सन् 1976 से) कुछ ऐसी देवी पूजा और डूबी जा-डूबी जा की शूटिंग हुई है और भविष्य में अभी और तीव्र गति से ये शूटिंग होने वाली है। बाबा ने कहा है-• गुड़ियों के खेल में इतने मस्त कि यदि कोई (बाप के) घर का सही रास्ता बतावे तो कोई सुनने के लिए तैयार नहीं। (अ.वा.19.10.75 पृ.201 आदि)

(17) धर्मसत्ता और राज्यसत्ता अलग-2 हाथों में:-

धर्मसत्ता-राज्यसत्ता का नज़ारा सीढ़ी में नीचे दिखाया गया है। धर्मसत्ताधीश और राज्यसत्ताधीश अपनी-2 सभा-सोसाइटियाँ अलग-2 कर रहे हैं, अपनी-2 मीटिंग अलग कर रहे हैं अर्थात् धर्मसत्ता और राज्यसत्ता रावण-राज्य में अलग-2 हाथों में चली जाती है। रावण-राज्य की एक बहुत अच्छी निशानी दिखाई गई है कि-राम-राज्य में धर्मसत्ता-राज्यसत्ता एक हाथ में होती है और रावण-राज्य में धर्मसत्ता-राज्यसत्ता अनेक हाथों में चली जाती है। • धर्मसत्ता और राज्यसत्ता दो टुकड़ों में बट जाती है इसलिए द्वापर हो जाता है। (अ.वा.30.9.75 पृ.113 अंत) ठीक यही यज्ञ के अन्दर हुआ। ममा-बाबा जब तक जीवित रहे तब तक धर्मसत्ता-

राज्यसत्ता एक ममा-बाबा के हाथ में रही। हृद-बेहृद के माउण्ट आबू से सारे सेवा केन्द्रों का संचालन होता था। कोई भी बच्चे को किसी भी प्रकार की तकलीफ होती थी तो बाबा के पास जाकर अपना संशय-समाधान करते थे; लेकिन जैसे ही उन्होंने शरीर छोड़ा, कारण-अकारण गुप्त हो गया ब्रह्माकुमार-कुमारियों ने अपना-अपना रकबा बाँट लिया और जोनल इन्चार्जेस बन बैठे। सन् 1969-70 से ही धर्मसत्ता-राजसत्ता अलग-अलग हाथों में सौंप दी गई। देहधारी धर्मगुरुओं वा सत्ताधीशों के द्वारा ये सारा कार्य सम्पन्न होता है।

धर्मसत्ताधीश जो हैं वह पुरुष वर्ग ही है। धर्मसत्ताधीश पुरुष वर्ग जो मेले, सम्मेलन, कॉन्फरेन्स और मोटी-मोटी पुस्तकें पब्लिश करने या प्रचार करने का धन्धा करते हैं और उसमें जो अड़चने आती हैं उनका समाधान करने के लिए, उनकी मधुबन हेड ऑफिस में मीटिंग अलग-2 होती हैं। उन धर्मसत्ताधीशों की मीटिंग में जो क्लास कंट्रोल करने वाले, गढ़िदयों को कंट्रोल करने वाले राज्यसत्ताधीश-सफेद पोशाधारी दिखाए गए हैं, वे हिस्सा नहीं लेते। उन क्लास कंट्रोलर्स राज्यसत्ताधीशों की मीटिंग अलग होती है; लेकिन तभी होती है जब उनकी हिलती हुई गढ़िदयाँ कंट्रोल से बाहर हो जाती हैं, समस्याएँ पैदा हो जाती हैं, क्लास कंट्रोल डिस्टर्ब होता है तो ये समस्याओं का समाधान करने के लिए वो मधुबन हेड ऑफिस (विधान या लोकसभाओं) में अपनी मीटिंग करते हैं और उस मीटिंग में वो धर्मसत्ताधीश फिर कोई हिस्सा नहीं लेते। यानी धर्मसत्ता अलग हाथों में और राज्यसत्ता अलग हाथों में आ जाती है- ये भी रावण-राज्य की मुख्य निशानी है।

बेगरी भारतपिता

बेगरी भारत- एक तीसरा बेगरी ग्रुप और दिखाया गया है। जिसके लिए बाबा ने मुरली में कहा है-• भारत तो है मोस्ट बेगर। भारत अब काँटों का जंगल है। काँटों की शैया पर दिखाते हैं न। भीख माँग रहे हैं। तो यह भी (घरों-2 में जाए) सबसे भीख माँगते रहते। भारत की दुर्दशा है न। भारत बिल्कुल सॉल्वेंट था, अभी तो कंगाल है। (मु.2.11.73 पृ.3 अंत) जिसके बेगर के हाथ में न धर्म की सत्ता है, न राज्यसत्ता है। ये तीसरा ग्रुप जो दिखाया गया, वह दोनों ही सत्ताओं से महरूम है। यानी ऐसे जो नं.वार बेगरी ब्राह्मण हैं, जिनके लिए कहते हैं कि पाण्डव भी बेगर रूप में घूमते थे। जिनके हाथ में राज्य की सत्ता नहीं होती है। राज्यसत्ता का मतलब है कि उनको घण्टे-दो घण्टे तो क्या दो/पाँच मिनट भी सन्दली (गद्दी) पर बैठकर क्लास में बोलने की भी इजाजत नहीं दी जाती है। धर्मसत्ता का मतलब मेले, सम्मेलनों में भी उनको कोई विशेष जिम्मेवारी का कार्य नहीं सौंपा जाएगा। यानी ब्राह्मणों की दुनियाँ के अंदर न उनका मेले, कॉन्फरेन्स या लिटरेचर छपवाने के आदि कार्य में सहयोग लिया जाता, न सूई की नोक के बराबर भी धर्मसत्ता में और राज्यसत्ता में स्थान दिया जाता है।

तीसरे ग्रुप में जो एक व्यक्ति को दिखाया गया है। वह काँटों की शैया पर बेगर के रूप में पड़ा हुआ है। हाथ में कटोरा लिया हुआ है और विदेशी लोग उसको भीख दे रहे हैं। ये सब किस टाइम का नज़ारा है? कलियुग के अंत का। तो 40 वर्ष का जो संगमयुग बताया सत्युग स्थापन करने के लिए, नई दुनिया स्थापन करने के लिए उसमें कलियुग का अंत भाग कौन-से समय का हुआ? यहीं सन् 1976 में जा करके ये भिखमंगा भारत बन जाता है। विदेशियों की भीख पर पलता हुआ दिखाया गया है।

दो विदेशी खड़े हुए हैं। कौन-से दो विदेशी? इस्लामी और क्रिश्चियन्स के बीज। भिखमंगा भारत, कल्पपूर्व के पाण्डवों की यादगार। पाण्डव भी क्या थे? ब्राह्मण-वेश में भिखमंगे ही थे। उनको सुई की नोक के बराबर तीन पैर टिकाने का स्थान भी कौरवों ने देने से इन्कार कर रखा था। तो भिखमंगे ही हुए। तो ऐसा भिखमंगा भारत। जो भारत का प्रतिनिधित्व करने वाली राम वाली आत्मा आदम है, जो यहाँ दिखाई गई है।

उसके पास कोई प्रॉपर्टी नहीं; क्योंकि पाण्डव तो पहले ही तन, धन, धाम, सुहृद, स्वपरिवार, बीबी, बच्चे, भाई सब जुए में हार जाते हैं। कौन-सा जुआ? भगवान ने आदेश दिया है- तुम अपना तन, मन, धन, समय, संबंध, सम्पर्क सब इस ईश्वरीय यज्ञ में स्वाहा कर दो। तो भगवान के आदेश पर ये हुआ जुआ। कौरव क्या चालाकी करते हैं? अपनी लगाई हुई बाज़ी तन, धन, धाम, सुहृद, परिवार सब अपनी मुट्ठी में रखते हैं और पाण्डवों ने जो बाज़ी लगाई वो भी अपनी मुट्ठी में ले लेते हैं और चालाकी से (जैसे शेयर मार्केट में) गलत पासे फैंक करके उनको कह देते हैं- जाओ, तुम हार गए। तो ये धन, धाम, सुहृद, परिवार से महरूम हुआ भारत विदेशियों की भीख पर पलता हुआ दिखाया गया है।

भारत के पास दुनियाँवी कोई भी शक्ति नहीं। अगर कोई शक्ति है तो बस, एक शक्ति दिखाई हुई है कि- सिर के नीचे 'गीता' रखी हुई है। माना बुद्धि में सत्य गीता ज्ञान मुरलियों का ज्ञान भंडार भरा पड़ा है यही उसकी प्रॉपर्टी है। और उस गीता में साफ-2 लिखा हुआ है- 5 इयर प्लान।

मुरलियों में भी बाबा ने उस 5 इयर प्लैन का ज़िक्र किया कि वो तो 5 इयर प्लैन एक के बाद एक बीसियों वर्ष भी बनाते रहते हैं, उनके प्लैन कभी सफल होने वाले हैं नहीं। लेकिन बाप जो आ करके 5 इयर प्लैन बनाते हैं- सन् 1978 से लेकर 1981-82 तक ये 5 वर्ष का ईश्वरीय प्लैन एक बार में ही सफल हो जाता है तो वो पक्का भारतीय बीजरूप भिखमंगा भारत जो दूसरों के अधीन था, रोटी-कपड़े और मकान के लिए भी वो 5 वर्ष के बाद सन् 1983 से बेगर टू प्रिन्स बन जाता है। अपने पैरों पर खड़ा हो जाता है। उसे किसी की भीख पर पलने की दरकार नहीं रहती। ये प्लैन ईश्वरीय प्लैन था। जो अपने टाइम पर सन् 1978 से 82 तक सफल हो जाता है। सारे कल्प के अंत तक दुबारा कोई प्लैनिंग करने की दरकार नहीं रहती।

'गुप्त भेष में सतयुग रचने आए शिव भगवान, अब तो जाग-जाग इन्सान।' किसी बड़े आदमी के रूप में आए, प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में आए तो सारी दुनियाँ जान जाए। ये तो फुल बेगर के लिए पंचवर्षीय योजना का गरीब निवाज ईश्वरीय प्लैन था। वो सिर्फ एक बार की ही योजना थी भिखमंगा भारत को स्वाधीन भारत बनाने की। भिखमंगा अर्थात् दूसरों के ऊपर आधारित और स्वाधीन अर्थात् जो किसी की परवाह ना करे। अपने पैरों पर खड़ा हो जाए। इस प्रकार भिखमंगा भारत जो 76 तक फुल बेगर बन गया था, वह 82 में अपने पैरों पर पूरा-2 खड़ा हो जाता है। उसको किसी का कोई भी प्रकार का आधार लेने की दरकार नहीं पड़ती। प्लैन पूरा होता है और नए एडवांस संगठन की स्थापना का फाउंडेशन लग जाता है। ये प्लैन ईश्वर को दुबारा कोई प्लैनिंग शुरू करने की दरकार नहीं है।

यही बात आगे दिखायी गयी है कि जब ये नए राज्य-स्थापना का कार्य होता है तो उसमें भी थोड़ा टाइम लगता है। 'जमदे जामदे' कोई राजा नहीं बन जाता है। बाबा कहते हैं कि मान लो, किसी गरीब आदमी की 10/15 करोड़ की लॉटरी निकलती है तो एकदम सारी लॉटरी उसे नहीं दी जाएगी। अगर एकदम दे दी जाए तो क्या होगा? (पागल).....। इसलिए धीरे-2 वो विश्व की बादशाही दी जाती है। बाबा तो सर्वशक्तिमान है; लेकिन मास्टर सर्वशक्तिमान का पार्ट बजाने वाली आत्मा तो कोई दूसरी है ना। वो तो अपना पुरुषार्थ पूरा करते हुए धीरे-2 फुल बेगर से फुल प्रिन्स बन जाता है और वो पहले तो बेगर के रूप में काँटों की शैया पर पड़ा हुआ था। यानी ये संसार, जैसे काँटों के जंगल जैसा दुःख देता है, ऐसे ही इस संसार में उसके लिए चारों ओर दुःख देने वाले काँटे ही काँटे हैं। चाहे वे घर वाले, पड़ोस वाले, सम्बंधीजन या वर्षों पुराने बी.के. परिवार वाले ही क्यों न हों; लेकिन सदा सहयोगी कोई भी नहीं रहते, इसलिए खास शंकर को ढेर भुजाएँ नहीं दिखाते।

ऐसे उस बेगरी भारत की दशा क्या दिखाई गई है। विदेशियों से भीख माँगते हुए आरम्भ में स्लामी रशियांस की मानिद दो विदेशी खड़े हुए हैं। जो कलियुग के अंत में, 40 साल का संगमयुग बताया है मानसी सतयुग स्थापन करने के लिए या नई दुनियाँ स्थापन करने के लिए, उसमें कलियुगी शूटिंग का अंत का भाग, यानी सन् 1976 में उसे भीख दे रहे हैं। ये वही विदेशी हैं जो उसको अन्न-धन की भीख देकर उसके साथ धूम रहे हैं ईश्वरीय सेवा के कार्य में नं. वार सहयोगी बन जाते हैं अर्थात् क्रिश्चियन और इस्लामी ही उधार के रूप में भीख दे रहे हैं। उस भीख पर उसका गुजारा हो रहा है।

भिखारी भारत का काम क्या है? दर-दर जाकर भीख माँगता फिरे, यही है उसका धन्धा; कहने के लिए तो ये आता है कि घर बैठे भगवान मिला; लेकिन किस रूप में मिला ये किसी को पता नहीं। जिस भारत में भगवान आते हैं उस भारत की भारतेन्दु के शब्दों में 'भारत दुर्दशा' दिखाई गई है! जो भारत सतयुग आदि में प्रिन्स था, जो विश्व का फुल प्रिन्स बनता है, विश्वमहाराजन ल.ना. बनता है वही कलियुग अन्त में आकर फुल बेगर बन जाता है। जब तक फुल बेगर ना बने तब तक फुल प्रिन्स भी नहीं बन सकता। इसलिए मुरली में कहा है - • पूज्य-पुजारी, पावन-पतित भारत ही बनता है। बाकी (धर्मपिताएँ) तो हैं बीच में। गाते हैं पतित-पावन, तो ज़रूर पतित हैं ना। भारत पावन था, अब पतित है। (मु.7.9.73 पृ.3 मध्यादि)

धर्म और राज्य सत्ता दोनों से ही अलग, देश निकाला पाये हुए तथा सच्चाई-सफाई पूर्वक ईश्वरीय आदेश पर टट्पुन्नियाँ तन-मन-धन और सर्व सम्बंधों की यज्ञ में बाजी लगाने वाले पांडव बनाम राम-सम्प्रदाय के प्रतिनिधि के रूप में आदि सनातनी भारत (अर्थात् राम) को काँटों की शैया रूपी जंगल में दीन-हीन दशा में (बेहद के) विदेशियों की भीख पर गुजारा करते हुये दिखाया प्रैक्टिकल में व्यक्तिगत रूप में भी गया है। मुरली में कहा है-• इस (कलियुगी शूटिंग के) समय वह (कृष्ण उर्फ ब्रह्मा) कहाँ होगा? ज़रूर बेगर (में प्रविष्ट) होगा। जैसे क्राइस्ट के लिए भी कई समझते हैं कि वह बेगर के रूप में है। (मु.21.9.74 पृ.2 मध्य)

10 वर्ष की घोषणा

नीचे 10 वर्ष की घोषणा लिखी है कि 10 वर्ष में यानी कि सन् 1976 में इस पुरानी कलियुगी दुनियाँ का विनाश हो जावेगा और नई सृष्टि की स्थापना हो जावेगी। वो स्थापना कोई स्थूल में होने की बात नहीं है। ये

संगमयुगी कृष्ण की बात है, जो संसार सागर में पीपल के पत्ते पर गर्भकाल में पलने लग पड़ता है। बुद्धिरूपी पेट में अर्थात् बुद्धिरूपी हथेली में बहिश्त लिए हुए वह कृष्ण प्रवेश कर जाता है, जो बाद में सन् 1998 को जन्माष्टमी के साथ ही 15 अगस्त के स्वतन्त्रता दिवस पर जेल से प्रत्यक्षता रूपी जन्म ले करके P.B.K. संसार में, ब्राह्मणों की दुनियाँ में भी प्रत्यक्ष हो जाता है।

ये है भारत के उत्थान और पतन की 84 जन्मों की कहानी कि कैसे वो फुल प्रिन्स बनता है और कैसे फुल प्रिन्स टू फुल बेगर बनता है। 108 की माला की लिस्ट में आने वाली सभी आत्माओं को इस फुल प्रिन्स टू फुल बेगर की प्रोसीजर से ज़रूर नं. वार गुजरना पड़ेगा। वरना 108 की लिस्ट में नहीं आ सकेंगे। ईश्वरीय सेवा में तन, धन, धाम, सुहृद, परिवार सबकी बाजी लगाने वाले, फुल बेगर बनने वाले वो माला के दाने बनेंगे और माला रूपी संगठन में विश्व के मालिक भी बनेंगे। ओमशान्ति।

Contact Us

Address

A-351-352, Vijayvihar, Phase-1, Rithala, Delhi- 110085

Mobile - 9891370007, 9311161007

Email - a1spiritual1@gmail.com

Website – WWW.PBKS.INFO/ADHYATMIK-VIDYALAYA.COM

Youtube – ADHYATMIK-VIDYALAYA OR AIVV

@A1SPIRITUALUNIVERSITY

Twitter - @adhyatmikaivv

Instagram - @adhyatmikvidyalaya

Linkedin – linkedin.com/company/adhyatmik-vidyalaya
